5674

कॉलेज गेट

मुण्डारी-हिन्दी तोरो इनुँग-जुम्बुली

(मुण्डारी-हिन्दी नाटक-संग्रह)

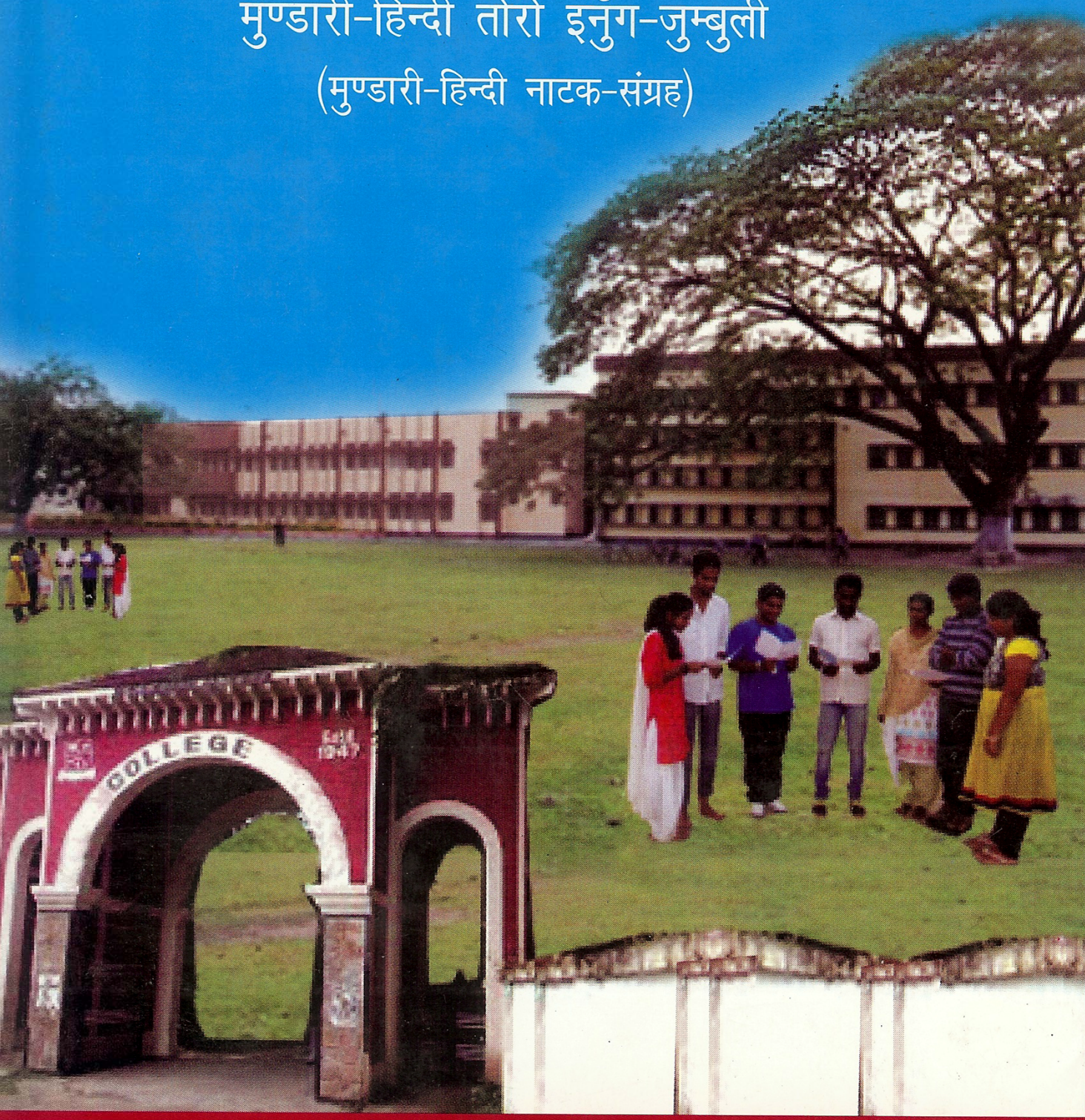

मंगल सिंह मुण्डा

कॉलेज गेट

(मुण्डारी-हिन्दी तोरो इनुँग-जुम्बुली)

(मुण्डारी-हिन्दी नाटक-संग्रह)

कॉलेज गेट

(मुण्डारी-हिन्दी तोरो इनुँग-जुम्बुली)

(मुण्डारी-हिन्दी नाटक-संग्रह)

लेखक

मंगल सिंह मुण्डा

झारखण्ड झरोखा, राँची

भारतीय कॉपीराईट एक्ट के तहत प्रस्तुत पुस्तक में निहित समस्त प्रकाशित सामग्री के कॉपीराईट लेखक के पास सुरक्षित हैं, अतः कोई भी व्यक्ति अथवा कम्पनी इस पुस्तक का नाम या प्रकाशित लेख इत्यादि को किसी भी प्रकार से तोड़-मरोड़ कर, अंशिक या पूर्ण रूप से किसी पुस्तक अथवा किसी सामयिक (फिल्म, नाटक, न्यूजपेपर, मैगजीन, ऑडियो, वीडियो इत्यादि) में लेखक से लिखित अनुमति लिये बिना प्रकाशित करने की चेष्टा न करें, अन्यथा समस्त कानूनी हर्जे-खर्चे के स्वयं जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के मुकदमें के लिये न्याय क्षेत्र राँची रहेगा।

ISBN : 978-93-85595-08-0

प्रथम संस्करण : 2015

सर्वाधिकार © : लेखक

प्रकाशक : झारखण्ड झरोखा
दुकान न.- डी. जी. 03
न्यू बिल्डिंग, न्यू मार्केट,
रातू रोड, राँची, (झारखण्ड), पिन न. 834001
मो. 09973112040, 09471160792

वितरक : क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी
28, शॉपिंग सेन्टर, कर्मपूरा, न्यू दिल्ली--110 015
दूरभाष : (O) 25465978, 65903449 (R) : 28542847
E-mail : classicalpc@gmail.com

अजिल्द : 150.00
सजिल्द : 300.00

किसी भी प्रकार के कानूनी अथवा अन्य वाद-विवाद
के लिए प्रकाशक जिम्मेवार नही है।

COLLAGE GATE

(Mundari-Hindi Play)

by Mangal Singh Munda

अपनी बात

कहा गया है कि समझदार व्यक्ति के लिये इशारा ही काफी है। लेखक कवि कथाकारों के लिये तो उपरोक्त कथन एक अचूक नुस्खा है। वह अपनी बातों को विभिन्न साहित्यिक विधा के माध्यम से व्यक्त कर सकता है।

यहाँ भी, प्रस्तुत मुण्डारी-हिन्दी नाटक संग्रह 'कॉलेज गेट में पाँच नाटक हैं जिसमें मीठा दर्द, सबसे सुखी आदमी तथा अमर ज्योति तो अपना ही कहानी संग्रह 'महुआ का फूल' से रूपान्तिरित हैं।

नाटक संग्रह का नामकरण 'कॉलेज गेट' इस लिये पड़ा क्योंकि यह नाटक स्कूल-कॉलेजों के छात्र-छात्राओं के समसामयिक घटनाओं को आधार बना कर रचा गया है, जहाँ आये दिन हम, विशेष कर, छात्राओं के चरित्र हनन की बात सुनते रहते हैं।

मेरे हिसाब से यह नाटक संग्रह मानव जीवन के विभिन्न आयामों में व्याप्त मानवीय अवगुणों को त्याग कर चरित्रवान बनने की ओर संकेत करता है। इसलिये मेरा अन्तःकरण का कहना है कि इस किताब से एक भी व्यक्ति यदि कुपथ से सुपथ की ओर लौटता है तो इसे ही इस किताब की सफलता है। आशा है कि इसे पाठकों द्वारा पसंद किया जायेगा एवं मंचित भी किया जायेगा।

अंत में, (छपने के पूर्व) पठनीय एवं मंचनीय कहने वाले सभी उत्सुक पाठकों को मेरा बहुत-बहुत जोहार! झारखण्ड झरोखा (राँची) के शकुन्तला मिश्र जी को भी साधुवाद देता हूँ जिन्होंने इसे प्रकाश में लाने का बड़ा काम किया है। नाटक के ऊपर अपना निष्पक्ष विचार प्रगट करने के प्रति डॉ. विनोद कुमार एवं डॉ. बिरेन्द्र कुमार सोए 'मुण्डा' भी धन्यवाद के पात्र हैं।

मंगल सिंह मुण्डा

तिरला, खूँटी
01.07.2014

पूर्वकथन

मंगल सिंह मुण्डा, मुण्डारी और हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार हैं। हिन्दी में प्रकाशित इनका उपन्यास ''छैला संदु'' बहुत चर्चित रहा। इनका कहानी संग्रह ''महुआ का फूल'' की काफी सचेतन प्रतिक्रिया रही। मुलतः मंगल सिंह मुण्डा कहानीकार हैं लेकिन नाटक और फिल्म स्क्रिप्ट पर भी अपनी दखल रखते हैं। साम्प्रतिक विषयों पर आधारित इनका नाट्य संग्रह ''कॉलेज गेट'' पढ़ने का मौका मिला। आज की जलती हुई समस्याओं पर इन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से पाठकों को रू-ब-रू कराया है। इस संग्रह का पहला नाटक ''सिन्दूर की डिबिया'' महिला उत्पीड़न पर आधारित एक बेहतरीन नाटक है जिसका क्लाईमेक्स पढ़नेवाले को अंदर तक उद्वेलित करता है। ''मीठा दर्द'' हिन्दू-मुस्लिम एकता पर आधारित है जिसमें उन्होंने यह बतलाने की कोशिश की है कि धर्म के नाम पर लोगों ने समाज का कितना विनाश किया है। तीसरा नाटक ''सबसे सुखी आदमी'' एक अमीर आदमी के दर्द की कहानी है जो एक गरीब आदमी में अपना सुख तलाशता है। यहाँ तक कि चाँदी के बर्तन में खाने वाला अमीर आदमी गरीब की तरह पत्तल में खाना चाहता है और सड़क के किनारे खड़ा होकर भीख मांगना चाहता है। उसे यह एहसास होता है कि सचमुच यह गरीब आदमी उससे ज्यादा सुखी है जिसके पास न कोई तनाव है और न कोई चिंता। चौथा नाटक ''कॉलेग गेट'' जो आये दिन महाविद्यालयों में होने वाले छेड़छाड़ और लड़कियों के शोषण पर आधारित है। इस नाटक में जो सवाल उठाये गये हैं उन सवालों से हर लड़की, हर रोज रू-ब-रू होती है। अंतिम नाटक ''अमर ज्योति'' साम्प्रदायिकता पर आधारित है जिसमें यह दर्शाया गया है कि साम्प्रदायिकता से किसी का भला नहीं होने वाला।

हर साहित्यिक विद्या और हर कला-माध्यम का अपना निश्चित स्वरूप, शिल्प, विशिष्ट सौंन्दर्य और शर्तें होती हैं, लेकिन यह भेद होने पर भी कहीं-न-कहीं सभी विधाओं के संबंध-सूत्र परस्पर एक-दूसरे से आ जुड़ते हैं - काव्य और नाटक, कहानी और नाटक, उपन्यास और नाटक। नाट्य लेखन के लिए रंगमंचीय संकेत, स्थितियाँ, प्रकाश, संगीत के निर्देश और प्रस्तुति के नियम आवश्यक हैं। साथ ही दृश्यबंध की कल्पना भी नाटक में आवश्यक है। नाटक, कहानी, कविता या उपन्यास नहीं है। नाटक एक अलग विधा है। साहित्यिकता का निर्वाह करते हुए भी नाट्य

लेखन या फिल्म लेखन एक तकनिकी लेखन भी है और आदर्श स्थिति यह है कि लेखक का रंगमंच से जुड़ाव होना चाहिये।

इन सारे नाटकों के विषय आदर्शवादी हैं और साथ-साथ साम्प्रतिक भी। हालांकि इन नाटकों में शिल्पगत कमजोरियाँ हैं। नाट्यकला साहित्यिक होते हुए भी तकनिकी कला है और आज के नाटक रंगमंच के लिए, दर्शकों के लिए लिखे जाते हैं। डॉयलॉग के साथ-साथ लेखकीय परिकल्पला और अभिनेता को दिये जानेवाले निर्देशन की आवश्यकता है, नाट्यलेखन में। फिर भी, मैं यह कहना चाहूँगा कि चूँकि मंगल सिंह मुण्डा का यह प्रथम नाट्य संग्रह है इसलिए इनपर कहानियों का ज्यादा प्रभाव है। मैं आशा करता हूँ कि आनेवाले दिनों में इनके और सचेतन नाटक पढ़ने को मिलेंगे।

मंगल सिंह मुण्डा को मेरी अनेक शुभकामनाएँ!

डॉ. विनोद कुमार
अध्यक्ष-अंग्रेजी विभाग (सेवानिवृत)
केन्द्रीय विश्वविद्यालय झारखण्ड (CUJ), राँची
शांग्रिला, सी-39, रोड नं.-1
आशोक नगर, राँची-834002
दूरभाष - 9934107329

शब्दवाणी

'कॉलेज गेट' मुण्डारी-हिन्दी नाटक संग्रह के पाण्डुलिपि को पढ़, समझकर दो शब्द लिखने (विचार देने) के अवसर प्राप्त हेतु मैं कृतार्थ हूँ। साहित्य के महासागर से मोती ढूँढ़ निकालना थोड़ी कठिन है पर असंभव नहीं। मुण्डारी साहित्य तप और साधना से सृजित 'कॉलेज गेट' के अनमोल कृति के लिए सर्वप्रथम श्री मंगल सिंह मुण्डा को शत शत बधाई।

पुस्तक में कुल पाँच (05) नाटक संग्रह हैं। 1. 'कीया सिन्दुरी' - 'सिन्दूर की डिबिया' इसमें दर्शाया गया है दहेज रूपी दानव के द्वारा समाज को विनाश करना। पात्रों के द्वारा समाज की परम्परागत बुराइयों को बखुबी दर्शाया गया है। सभ्य और अग्रणी समाज, सोच, दृष्टि रखने वाले दहेज के दुश्चक्र में लपेटकर परिवार, समाज, रस्म रिवाज, संस्कार को दाँव में रखकर दहेज दानव को प्राथमिकता देना। नाटक के द्वारा समाज में प्रचलित कटु सत्य को उजागर किया है।

2. 'हेड़ेम हासु' - 'मीठा दर्द' ईश्वर, अल्लाह, भगवान आदि के नाम पर समुदाय, सम्प्रदाय का मतांतर विचारधारा को धर्मनिरपेक्षता के प्रासादसे मानवहित, इंसानियत, सहिष्णुता, 'वासुदैव कुटुम्बकमं' को स्थापित करना। मीठा दर्द नाटक से मधुरता कायम करना।

3. 'पुराःगे सुकुआन होड़ो' - 'सबसे सुखी आदमी'

'मैं नहीं चाहता चिर सुख
मैं नहीं चाहता चिर दुःख
सुख दुःख के मधुर मिलन से
मानव जग हो परिपूर्ण।''

- पंत

आत्मसंतुष्ठि ही सबसे बड़ी खुशी है, आनन्द! भौतिकतावादी का सुख क्षणिक, 'संतोषम परम सुखम' पर आधारित।

4. 'कॉलेज गेट' - अहं को आघात करने का तरीका इस नाटक का मजबूत स्तम्भ। छेड़छाड़ उम्र के पड़ाव का दुष्काम आकर्षण को त्यागने की प्रवृति, चेतना, मन-मस्तिष्क में चिंतन पैदा करना, कॉलेज गेट का सद्दोश्य है।

5. का एड़ोंगोः दीया - अमर ज्योति - धर्मान्धता के कट्टरपन को

सहिष्णुता, बन्धुता, मानवता, इंसानियत से श्रेष्ठ न मानना। नाटक उद्देश्यपरक है।

श्री मंगल सिंह मुण्डा, चिंतनशील, प्रगतिशील प्रयत्नशील, स्थापित लेखक और साहित्यकार हैं। इन्होंने मुण्डारी भाषा में रचित नाटक को हिन्दी में रूपान्तरण/सनुवाद कर नाटक की उपादेयता, उपयोगिता, आवश्यकता, प्रासंगिकता को बढ़ाया है। समाज के वर्त्तमान परिवेश को प्रतिबिम्बित सभी नाटक उद्देश्य से लबरेज है। कई मार्ग प्रशस्त होंगे। नाटक में व्यापकता है। दर्शन को समझने के लिए ज्ञान चक्षु को वृहत बनाना होगा।

नाटककार का प्रयास है समाज में जागरूकता, चेतना पैदा हो, सद्बुद्धि, सदाचारी, सहयोगात्मक संबंधों को मजबूत करना। पात्रों ने नाटक को जीवन्त किया है।

सभी नाटक पाठकों को अवश्य पसंद आयेगी। विद्यार्थी, शिक्षक, चिंतक, समाजसेवक, राजसेवक, नाटककार, साहित्यकार, संस्कृतिकार आदि इस पुस्तक को अवश्य पढ़ना चाहिए।

साहित्य समाज के दर्पण को सहेजने की सामूहिक प्रयास में श्री मंगल सिंह मुण्डा, सतत् प्रयत्नशील है, अग्रणी है। असीम क्षमता में वृद्धि की कामना और उज्ज्वल भविश्य की शुभकामनाएँ! जोहार!

डॉ. बिरेन्द्र कुमार सोय 'मुण्डा'
Ph.D. D. Litt.
सम्पादक - संगोम, कुपुल
आजीवन सदस्य - Linguistic Society of India Pune,
Decen Collage, Pune
व्याख्याता, जनजातीय एवं क्षेत्रीय
भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय,
राँची

विषय सूची

कहानी			पृष्ठ सं.
1. कीया सिंदुरी	-	सिंदूर की डिबिया	11-34
2. हेड़ेम हासु	-	मीठा दर्द	35-53
3. पुर : गे सुकुआन होड़ो	-	सबसे सुखी आदमी	54-70
4. कॉलेज गेट	-	कॉलेज गेट	71-97
5. का एड़ेंगोः दीया	-	अमर ज्योति	98-112

1. कीया सिंदुरी

इनुँग तान को

कोड़ा होड़ो को

1. भूपति बाबू - सुनीताः आबा ते
2. पाकु - दासी कोड़ा
3. लालाजी - पुंजीआन होड़ो
4. जगदीश - सुनीताः नवा बोर
5. सलीम - पड़ाव कागज आकिरिंग निः

कुड़ी होन को

1. सुनीता - भुपतियाः एसेकर कुड़ी होन
2. एंगा बुड़िया - भूपतियाः कुड़ी ते
3. निधि, काजल - सुनीताः सोंगे किंग
4. किरण - कुड़ी डाक्टर

साड़ा-1

लेपेल साड़ा - 1

ठांव - भूपति बाबुआः कोठी

सोमाय - सेताः आठ बजे।

बोः तिरूब केयाते, बिचार रे डुम्बईया कान भूपति बाबू ओवारि रे अयार-तायोमेः हिजुः सेनोः ताना। मांडि ओड़ाः रे सुनीता आड़ाःए हाद ताना। जापाः राः कुठुरी रे मियाद रोग तान बुड़िया बोकोर बोकोरेः जागार जादा।

(सलीम बोलो ताना)

सलीम - (दुआरेः साड़ी जादा) टोको....टोको....टोको..... भूपति काका...भूपति काका...दुआर निः मे.....।

भूपति - ओकोए तानिः?

सलीम – आईं, कागजो वाला सलीम।

भूपति – (दुआरेः निः जादा)

सलीम – (कागजो लोःए बोलो ताना) जागार ते काम आटकार किःईञा? तिसिंग आमाः नागेन सुका-रसिका राः खेबोरेईञा आउ तादा।

(डॉ. किरण बोलो ताना)

डॉ. किरण – चि भूपति बाबू?

भूपति – (उईयुः लुतुर गेयाए) ओहो डॉ. साहिबा। देला देला बोलो में। (कुर्सी केः राचाः जादा)

डॉ. किरण – आमाः ओड़ाः होड़ो चिलका मेनाःईया?

(सुनीता बोलो ताना)

सुनीता – जोआर डाक्टर साहिबा। एयांग? एयांग दो ओको लेका मेनाःई दो मेनाई गेया। इनिः गेदो काकला बेड़ा जादा।

डॉ. किरण – ओहो! जीः नाम रूड़ा तादा एनागे मारांग काजि तानाः। मारीदुकु दो भोगोमानाः नीला-खेला को मेनेया। नियाः जापाः रे होड़ो होनाः जेताव का सेसेना। नियाः जी बगड़ावा काना। होड़ोमो ताए लागा हापे जाना। तिसिंग पेड़ेगोः तेयाः रनुईंग ओल तुका ताना (पुर्जाए ओमाई ताना) मिद घंटा मंडि जोम सिदा रे बार चमच केयाते बारान सांझे ओमाई में हेई। बोरो-सोरो राः जेतान काजि बानोगा। बाईरूड़ावगाए। (आर कागजो वाला सलीम सःए हेता ताना) चि रे सलीम आमो नेरे चानाःम चिका ताना? आमोचि डाक्टरेम बाई जाना? आले ओड़ाः रे सोमाय रे कागजो इदि में बुझाव, तानाम?

सलीम – हे सर मर। दाई सुनीताः सुकु खोबोर आउईंग हिजुआ काना।

डॉ. किरण – चानाः?

सलीम – हेनेः लेलेमे (कागजो पढ़ाव तान सुनीता सःए चुण्डुलाई ताना)

डॉ. किरण – चि रे सुनीता आमो हेगे। सोबेन डाक्टर गेबू बाईन रेदो ओकोए हासु बु बाई ना?

सुनीता – जेताव का गे मेडम। 'आई स्पेशलिस्ट' राः रिजल्ट हिजुवा काना।

डॉ. किरण – आर नेया जेताव का गेम मेन जादा? (कागजोए साब जादा) 'डिस्टिंक्शन' रेगेम पास तादा। भूपति बाबू नाः दो चानाः सारेः जाना? नियाः आँडदि-कोंड़ांदि राः उडुःई बेन! काचि?

भूपति – चानाःईंग मेता में डॉ. साहिबा, आईंयाः हिसाब ते दो भोगोमानाः बानाई रेगे खूब मारांग लिचुर मेनाः।

डॉ. किरण – चिलका ते भूपति बाबू, आमो चि कुड़ि होन को हाद गोए राःम उडुः ताना?

भूपति – का! कागे एनका दो। आईयाः काजि राः मोतोलोव नेया दो कागे।

सलीम – (चा नू केते इनकिंग एः लेल गिड़ि जाः किंग लोः)

अच्छा सुनीता दाई नाः दोईग सेनोः ताना।

(सलीम सेनोः ताना)

डॉ. किरण – तोबे दो?

भूपति – आबुआः किमिन होन कुड़ि कोगे दांग। सारते गे मियाद पुण्डि साहबेः काजि तुका कादा – ने आला कान बा को चिकनाः ओते एंगाः मुरगुई-मुरगुई लंदा-लोचोर को तानाः। आईंग जी जींग उडुः ताना आबुआः होन कुड़ि कोगे ओड़ाः कोराः आला कान बा तान को।

डॉ. किरण – तोबे टेकाद कोताः रे मेनागा? ओड़ाः होड़ोआः दुकु-तकलीफ को होन कुड़िआः लंदा-रसिका ते हार गिड़ा में का!

भूपति – का साहिबा, का। एनका दो का (बारान ती तेः उदुबाई ताना)। आबुआः ताला रे बुरू लेका तिंगुआ कान दहेज-राकोश दोम ठोर जाःई गेया। मियाद सेंणा-पुंजीया कान बोराः गोनोंग दोम इतुआन गेया। बाबू साहब होंजार आबाः टाका ते मारूती गाड़ीः किरिंगया आर होन कुड़ि लोः हुरूम सुकु रसि चेपेः किंग सेनोगा। होन कुड़ि डाक्टरी पढ़ाव रे सोबेन नुकुरी टाका को दो

चाबा दपुडु जाना। ने लेकान टुन्डु सोमाय रे टाटा सफारी कोताः ते हिजुगा? ओहो रे सिंह बोंगा मियाद होड़ोमो रेगे होनांग बाबू आर माईम बाई केद! नागे उपुडुः नागे एपेरंग होबाव।

डॉ. किरण - हे बाला सारते गे। डिन्डा कुड़ि होन को नागेन दो ने राकोश दो जोजोम कुला गे तानिः।

भूपति - मेन्दो जोजोम कुला नागेन नसीब गे नसीब मेने में।

डॉ. किरण - ओकोए काजि दाड़िया ताना, हिजुः गापा हुलांग ने राकोश चिमिन चिमिन कुड़ि होन कोए थगोड़ कोआ? मार तोबे नाः दोईं सेनोः ताना।

(डॉ. किरण सेनोः ताना)

(दापाल कोटोंग)

लेपेल साड़ा – 2

ठाँयाद - सिदा ताःगे।

सोमाय - हुड़िंग कोन तायोम ते।

सलीम आर डॉ. किरण ताकिंग सेनोः जान तायोम ओड़ाः राः मोरोन ओड़ोः सिदा लेका गे बाई रूड़ा जाना। ओड़ाः होड़ोआः बोकोर-बोकोर एटेः जाना। भूपति बाबुआः जी बागड़ावा काना।

भूपति - (खोबोर कागोजेः हालांग जादा) आह! होन कुड़ी पास केदा! नाः दो दोबाड़ा हम्बल उडुः।

(सुनीता चाय लोःए बोलो ताना)

सुनीता - आबा, चाय।

भूपति - ओहो, दे (रूडु-रूडु ते चायः नू ताना) पाकू..ऊ..ऊ..ऊ..?

पाकु - हाँ, आबा....अ.....अ.... हिजुः तानाईञ।

सुनीता - चानाः चिका जाना आबा? (माण्डी ओड़ा तेः उडुँगोः ताना)

भूपति - जाँवो का गे बिटि। दाः लोलोः ताना?

सुनीता – हे! मेन्दो तिसिंग इमिन सेकेड़ाम रेड़ान ताना!

भूपति – परीक्ष नाड़ेः आऊः ताना। ट्यूशन पढ़ाव ते सेकेड़ा सेनोगाः मेनागा।

(पाकु बोलो ताना)

पाकु – हिजुः जनाईंग गा आबा।

भूपति – (जिनिया बा दारू सःए अरिद ताना) हेना पटाव ताम।

पाकु – हे। आईं के क्षेमा नोः ताईंग मेंगा आबा। होला ते मित्रापुर रेन नवा कुपुल को माईन दारोम तेदो ओड़ाः राः सोबेन कामि को गेईंग रिड़िग उतर तादा। असल रेदो आईंग गेईंग सानांग ताना चि सुनीता बिटियाः गोः गोनोंग को आलो सिदोः। इनकुआः जोगाव-जोतोन ठीक लेका होबोओ, एनामेन्ते...।

सुनीता – (लण्डा-लुण्डु तान पाकु केः अरिद जाःई) काका जू आमाः कामि कामि में। (ती डँड़ों रे सेरेदेः तोला काना)

(एंगाते बोलो ताना)

एंगाते – (डन्डाः ते उईगोः लेकाए डुन्डा आउन ताना) आते गे ती डाडोः रेदोम चिका काना? नेते-हेन्ते आलोम निर बेड़ाः। मित्रापूर रेन नावा कुपुल कोदो लोटा दःम ओमाः कोआ चि का? दे मिद गिलास दः।

सुनीता – (जी रे दुकु तान लोः दःए ओमाई ताना) आईंग चिमिन काने-काने कुटुरी रे दुब हापेन में मेन्तेईग काजियाम ताना। हान रे गिलास रे दः दो मेनाः। काईंग नू लेया।

एंगा – अच्छा बोरेः हिजुः तोरसा लेना। एसेल गेयाए। एंगा मेन्तेः उरूम किंग गे जाः।

सुनीता – (तिः इदि जाःई लोः) दोलाः नाः दो आमाः कुटुरी ते।

(दापाल कोटोंग)

लेपेल साड़ा - 3

ठाँव - सुनीताः गितिः कुटुरी।

सोमाय - दो बजे सिंगि।

जोम-नू केया ते सुनीताए रूड़ुन ताना। मियाद किताब राः सकाम रे जीः आड़ाव तादा। मेन्दो जी एटाः रे फँसेया काना।

सुनीता - (जी-जी रेगेः मेन जादा) मित्रापूर रेन कुपुल को? जगदीश दो अपुते लोः हिजुः केते अलिंगः मेल-मिलाप जागार को आबा के काए उदुब सुटिः किः? आबा केईंग कुलि पुतिद ली रेदो! का। नेका रे का ठीकोःगा। अच्छा आईउब इमतांग चाय नू तान रे..। ओ होहो...पाकु केईग राः लीया। एहे...पाकु..ऊ...ऊ... ऊ...। पाकु काका...आ...आ...आ...।

पाकु - हिजुः तनाईंग बिटि। ओड़ोः उपुन-मोड़े कुदलाम चालू सारेया काना।

(पाकु बोलो ताना)

पाकु - बिटि मार काजि में। आबाए काजि तुका तादा चि सालमिश्री सेवा तेयाः केयारी बाई तैयार ताम। नेया पुराः गे रनुआन बा दारू तना। नेया राः रेद हड़ाम रोग कोए ठीकीया आर पुराः दिने' जीद कोआ।

सुनीता - (ओल साकाम लेल तान लोःगे) होला मित्रापूर रेन होड़ो को चिकना मेन्तेको हिजुः लेना, इतुआ नाम?

पाकु - जेताव कागे। मगर इनकु सेनोः जान तायोम ने आबा हाड़ाम पुराः गे दुकु जी तेः काजियाईंग तान ताई केना।

सुनीता - (किटिलान गे आर पढ़ाव तान सकमें तेर गिड़ि तादा) मार-मार चानाःए काजि तान ताई केना?

पाकु - काजि तानेः ताई केना चि कुड़ी होन कोआः आपु बाईन पुराः गे बालाय कामि। आयार तेम सेने रेदो दः जलाकार नामोः। तायोम तेम रूड़ा रेदो नुबाः हंगी।

सुनीता – ओड़ोः चानाः कोए मेन लाः?

पाकु – कुड़ाम रे ती दो केया तेः काजि लाः – हाय नाःदो सुनु बिटियाः चानाः होबावगा?

सुनीता – इम तांग आम चांनाःम मेता लिया?

पाकु – आईंग मेता लिया चि आँड़दी-कोड़ांदी राः पतरा पंजी कोरे दो सिंह बोंगा ओल जादा। कोड़ा होन हुड़िंग बजड़ा नोगाए लेकाईंग अटकार केदा। मास्ती गाड़ीयाते दो बारादुकु तेः हाड़ागुन जाना। जागार को एन दो लाख टाका रे टेकाद जाना। सिंह बोंगा यदिः सानांग जान रेदो...।

सुनीता – इम तांग आबा चानाःए मेताः मा?

पाकु – नेया काजि को मेन तेगे इनिः लाला बाड़ियाँ ताःवएः सेनोगा।

सुनीता – का, काका आबा। कागे। जू नाः दो सालमिश्री रोवा ते सेनोः में। माँ-आबा तकिंगः नाः हाड़ाम-दुडुमाउः ताना। सालमिश्री रेद इनकिंग के जुगु-गुगु जीदेन राः भोरसा ओमा किंग का, नेया गे आईंग साः ते आसराए मेता किंग में। जू नाः दो (उईयुः कान चेहरा लोः)

पाकु – (जी-जी रेगे आयार राः बोरोआन उडुः हिजुः जाना चि इदु बाई आयार चानाः गेः चिकाए?)

(दापाल कोटोंग)

लेपेल साड़ा – 4

ठाँव – आपु तेयाः कुटुरी।

सोमाय – आईउब साः पाँच बजे।

माण्डी ओड़ाः रे चाय बाईयो ताना। सुनीता आपु तेयाः कुटुरी केः जोः–साफा जादा।

(भूपति बोलो ताना)

सुनीता – दे आबा (हाकाए नागेन कोट के आसे जाःईया)

भूपति – (कोट के ओमाई ताना)

सुनीता – दाःईञ आउवा मां?

भूपति – का गे बिटि। आमाः एयांग भीतर रे मेनाःईया?

सुनीता – हे। आम तांगी तांगी तेः बालाय चाबाव ताना। हानिः हान्ते रे मेनाःईया।

भूपति – अच्छा चाय बाई में।

(दापाल कोटोंग)

लेपेल साड़ा – 5

ठाँयाद – राचा।

सोमाय – आईउब साः।

कुड़ीते उसुम–दुरूम राचा रेः, दुब हापेया काना। कोड़ाते भूपति बाबू हिजुः तान लोःगे मोटो–मोटोए सायाद जादा। आरेः कुलि जाःईया।

कुड़ी ते – नाम लाःम?

भूपति – का। कागे। ओते–पर्चा को बानोः राः ते लाला जी काए ओम सानांग जाना।

कुड़ी ते – नाःदो चिकनाः लंग रिकाया?

भूपति – जागार लंग सिद केया। ओड़ोः एटाः ताःको.....।

कुड़ी ते - का। कागे। नेका आलो होवाओ। इन किंग दो.....।

भूपति - सोबेनेईंग इतुआना। आम गे उपाय उदुबे में तोबे।

कुड़ी ते - चिमिनुंग ते का बाईओः ताना?

भूपति - पचास हजार।

कुड़ी ते - हातु राः बगाईचा अकिरिंग केम।

भूपति - आर आमाः सोना-सामड़ोम को?

कुड़ी ते - हे। आईया हुड़िंग लेका सोना सामड़ोम मेनाः। एना कोईंग ओमामा।

भूपति - हुँ (मोलोंगः ताबिड़िन ताना) बारान किंग हापे गिड़िन ताना।
(सुनीता हापे-हापेः कोचा रेः आतेन ताना)

भूपति - सुनु चानाःए मेन जादा?

कुड़ी ते - आईंग चनाईंग इतुआना। इनिः, इनिः दो आईंग गेः खाबु ताना।

भूपति - आर पाकु चानाःए मेन जादा?

कुड़ी ते - काजि जादाए चि मित्रापूरा ते मियाद चिटि हिजुआ काना।
(सुनीता चाय साबा काद लोःए बोलो ताना)

सुनीता - आबा, चाय।

भूपति - हे दे {तीरे चाय साब राः साबा कान गेया (जी दो कोते ओटांग गिड़िया काना)}

(दापाल कोटोंग)

लेपेल साड़ा – 6

ठाँयाद – सिदा ताः गे।

सोमाय – दो बजे सिंगि।

मित्रापूराते गापा बारतीयाव को हिजुआ। ओड़ाः रे सोबेन आँड़ादि राः साना-साम्पाड़ो को हिजुः चाबा काना। सोना सामड़ोम, सासंग गुण्डा, डाली बा किया सिन्दुरी... सोबेनाः गे मेन लेका। भूपति बाबू सोबेनाः कोए जाँच बाड़ा ताना।

(पाकु बोलो ताना)

पाकु – (सुकु रासिका ते) आबा गा.....आबा गा..... सिंगबोंगा बिटिया चेतान रे दया-धोरोमेः ओम केदा। कामि को बाई जाना। आईउब साः लालाजी आएगे टाकाए आउ तुकाः।

भूपति – ओ, अच्छा। ओड़ोः चानाःए मेन लाः?

पाकु – इनिः काजि जाद ताई केना चि सलाना बगाईचा राः बाराकाईती चिमिन लेका होबा ताना? आईंय मेताःईया बगाईचा मिद-बार एकड़ रे पासरावा काना। एन रे हिमसागर लंगड़ा उली ओड़ोः इलाहाबादी तम्बारास को बागे केया ते जान एटाः दारू बानोगा। हाँ, चाईरों कोना कोरे रेद रेगे जोः लेकान रिम्बिल तुरुब कनटाड़ा दारू ओड़ो जाड़ा दारू को तिंगुआ काना। बुझावन मेचि सलाना बाराकाईनी पचास हजारा ते चेतान गे।

भूपति – एन तायोम रे चानाःए मेन?

पाकु – काजि केदाए, ठीक! ठीक! आईउब साः आमाः गोमके लोः लिंग नापामा। बिटियाः आँड़दी का सिदोगा।

(दापाल कोटोंग)

लेपेल साड़ा – 7

ठाँव – आंडदी जामडा।

सोमाय – आईउब साः चार बजे।

आंडदी जामडा झण्डा कोते, साकाम कोते खूब सजावा काना। कोन्या राः सासांग गोसोः सेसेना नाः होनांग। कोन्या को दांड़ा जाःई दो कोन्या बगाई। एंगा ते दोए आकाबाकाव गिड़िवोः ताना।

कुड़ी ते – हँ... ऊँ... अँ... बिटिया के ओकोरेम उकु ताःई? उदुबे में सेकेड़ा। बोर बाबू हिजुः ताना।

निधि – हे काका आबा, काकी ठीक गे काजि ताना। सुनीता ओड़ाः रे बंगाईया। मोचो कोए बाहरेईंग सेनाउकोआ मेन। आर नाः जाकेद काए हिजुआ काना।

भूपति – बिटिया ओड़ाः रे बंगाई! लेलीपे लेलीपे...आएयाः गितिः कुटुरी रे...।

सोबेन को – हे... हे... लेलीपे मार... परकोम लातार कोएवोःए पे...का.. जेता रेवो बंगाःईया। अरे कोतेः निर गिड़ि जाना... लेलेपे... जान चिटि को...।

काजल – हे...हे... (ताकियाए ओटाः जादा) अरे नाःए नारे कीया सिन्दुरी! नाःए नारे चिटी!

सोबेन – कोरेः... कोरेः...पढ़ावए पे...पढ़ाव पे....भूपति काका... भूपति काका.... नाःए नारे सुनीताः चिटि।

भूपति – ओह! ओड़ाः राः दीया मारसाल एंड़ेः जाना (चिटिः पढ़ाव जादा) आबा गा, आईंग के क्षेमा ताईंग में। आईंग आईयाः किसाना ते पुराः आईंगः आबा केईंग मानातिंग जाःईया। आबाः ओड़ाः उजाड़ा केया ते किसानाः ओड़ाः बाबाई दो ठीक कामि का तानाः। एना मेनते थाना रे सेन केयाते आईंगाः आद, जान राः खोबोर ओल रिका ताको में।

– आमाः बिटि सुनु

ओह! (चिटि के कुड़ाम रेः साब जापाः तादा) शैतान दहेज राकोस ओड़ो मियाद कुड़ी होन केः उद किया। आईयाः जीदेन राः होराए कोटेंग केदा।

(दापाल कोटोंग)

लेपेल साड़ा – 8

ठाँव – बंगला।

सोमाय – आईउब।

(टाका राः बुगुलि लोः लाला जी बोलो ताना)

भूपति – हिजु में सेठ जी हिजुः में। आईंग दो आम हिजुः राः आसराय गेईंग होका लाः। चिलका तेम ठोर नाम किः ईंग?

लाला – चिलका ते काईंग ठोर नाम में? नेयाव गे मियाद काजि होबा जाना? लेले में भूपति बाबू, बिटि होनाः आँड़दि होबाव ते होबाव का, नेया दो आमा ते आईंग पुराः सानांग ताना। मेन्दो भूपति बाबूईंग चिकाया? पाड़ा-पड़ोस रे ओकोआ नियम दस्तूर चालावा काना एना दो मानतिंग गे होबाव गा।

भूपति – हे हे। मार काजिवोः का।

लाला – आलेया हान कोरे दो भुभुत का चालावा काना। पैसा गेको फिरता जादा। ओको हुलांग सूद-मूड़म ओम रूड़ाया, एन हुलांग ताः ते बगाईचा आमाः होबा रूड़ा जाना।

भूपति – ...मेन्दो.... (उईउः लुतुर तादाए)

लाला – नेरे हुड़िग जी राः चिकान काजि? बागाड़ावा कान कामि यदि बाईयोः रेदो एन होड़ो दो भोगोमान गे मेने में। हें... हें...हें...। हेचि का काजि मेंतो? अरे हाँ, टाका-पैसा दो ती राः हुमु तानाः। दुकु रे ओकोए होपोरेना, इनिः गे सरते रेन सोंगे। ने (टाका बुगुली केः ओमाई ताना) पचास हजार राः गेदांग काजि ताई केना?

भूपति – अरे नेया को चानाः कोम ओमाई ताना?

लाला – पाकु काजि जाद ताई केना चि बागाईचा दो तोवागाई गे ताना हें... हें... हें...।

भूपति – हे। मेन्दो तोवागाई गे गोंड़ा तेः निर गिड़ि जाना।

लाला – हाँए! आईंग काईंग बुझाव जाना आमाः काजि को भूपति बाबू।

भूपति – सुनीता बिटि नाः ओको दुनिया रे मेनाई चि बंगाई काले इतुआ ना।

लाला – ओह! होड़ोमो राः लोभोवा ते टाका-पैसा राः लोभो पुराः गा चि चिलका? (मेद मुड़ा ते गोल चश्माए हाड़ागु जादा)

(दापाल कोटोंग)

टुण्डु

❖❖❖

हिन्दी अनुवाद

सिन्दूर की डिबिया

(महुआ का फूल कहानी संग्रह से)

पात्र-परिचय

पुरुष-पात्र

1. भूपति बाबू - सुनीता का पिता
2. पाकु - नौकर
3. लालाजी - सेठ
4. जगदीश - सुनीता का दूल्हा
5. सलीम - अखबारवाला

स्त्री-पात्र

1. सुनीता - भूपति की एकलौती बेटी
2. अधेड़ बुढ़िया - भूपति की रोगग्रस्त पत्नी
3. निधि, काजल - सुनीता की सहेलियाँ
4. किरण - महिला डाक्टर

अंक -1

प्रथम दृश्य

जगह - भूपति बाबू का बंगला।

समय - आठ बजे सवेरे।

सिर गड़ाए विचार में डूबे भूपति बाबू बरामदे पर इधर से उधर आ-जा रहे हैं। रसोई में सुनीता सब्जी काट रही है। बगल के कमरे में एक रोगग्रस्त अधेड़ स्त्री अनाप-शनाप बके जा रही है।

(सलीम का प्रवेश)

सलीम - (दरवाजे पर दस्तक) ठक्...ठक्...ठक्... भूपति चाचा... भूपति चाचा...दरवाजा खोलिये...।

भूपति – कौन?

सलीम – अखबार वाला, सलीम।

भूपति – (दरवाजा खोलते हैं)

सलीम – (अखबार के साथ घुसता है) आवाज से नहीं पहचाना? आज आपके लिये खुश-खबरी लेकर आया हूँ। ये देखिए... दीदी सुनीता कहाँ है?

(डॉ. किरण का प्रवेश)

डॉ. किरण – हाँ, भूपति बाबू...?

भूपति – (चेहरे पर चिंता बरकरार) अरे डॉ. किरण। आइए...आइए, बैठिये (कुर्सी खींचते हैं)... बैठिये।

डॉ. किरण – पत्नी -कैसी है?

(सुनीता का प्रवेश)

सुनीता – नमस्कार सर! माँ? माँ तो जो है सो है। उसी की तो आवाज आ रही है।

डॉ. किरण – ओह! माँ की जान बची, यही काफी है। महामारी को तो ईश्वरीय लीला कहा जाता है। इसके आगे मानव की नहीं चलती। इसका मानसिक सन्तुलन बिगड़ गया है। शरीर बेहद कमजोर है। आज एक विटामिन का टॉनिक लिख जाती हूँ। (पुर्जा लिखकर देती है) खाने के घंटा पहले दोनों वक्त दो चम्मच करके पिलाएगी। घबड़ाने की कोई बात नहीं। चेतना लौट आयेगी। (और अखबार वाले की तरफ मुखातिब होती है) क्या रे सलीम यहाँ क्या कर रहा है? तू भी डाक्टर बन गया क्या? घर में समय पर पेपर दिया करना, समझा?

सलीम – जी सर् दीदी सुनीता को खुशखबरी देने आया हूँ।

डॉ. किरण – क्या?

सलीम – वह देखिए (अखबार पढ़ रही सुनीता की ओर संकेत)

डॉ. किरण – क्या रे सुनीता तूने भी क्या तीर मार ली है? सबके सब डाक्टर

बनेंगे तो मरीज कौन बनेगा?

सुनीता – कुछ नहीं सर, आई स्पेशलिस्ट का रिजल्ट आया है।

डॉ. किरण – और यह कुछ नहीं? (अखबार लेती है) डिस्टिंक्शन में पास की हो। भूपति बाबू, अब क्या बचा है? इसके हाथ पीले करने की बात सोचें। क्यों?

भूपति – क्या कहूँ डॉ. साहिबा, मुझे लगता है कि ईश्वरीय सृष्टि में बड़ा भारी खोट है।

डॉ. किरण – क्यों भूपति बाबू, आप भी कन्या भ्रूण हत्या के पक्ष में हैं।

भूपति – नहीं, नहीं। मेरे आंदोलित होने का यह कारण नहीं।

सलीम – (चाय पीकर दोनों को आश्चर्य से ताकता है) अच्छा दीदी अब चलता हूँ।

(सलीम का जाना)

डॉ. किरण – तो?

भूपति – हमारी बहू-बेटियाँ! किसी पश्चिमी विद्वान ने ठीक ही कहा है-'ये फूल कुछ नहीं धरती की मुस्कुराहट है।' मैं सोचता हूँ हमारी बेटियाँ मानव जीवन की मुस्कान ही तो हैं।

डॉ. किरण – तो दिक्कत कहाँ? पत्नी की दुख-दर्दों को बेटी की मुस्कान से हर कीजिए न।

भूपति – नहीं डॉ. साहिबा नहीं (दोनों हथेलियों से विरोध जताते हुए) हमारे समाज में बेखौफ चिंघाड़नेवाला दहेज दानव से तो आप वाकिफ हैं ही। एक हाई प्रोफाईल दूल्हा का दाम आपको मालूम है? बरखुरदार ससुर की गाढ़ी कमाई की टाटा सफारी से बेटी को हनीमून मनाने ले जाएँगे। बेटी को डाक्टरी पढ़ाने में चाकरी का सारा पैसा स्वाहा। इस शेष जीवन में टाटा सफारी आये तो कहाँ से? काश! सृष्टिकर्ता एक ही मानव शरीर में स्त्रीलिंग-पुलिंग बनाया होता। न माया न ममता का बखेड़ा।

डॉ. किरण – ओह! सच में अनब्याही बेटी के लिये तो यह दानव घोर

अभिशाप है।

भूपति – पर खुद दानव के लिये तो वरदान, बरकत ही समझें।

डॉ. किरण – पता नहीं यह दानव आनेवाले कल को कन्याओं के मुलायम शरीर पर कितने नुकीले दाँत गड़ाएगा। अच्छा, मैं चलती हूँ।

(डॉ. किरण जाती है)

(पटाक्षेप)

द्वितीय दृश्य

स्थान – पूर्ववत्।

समय – कुछ देर बाद।

सलीम और डॉक्टर के जाने के बाद घर का माहौल पहले की स्थिति में आता है। पत्नी –का बड़बड़ाना जारी है। भूपति का मन अशांत है।

भूपति – (अखबार उठाते हैं, बेटी के उत्तीर्ण की खबर उन्हें और परेशान करता है) बेटी पास कर गई! और सुखद परेशानी!

(चाय के साथ सुनीता का प्रवेश)

सुनीता – पिताजी, चाय।

भूपति – ओहो, हाँ। लाओ (रुक-रुककर चाय पीते हैं) पाकू..ऊ..ऊ... ऊ...?

(सुनीता का जाना)

पाकु – जी, बाबूजी।

सुनीता – क्या हुआ पिताजी? (रसोई से निकलकर)

भूपति – कुछ नहीं। कुछ नहीं सुनु। पानी गर्म हो रहा है?

सुनीता – हाँ। पर आज इतनी जल्दी नहा रहे हैं।

भूपति – परीक्षा निकट है। ट्यूशन पढ़ाने जल्दी जाना है।

(पाकु का प्रवेश)

पाकु – आया बाबूजी।

भूपति - (जिनिया फूल पर नजर) इसे पानी दे देना।

पाकु - जी बाबूजी। क्षमा चाहता हूँ, बाबूजी। कल से मित्रापूर के मेहमानों की खातिरदारी में तो घर का काम-काज ही भूल गया। असल में मैं भी चाहता हूँ कि सुनीता बिटिया का रिश्ता न टूटे। उनकी सेवा-सुश्रूषा में कोई कमी न रह जाए। इसीलिए...

सुनीता - (गोल-गोल आँखों से पाकु को घूरती है) काका, जा अपना काम कर (ऊँगली में पट्टी बंधी है)

(माँ का प्रवेश)

माँ - (लाठी के सहारे लड़खड़ाते हुए) अरे, ऊँगली में पट्टी बँधी है। यह उछल-कूद ठीक नहीं। मित्रापूर वालों को पानी पिलायी कि नहीं? एक गिलास पानी लाओ।

सुनीता - (दुखित मन से पानी देते हुए) मैंने कितनी बार कहा कि अपने कमरे में बैठी रहो। वहाँ गिलास में पानी तो है। नहीं पी लेंगी।

माँ - लड़का भी आया था। गोरा है। माँ बोल के पहचान लिया होगा।

सुनीता - (सहारा देते हुए) अब चलो अपने कमरे में।

(पटाक्षेप)

तृतीय दृश्य

स्थान - सुनीता का शयन कक्ष।

समय - दिन के दो बजे।

खा-खिला कर सुनीता आराम फरमाती है। कोई पत्रिका में रमी है। पर मन भटकाव में है।

सुनीता - (मन ही मन) मित्रापुर के मेहमान! कहीं जगदीश तो पिता के साथ नहीं आ धमका था और हम दोनों के बीच के सम्बन्ध को लेकर पिताजी पर वज्रपात नहीं किया? क्या उन्हें कुरेदूँ? नहीं, यह ठीक न होगा। खैर, शाम को चाय के वक्त। हाँ, पाकु को

आवाज दूँ?...पाकु...ऊ...ऊ...ऊ...। पाकु काका...आ... आ...आ...।

पाकु – आया बिटिया। और चार-पाँच कुदाल बाकी है।

(पाकु का प्रवेश)

पाकु – हाँ कहो बिटिया। बाबूजी ने कह रखा है कि 'सालमिश्री' के लिये कियारी बना रखो। यह बड़ा ही उपयोगी औषध वाला फूल है। इसकी जड़ें बुढ़ापा के कारण होनेवाली समस्याओं को कम करके आदमी को युवा एवं लम्बी उम्र देती हैं।

सुनीता – (पत्रिका से नजर हटाये बिना) कल मित्रापुर वाले किस काम से घर आये थे, पता है?

पाकु – नहीं। पर उनके जाने के बाद बाबूजी मुझे बड़े ही भारी मन से कह रहे थे।

सुनीता – (चौंककर पत्रिका दूर फेंकती है) क्या कह रहे थे?

पाकु – कह रहे थे कि बेटियों का बाप बनना बड़ा ही दुखदायक है। आगे जाओ तो विशाल फैला समुद्र। पीछे लौटो तो अंधेरी खाई।

सुनीता – और कुछ कहा?

पाकु – हाथ से छाती दबाए, एक दर्दभरी आवाज में कहे-'हाय अब लाडली सुनु का क्या होगा?'

सुनीता – तब आपने कुछ कहा?

पाकु – मैंने कहा कि विवाह का पत्र पंजी पर तो विधाता लिखता है। लड़का टेढ़ा लगा। मारुति कार से तो बड़ी मुश्किल से उतरा। बातचीत दो लाख नकदी पर अटकी। विधाता यदि चाहे तो...।

सुनीता – तब पिता जी ने क्या कहा?

पाकु – इसी बात को लेकर वे लालाजी के यहाँ भी जानेवाले हैं।

सुनीता – नहीं काका, नहीं। अब सालमिश्री का पौधा रोपो। माता-पिता की उम्र हो चली है। सालमिश्री की जड़ें उन्हें स्वस्थ और लम्बी

उम्र दे यही मेरी अन्तिम कामना है, जाओ। (उतरा हुआ चेहरा)

पाकु – (जाते हुए निःशब्द में भावी खतरे का आभास)

(पटाक्षेप)

चतुर्थ दृश्य

स्थान – पिता जी का कमरा

समय – संध्या पाँच बजे।

रसोई में चाय बन रही है। सुनीता पिता के कमरे को झाड़-बुहार रही है।

(भूपति का प्रवेश)

सुनीता – लाइये पिताजी (कोट टाँगने के लिये)

भूपति – (कोट देते हैं)

सुनीता – पानी लाऊँ?

भूपति – नहीं। तेरी माँ अन्दर है?

सुनीता – हाँ। आपकी प्रतीक्षा में ही उठती-बैठती है। वो, उधर है।

भूपति – अच्छा, चाय बना के दो।

(पटाक्षेप)

पंचम दृश्य

स्थान – आँगन।

समय – सांध्या।

पत्नी –आंगन पर गुपचुप बैठी है। भूपति के आते ही हाँफते हुए पूछती है।

पत्नी – मिला?

भूपति – नहीं। जमानती कागजों के अभाव में लालाजी ने ऋण देने से इन्कार कर दिया।

पत्नी - अब क्या होगा?

भूपति - रिश्ता तोड़ देंगे। फिर कहीं...।

पत्नी - नहीं ई... ई...ई...। ऐसा नहीं। वो दोनों...।

भूपति - मालूम है। तुम्हीं उपाय बताओ।

पत्नी - कितना नहीं बनता है?

भूपति - पचास हजार।

पत्नी - गाँव का बगिया बेच दो, जी।

भूपति - और सोना-गहना?

पत्नी - हाँ, मेरे कुछ गहने हैं। उन्हें दे दूँगी।

भूपति - हुँ... (माथा पीटते हैं) और सन्नाटा छा जाता है।

(सुनीता का आना और छिपकर बात सुनना)

भूपति - सुनु क्या कहती है?

पत्नी - मैं क्या जानूँ जी। वो तो, वो तो हमको ही बैठ जाने को कहती रहती है।

भूपति - और पाकु क्या कहता है?

पत्नी - कहता है कि मित्रापुर से एक पत्र आया है

(सुनीता का चाय के साथ प्रवेश)

सुनीता - पिताजी, चाय।

भूपति - (हाथ में चाय धरी की धरी ही है, मन कहीं और है) हाँ लाओ।

(पटाक्षेप)

षष्ठ दृश्य

स्थान - पूर्ववत्।

समय - दिन के दो बजे।

मित्रापुर से कल बारात आनेवाली है। घर में विवाह का सारा सामान आ

चुका है। सोना, गहना, हल्दी मेंहदी सिन्दूर आदि आदि। भूपति बाबू सारे ताम-झाम के आकलन में व्यस्त हैं।

(पाकु का प्रवेश)

पाकु - (प्रसन्न मुद्रा में) बाबूजी, बाबूजी, विधाता ने बिटिया पर रहम किया है। काम बन गया है। शाम के वक्त लाला जी खुद ही रुपया लेकर आ रहे हैं।

भूपति - अयँ! वे क्या बोल रहे थे?

पाकु - बोल रहे थे कि बगीचा में सलाना आमदनी कितनी है? मैंने कहा कि बगीचा दो एकड़ में फैला है। वहाँ हिमसागर, लंगड़ा आम तथा इलाहाबादी अमरूद को छोड़कर और नहीं। हाँ चारों कोने पर जड़ से धड़ में फल लटकनेवाले कटहल के गगनचुम्बी पेड़ हैं। घेरे के किनारे-किनारे बौने पपीते खड़े हैं। समझो कि सलाना आमदनी पचास हजार से ऊपर।

भूपति - और कुछ कहा?

पाकु - कहा, ठीक है, ठीक है। शाम के वक्त तुम्हारा मालिक से मिलता हूँ। बेटी का विवाह नहीं टलेगा...।

(पटाक्षेप)

सप्तम दृश्य

स्थान - विवाह मण्डप।

समय - संध्या चार बजे।

विवाह मण्डप पताकाओं से सजा है। दुल्हन को हल्दी लगाने की रस्म पूरी की जानी है। पर दुल्हन नदारद है।

पत्नी - (घबराहट में) हँ...ऊ...हँ...ऊ...हँ...ऊ... बिटिया को कहाँ छिपा के रखा है जी? निकालो... निकालो... दूल्हा बाबू आ रहा है, निकालो।

निधि - हाँ चाचा, चाची ठीक ही बोल रही है। सुनीता घर में नहीं मिल रही है। थोड़ा बाहर जा लूँ, कहकर गई, पर अभी तक नहीं लौटी है।

भूपति - बेटी नहीं मिल रही? देखो...देखो अपने शयन कक्ष में देखो...।

भीड़ - हाँ हाँ... चलो... खटिया के नीचे देखो... नहीं। कहीं नहीं है। अरे कहाँ भाग गई यह लड़की? देखा चिट्ठी-पत्री, तकिया उठाओ...।

काजल - (तकिया उठाती है) अरे यहाँ सिन्दूर की डिबिया! (डिबिया खोलती है) चिट्ठी!

भीड़ - कहाँ? कहाँ? पढ़ो... पढ़ो। भूपति काका यह सुनीता लिख गई है।

भूपति - ओह! घर का चिराग बुझ गई। पत्र पढ़ते हैं-पिताजी, मुझे माफ कर दीजिए। मैं पति से ज्यादा पिता को महत्व देती हूँ। पिता के घर को उजाड़कर पति के घर को बसाना उचित नहीं समझती। थाने पर जाकर मेरे लापता होने की रपट लिखा दीजिए।

- आपकी लाडली

सुनु

ओह! (पत्र को छाती से लगाते हैं) साले दहेज दानव ने एक और लाडली की जान ले ली। मेरी जिंदगी का सहारा छिन लिया।

(पटाक्षेप)

अष्टम दृश्य

स्थान - बंगला।

समय - सांध्य।

(रुपयों का थैला लिये लालाजी का प्रवेश)

भूपति - आइए सेठ जी आइये। मैं तो आपके आने का आशा ही छोड़ दिया था। कैसे याद किये?

लाला – कैसे याद नहीं करते? यह भी कोई बात हुई? याद रखिएगा भूपति बाबू, बिटिया के हाथ पीले ही हों लाल नहीं, यह तो आपसे ज्यादा हम को फिक्र है। मगर क्या करें भूपति बाबू, समाज-सभा में जो नियम-दस्तूर चला है उसे तो मानना ही पड़ता है।

भूपति – हाँ, हाँ कहा जाए।

लाला – हमारे उधर भुभुत नहीं, पैसा वापस का ही रिवाज है। जिस दिन सूद-मूल वापस कर देंगे, उस दिन से बगिया आपका हो जाएगा।

भूपति – लेकिन... (उतरा हुआ चेहरा)

लाला – इसमें सोचने की क्या बात है? बिगड़ा काम यदि कोई बना दे तो वह भगवान ही है, समझे हें... हें... हें... हाँ कि न बोलिये तो? अरे हाँ, रुपया-पैसा तो हाथ का मैल है। मुसीबत में जो काम आये वही न सच्चा पड़ोसी है। लीजिए (पैसे की थैली देता है) पचास हजार की ही तो बात थी, लीजिए...।

भूपति – अरे यह क्या?

लाला – पाकु ने बताया था कि बगीचा तो दुधारू गाय ही कहें। हें..हें... हें...।

भूपति – पर दुधारू गाय ही गोशाले से गायब हो गई।

लाला – हँए! मैं समझा नहीं, भूपति बाबू।

भूपति – सुनीता अब किस दुनिया में जी रही है या मर रही है, हमें पता नहीं।

लाला – ओह! तन के मोह से धन का मोह ज्यादा कड़ा है का?(चेहरे से गाँधी चश्मा उतारता है)

(पटाक्षेप)

समाप्त।

❖❖❖

2. हेड़ेम-हासु

इनुँग तान को

कोड़ा होड़ो को

1. इकबाल - रेल रेन कामिया
2. तपन कर्मकार - मारांग बाबू
3. हमीद अंसारी - इकबालः आपुते
4. मधुसूदन - रेल रेन कामिया को
5. करीम - रेल रेन कामिया को
6. जॉन - रेल रेन कामिया को
7. राघवन - रेलवे बोर्ड रेन सचिव
8. ओड़ोः एटाः को

कुड़ी होन को

1. सुलोचना - तपनः कुड़ी ते
2. शकीना - हमीदः कुड़ी ते
3. ओड़ोः एटाः को

साड़ा-1

लेपेल साड़ा-1

ठाँयाद - रेल कामि ओड़ाः।

सोमाय - 11 बजे सिंगि।

तपन कर्मकार रेल कामि ओड़ाः रेन मारांग बाबू तानिः। इकबाल, मधुसूदन, जॉन इनियाः जापाः रेन बुगिन-भोरसा कामिया किंग तान किंग। हड़ाम नन्दलाल चापारासी तानिः। ओड़ाः रे काजि-कामि खूब सेसेन ताना।

तपन - (फाईलेः ओटाः बिउर जादा) ने महीना राः 10 तारीख रे आबुआः तोरोब ते रवीन्द्र-नजरूल जलसा होबावगा। आपेवोगे

एनरे हुड़िग लेल रिका होबा लागा तिंगआ, चि चिलका?

मोसा ते – हे बाबू साहेब।

तपन – इकबाल, आम चानाःम रिकाया?

इकबाल – साब, आईंग नजरूल दुरंग ईंग दुरंगया।

तपन – शाबाश! आमाः लुतुम दो सिदा रेगे होएवो रे ओटांग बिउर ताना। आईंगआः ओड़ा होड़ोगे रवीन्द्र दुरंग एः दुरंगया। आबेन मधुसूदन आर जॉन चानाः बेन रिकाया?

मोसा ते – आलिंग दो लेलेन रेलिंग ताई ना, सर। हा...हा...हा...।

इकबाल – हे, आबेन ठीक बेन काजि जादा। सोबेन को यदि सुसुन-दुरंग रेको ताईना रेदो ओकोए लेला? हे चि का?

तपन – (फोन साड़ी ताना) हल्लो, तपन स्पीकिंग... हल्लो...

राघवन – हल्लो चीफ सेक्रेटरी राघवन, रेलवे बोर्ड नई दिल्ली।

तपन – हे साहेब। मार काजिवोः का।

राघवन – ईयारली एक्सपेंस एण्ड आरनिंग फिगर सेन्ड सून। बोनस इस्टीमेट हेल्ड अप।

तपन – ओ.के. सर। बाई 15न्थ यू विल गेट दि फिगर पोजीटिबली (तपन फोनेः दो जादा)

इकबाल – हाँ, मारांग बाबू।

तपन – रेलवे बोर्ड वाते फोन हिजुः लेना। होला रे कामिंग जिमा लेः मा एना...?

इकबाल – हे गोमके, एना कोदो तेयारा काना।

तपन – शाबाश! मेन्दो एंगामाः जी ठीक बानोःम मेन जाद ताईकेना?

इकबाल – हे गोमके। डाक्टराः ओड़ाः ते हिजुः तायोम ते ओड़ाः रे हेड़ावगे कामिंग आचुन जाना। ने गोमके (कागज-पत्तर कोए ओमाई ताना)

जॉन – अरे वाह! नि दो गोटा आफिस राः दःए दो केदा। का रेदो नि दो

सजाईः नामगेः नाम केदा होनंग। कामिया रेन संडी ने तुड़कु दो।

करीम – ठोरोः ताना नि दो एटाः मियाद अन्ना हजारे।

नन्दलाल – चिका ते का? चिका ते का? तिसिंग सोमाय हिजुआ काना चि सोबेन को अन्ना हजारेयाः होरा ते सेसेन चाई। अरे होन को गापा हुलांग दो आपे गेचा दिसुम सम्बाड़ावे कोदो, चि का?

तपन – तेर तोबे इकबाल, 10 तारीख हुलांग नजरूल दुरंग ते रिम्बिल कम एकेला केरे दो आमगे ठोरेया हाँ। आईंया ओड़ाः होड़ो गे काजि ताना चि इनीः अल्हा भाला चिमिन सुगाड़ा दुरंग हारियाए बाई तुका तादिया।

(दापाल कोटोंग)

लेपेल साड़ा – 2

ठाँयाद – सुसुन अखाड़ा।

सोमाए – 10 बजे निदा।

गाजा-बाजा साड़ी तान लोः इकबाल खूब सुगड़ाए दुरंग ताना आर लेल तान आईउम लान को खूब को रासिका ताना।

इकबाल – नजरूल दुरंग...

(रासिका ते ती को तबिड़ि जादा)

दुरंग को चाबा जाना

सुलोचना – अरे वाह! खूब बुगिन... खूब बुगिन... सारते गे अल्हा आमके गोनोंआन चीज केः ओम कुलाः काद मेया इकबाल बाबू। नेकान सुगड़ा दुरंग दो जाँ रेवो काईंग आईउम लाः। इकबाल बाबू मिसा-मिसा आईंआः ओड़ाः तेवो कुपु लोः हिजुः बेड़ा में।

जॉन – अरे वाह भई वाह! सारते गे आम दो खूबेम फोकोतो लाः ताबु। आईंसाः ते खूब खूब साबाईसींग ओमाम ताना।

मधुसूदन – हे हे। खूब साबाईसी ओमाईमे।

करीम – हे। आईंग साः तेवो साबाईसींग ओमाम ताना। गापा ओफिस रे

मिठाईम खियाव लेया दो?

तपन – धत् बोका कारे दो। आम इनिः के मिठाई खियाव होना चाई। हे मार। जाँ लेका ते ओफिस राः लुतुम दोए दो केदा। नेका गे आयार तेवो आचुआ कान में इकबाल।

इकबाल – आमाः उम्बुल आईंग चेतान रे तईया कानोः का, सर।

(दापाल कोटोंग)

साड़ा–2

लेपेल साड़ा – 1

ठाँव – हमीदः ओड़ाः।

सोमाए – 8 बजे सेताः।

तिसिंग शुक्रवार राः दिन तानाः। रेलवे ऑफिस रेवो छुटी काजिया काना। एना मेन्ते इकबाल के तपन बाबुआः ओड़ाः सेन राः सोमाय नामा काना। आर एनते सेनोः नागेन एंगा आपु ताकिंग ताः ते छुटीः आसी ताना। आपु ते हमीद केचाः लिजाःए तिपान ताना। एंगा ते शकीना हाटाः रे चाउलीः साला ताना।

(इकबाल बोलो ताना)

इकबाल – आबा गा!

हमीद – हँ, काजि में। कोतेम सेन केना?

इकबाल – चौधरी स्वीटस मिठाई दोकान ते।

हमीद – चानाः चिका? ओड़ाः रे ईद राः सेवाई सारेया कान गेया। एंगाम केम काजियाई रेदो होनांग तोवा–चीनी लोः चिमिन सिबिल जोमेयाःए बाईयाम जान तेयाः होनांग।

इकबाल – का आबा। आधा किलो राजभोगोईंग आगु तादा।

शकीना – (किटिलांन गे) चानाः राजभोग? गापा मालपुआ आगुई में... मेयांग तेरे चमचम... मोरोए तेरे हिलसा हाई राः चोकाः... । आमाः हिन्दू सरकारः रेल दो। निम ठोर जाःईया? हिन्दू कोआः जोम नू आऊ आऊ ते आबु सोबेन केः हिन्दू जाः बुआ। अरे

ओड़ाः सेनोवाः मेनाः।

हमीद - ओको बोड़ो बाबू?

इकबाल - ओफिस रेन बोड़ो बाबू। तपन कुमार कर्मकार।

शकीना - ठीक गेईंग काजि लाः चि का? ने होन आलंग के मोलोंग रे चंदन ते काए टिका केलेंग रेदो काजियाईंग में।

हमीद - का बेटा। एनका दो का। आमाः एनते सेनोगाः का ठीक होबावगा।

इकबाल - मेनदो चिलका ते का ठीक होबावगा? आमदोम काजि बेड़ाया चि धोरोम-कोरोम दो होड़ो को ताला रे दोष-दुसमनी काए सिरजाओए या... इदो जाः इनिःवो जाः आयाः धोरोम-कोरोम बागे कयाते आईंगएः राः दुबिंग!

हमीद - अच्छा बेटा, अच्छा। तिसिंग आम आलिंग के खूब मारंग जागारेम जागारः लिगाः। गापा हुलांग कोराः जागार कोदो आपे होन कोगे ठोर नामेया। जू कोते सेनोः मोने ताः मा सेनोः में।

शकीना - हूँ-सेनोः रेदो सेनोः में। मेन्दो हाँ, ओड़ाः बोलो सिदा रे मस्जिद रे बोलो केया ते अल्हा-ताला ताः ते माफी आसे लेम।

इकबाल - (हापे हापे एंगाते के लेल जाई लोए सेनोः ताना)

(दापाल कोटोंग)

लेपेल साड़ा – 2

ठाँव – तपन ओड़ाः।

सोमाए – 8 बजे सेताः।

तिसिंग तपन बाबूआः ओड़ाः ते इकबाल हिजुः राः मेनाः। सेतः राःलोआड़ी नागेन तपन कुड़ी ते लोःए जागार ताना।

तपन – आईउम जादाम चि? ई...ई....ई....

सुलोचना – चानाः चिका जाना? आ....आ...आ....

तपन – तिसिंग जाः एन होन हिजुआ। लोवाड़ी रे चानाःम बाई जादा?

सुलोचना – ओको होन?

तपन – इनिः गे, उकुनिः चि होन्देर नजरूल-सुसुन दुरंग जलसा रे ओड़ाः हिजुः राःम काजि लिया।

सुलोचना – ओ हो, इकबाल?

तपन – हे।

सुलोचना – तुड़कु होन कोदो सेवाई आर हलुवा को गे पुराः को सुकुआः। गाजार राः हलुवाईंग बाई जादा।

तपन – जाँनाःम बाई। इनिः दो आमा गाःव दो दुरंग हारिया तानिः।

सुलोचन – हे। एना दो हे काजि गे। ओह बापुड़िः चिमिन सुगड़ाए दुरंगए। मुसिंगः दिन ने होन मारंग होड़ोए बाईवोगा। हिजुः काए मार।

(दापाल कोटोंग)

लेपेल साड़ा – 3

ठाँव – सिदा ताः गे।

सोमाए – 12 बजे दिन।

तपन बाबूआः ओड़ाः तिउः जाद लोः इकबाल के बारह बजे होबाव ताना। इनिः हिजुः तान लेल जाःई लोः गे तपन बाबू लोटा दाःए एतेलाई ताना।

बेना चि का। आईंगवो गे आबेन के न्योता ओम केयाते आईंगआः बोंगा ओड़ाः रेईंग दुब दाड़िया बेना चि का।

सुलोचना – ओ हो। जेतान काजि बनो। आमाः अल्हा अगर नेया को काए सुकुआ तोबे दो होरा राः गाड़ा रे नेया को तेर गिड़ि ताम। दाः रेन हाई-चोके को जोमेया।

इकबाल – जोआर!

बारान किंग – जोआर!

(दापाल कोटोंग)

लेपेल साड़ा – 3

ठाँव – हमीदयाः ओड़ाः

सोमाए – 2 बजे सिंगि।

इकबाल 2 बजेवोः तान लोः आयाः ओड़ाःए तिऊः लाः एयांग-आबा ताकिंग सोबेन काजि कोए काजिया किंग ताना।

(इकबाल बोलो ताना)

हमीद – (केचाः लिजाःए तुकुई ताना) बेटाम हिजुः लेना कुपुलोःआते?

इकबाल – हे गा आबा। साते रे नेयावईंग आउ तोरा लाः।

हमीद – चानाः?

इकबाल – बोंगा जोम सारेः मेठाई।

शकीना – हुँ, ओकोवाईंग उड़ुः तान ताई केना एना गे होबा जाना। आम गे जोमेमे मेठाई।

हमीद – शकीना, इमिउंग खायरावन राः चानाः? तपन बाबूआः तीको ओको सुकुरी लाचो दो काचि, इनियाः ती ते ओमा काद अन्नकूट बु तेर गिड़ि ताः?

शकीना – दिसुम रेन तुड़कु जाती को जाती हिरिति-पिरिति राः ठेका कामि को उठावा कादा। गुजरात रे लाख गोदरा काण्ड होबाव का।

तपन - जाँ-व कागे। सिंह बोंगा, अल्हा मियाद काजि गे तानाः। बस, एनताः तेतेबा राः होरा बिनगा-बिनगा मेनाः। मार नेरे गे गमछा आटेद केयाते...।

इकबाल - (बोंगा ओड़ाः रेगे गमछा आटेद केयाते नमाजे पढ़ाव ताना)

(दापाल कोटोंग)

लेपेल साड़ा - 2

ठाँव - सिदा तः गे।

सोमाए - 1 बजे सिंगि।

कुपुलेन को चाबा जान चि इकबाल बारान किंग ताः ते विदायीः आसे ताना।

तपन - बड़ा बाबू नाः दो आबेनाः ओड़ाः दोईंग लेल क़ेदा। जोम नू सोबेन होबा जाना। नाः विदाईंग आसी ताना।

सुलोचना - (पोटोमेः साब तादा) आलिंगः ओड़ाः-दुआर को चिलकाम आटकार केदा इकबाल बाबू? ने। नेया बोंगा को जोम सारेः मेठाई...।

इकबाल - (पोटोमेः साब जादा) चानाःईंग मेता बेना बड़ी बाबूआईन आवेनाः ओड़ाः दुआर लेल केयाते आईंगआः कुड़ाम भीतार रे मियाद हेड़ेम हासु बिरिद जाना।

बारान किंग - अरे चानाःम मेताद लिंगआ, इकबाल?

इकबाल - हे बड़ा बाबू। आईंगआः कुड़ाम रे हेड़ेम हासु एटेगोः ताना।

बारान किंग - आमाः जागार को कालिंग बुझाव जाना, इकबाल। आम चानाः जागारेम सानांग ताना? जान टेकाद कोदो का होबा जाना?

इकबाल - का। कागे। जान टेकाद कोदो कागे। हासु रे हेड़ेम नेया मेन्ते बिरिद जाना चि तिसिंग आबेन आबेनाः बोंगा कोचारेः हिरिति-पिरिति राः सिबिल मेठाई बेन खियाव किः ईंगआ। हासु रे लहराव नेया ते होबा जाना चि ने ऋणीईंञ चुकती दाड़िया

हिन्दी अनुवाद

2. मीठा दर्द

('महुआ का फूल' कहानी संग्रह से)

पात्र-परिचय

पुरुष-पात्र

1. इकबाल - रेलवे कर्मचारी
2. तपन कर्मकार - बड़ा बाबू
3. हमीद अंसारी - इकबाल का बाप
4. मधुसूदन - कर्मचारी
5. करीम - कर्मचारी
6. जॉन - रेलवे बोर्ड का सचिव
7. राघवन - रेलवे बोर्ड का सचिव
8. अन्य - रेलवे बोर्ड का सचिव

स्त्री पात्र

1. सुलोचना - तपन की पत्नी
2. शकीना - हमीद की बेगम
3. अन्य

अंक-1

प्रथम दृश्य

स्थान - रेल कार्यालय।

समय - 11 बजे दिन

कार्यालय में तपन कर्मकार बड़े बाबू हैं। इकबाल, मधुसूदन, जॉन उनके विश्वासनीय कर्मचारी हैं। बूढ़ा नन्दलाल चपरासी है। कार्यालय का काम चालू है।

आर हिन्दू-तुड़कु केटेः काजि कोते रिम्बिल पुसीगोः का...।

हमीद - अरे का, इकबालाः माँ का। आम जागार को काम बुझाव बाईवोः ताना। आम कश्मीर साः हेता लेम, पाकिस्तान साः हेता लेम। एन रे आबु चिमिनांग ईमान-धोरोम मेना बु? ऋणी राः सूद पुराः गे विषियान गेया शकीना पुराःगे विषियान...। आर हाँ... नेया खोकोनो आलोम रिडिगया चि ने शैतान सूद सुकुरी हिरिति-पिरिति गे सिदाए तागोड़ोया। आम सिदा ने दिसुम रेन होड़ो। एन बाद रे तुड़कु। बेटा इकबाल, एला हिजुः कोः में।

इकबाल - हिजुः जानाईंग आबा।

हमीद - बेटा तिसिंग आम आलिंग के एन धोरोम-संसार राः कूँड़रेम तिंगु ताःलिंग ओको रे चि सोबेन इमतांग सिंगि दो लोलो होएवो लिंगि ताना। आर निदा दो निर-संदि हुदहुद निदा।

शकीना - तोबे दो किशान-मुरारी ताः ते मियाद ढिबरी चियाः काम आसे ताना?

इकबाल - हापेन मेगा एयांग। का रे दो आबु नेरेन कोआः बुलुंग बु जोम ताना चि का? आईंग तपन बाबुआः बोंगा कोचा रे नमाजे ईंग पढ़ाव लाः। चानाः बोंगा ओड़ाः राः दुआर आए तेगे निः जाना? आह! आबु जाः होनांग अल्हा ओड़ाः रे आकिंग मुरारी लोः बु जागार रिका दाड़िया किंग!

हमीद - आम पुराःगे ठीकम जागार केदा, बेटा। जान धोरोम एपेरंग मेन्ते का बाईया काना। आबु मानातिंग तान कोगे एपेरंग बु सिरजाव जादा। दे, ने पिरिति, पाला राः जंग ते आईंञः ने बांझ ओते के बाराकाईती राःईंग कोशिश लेया (मेठाईः जोम केदा)

(दापाल कोटोंग)

टुन्डु

❖❖❖

बताओ नोटिस मिलता ही मिलता। धुन का पक्का है यह मियाँ।

करीम – लगता है यह दूसरा अन्ना हजारे है।

नन्दलाल – क्यों नहीं? क्यों नहीं? आज समय की मांग है कि हम सभी को अन्ना के पद्चिह्नों पर चलें। अरे बच्चे, कल का भारत तुम युवा पर ही तो निर्भर है। क्यों?

तपन – इकबाल! 10 तारीख को नजरूल गीत से समाँ न बाँधा तो जानो। मेरी पत्नी भी कहती है कि अल्लाह ने उसको गजब का गला दिया है।

(पटाक्षेप)

द्वितीय दृश्य

स्थान – संस्कृति मंच

समय – 10 बजे रात।

वाद्य-यंत्रों के साथ इकबाल गीत गाकर सबका मन मोह लेता है।

इकबाल – नजरूल गीत...

(तालियों की गड़गड़ाहट)

गीत की समाप्ति

सुलोचना – अरे वाह! बहुत सुन्दर... बहुत सुन्दर...। सच में अल्लाह ने आपको बेशकीमती उपहार दे रखा है। ऐसी मीठी आवाज तो पहले कभी नहीं सुनी थी। इकबाल बाबू कभी-कभी हमारे घर भी मेहमान आया कीजिये।

जॉन – अरे वाह! सच में तुमने तो कमाल कर दिया। बधाई हो।

मधुसूदन – हाँ-हाँ, बधाई हो!

करीम – हाँ बधाई! कल ऑफिस में मुँह मीठा कराओगे तो?

तपन – धत् बुड़बक कहीं का! तुम्हें उसका मुँह मीठा करना चाहिये कि नहीं। चलो ऑफिस का नाम तो रोशन किया। इसी तरह हुनर

तपन – (फाईल पलटते हैं) इस महीने के 10 तारीख को डिपार्टमेंट में रवीन्द्र नजरूल उत्सव मनाया जायेगा। तुमलोगों को भी कुछ कर दिखाना होगा, क्यों?

समेत स्वर – जी सर।

तपन – इकबाल! तुम क्या दिखायेगा?

इकबाल – मैं नजरूल गीत गाऊँगा, सर।

तपन – शाबाश! तुम्हारा नाम तो पहले ही आसमान पर है। मेरी पत्नी रवीन्द्र संगीत पेश करेगी। तुम मधुसूदन और जॉन क्या करेगा?

समेत स्वर – हम लोग ऑडियन्स में रहेंगे। हा...हा... हा...

इकबाल – हाँ, हाँ, तुम दोनों ठीक बोले हो। सब अगर गाने-बजाने लगे तो कौन देखेगा-सुनेगा, हाँ?

तपन – (फोन बज उठता है) हल्लो, तपन स्पीकिंग... हल्लो...

राघवन – हल्लो चीफ सेक्रेटरी राघवन, रेलवे बोर्ड नई दिल्ली।

तपन – हाँ साहब, कहा जाए।

राघवन – ईयारली एक्सपेंस एण्ड आरनिंग फिगर सेन्ड सून। बोनस इस्टीमेट हेल्ड अप।

तपन – ओ.के. सर। बाई 15न्थ यू विल गेट दि फिगर पोजीटिबली (तपन फोन रखता है)

इकबाल – जी, सर।

तपन – रेलवे बोर्ड से फोन आया था। कल जो फिगर कलेक्शन करने को कहा था...?

इकबाल – फिगर रेडी है, सर।

तपन – वाह! लेकिन माँ की तबीयत ठीक नहीं कह रहा था।

इकबाल – जी। डाक्टर खाने से लौटकर गये रात तक काम पर लग गया। यह लीजिए (पेपर देता है)

जॉन – अरे वाह! इसने तो ऑफिस की लाज बचायी, वरना इसे कारण

इकबाल – ऑफिस का। तपन कुमार कर्मकार।

शकीना – ठीक कहा न? यह औलाद माथे पर चन्दन के कलंक का टीका नहीं लगवाया तो जानो।

हमीद – ना बेटा ना। तुम्हारा वहाँ जाना ठीक नहीं रहेगा।

इकबाल – ... पर क्यों? आप तो हमेशा कहा करते हैं कि धर्म आपस में वैर नहीं सिखाता...। क्या पता वो भी आपसी भाईचारे का हाथ फैलाकर अपने धार्मिक रिवाज का गला घोंट दे!

हमीद – अच्छा बेटा, तूने हमें अबतक के भारत की तस्वीर पेश की है। कल के भारत का दीदार तू और तेरा विवेक ही करायेंगे। जाओ, जहाँ जाना है जाओ...।

शकीना – हूँ, जाता है तो जा। पर हाँ, घर आने के पहले मस्जिद में जाके खुद को अल्लाह से माफ करा लेना, हाँ।

इकबाल – (चुपचाप माँ देखकर निकल जाता है)

(पटाक्षेप)

द्वितीय दृश्य

स्थान – तपन का घर।

समय – दिन के आठ बजे।

आज तपन का घर इकबाल आनेवाला है। सुबह के नाश्ते के विषय में वह पत्नी से बात उठाता है।

तपन – एजी, सुनती हो...। ओ....ओ....ओ....!

सुलोचना – क्या हुआ?...आ...आ...आ....?

तपन – आज वो लड़का शायद आयेगा। नाश्ते में क्या बनाओगी?

सुलोचना – कौन लड़का?

तपन – वही, जिसको कि तुमने गत नजरूल कार्यक्रम में घर आने का न्योता दे रखी है।

में लगे रहो इकबाल।

इकबाल - आपका आशीर्वाद मिलता रहे, सर।

पटाक्षेप

अंक-2

प्रथम दृश्य

स्थान - हमीद का घर।

समय - 8 बजे सवेरे।

आज शुक्रवार है। रेलवे ऑफिस में भी राजकीय छुट्टी है। इकबाल को तपन बाबू के घर जाने का मौका मिला हुआ है। वह वहाँ जाने के लिये माता-पिता से अनुमति माँगता है। हमीद कपड़ा रफू करता है। शकीना सूप में चावल में से कंकड़ चुनती है।

(इकबाल का प्रवेश)

इकबाल - पिताजी!

हमीद - हाँ कहो बेटा! कहाँ गया था?

इकबाल - चौधरी स्वीटस।

हमीद - क्यों? माँ को कहा होता। घर में ईद की सेवई पड़ी हुई है। दूध चीनी के साथ जायकेदार बना लेती।

इकबाल - नहीं। आधा किलो राजभोग ले आया हूँ।

शकीना - (चौंकती है) क्या राजभोग! कल मालपुआ ले आओ... परसों चमचम... नरसों हिलसा का चोंएटा...। तुम्हारा हिन्दू सरकार का रेल है न! यह हिन्दू अन्न-जल खिला-पिलाकर हमें भी हिन्दू बनाने का चक्कर चला रहा है, समझा? अरे गफूर मियाँ के मीट शॉप में हिमालयन बकरी आ गई है। इनके कबाब का स्वाद में ऐसा जादू है कि तेरा अल्लाह भी खिलखिला उठे, हाँ।

इकबाल - नहीं अम्मा। जरूरी काम से हमारे बड़े बाबू का घर जाना है।

हमीद - कौन बड़े बाबू?

अंक-3

प्रथम दृश्य

स्थान - पूजा घर।

समय - 12 बजे दिन।

पूजा घर का दरवाजा जब खुलता है तो इकबाल देखता है कि करीने से काली, दुर्गा, सरस्वती, कार्तिक आदि की मूर्तियाँ जड़वत् खड़ी हैं। उन्हें देखकर वह पशोपेश में पड़ जाता है।

इकबाल - या अल्लाह! तू मुझे कहाँ ले आया? यहाँ तेरा नाम कैसे लूँ?

(तपन का प्रवेश)

तपन - हाँ, हाँ। यहीं बैठकर नमाज अदा करो, यहीं...।

इकबाल - लेकिन बड़ा बाबू...?

तपन - कुछ नहीं। ईश्वर, अल्लाह एक ही हैं। बस उस तक पहुँचने का रास्ता अलग है। यहीं गमछा बिछाकर...।

इकबाल - (पूजा घर में गमछा बिछाकर नमाज पढ़ता है)

(पटाक्षेप)

द्वितीय दृश्य

स्थान - पूर्ववत्।

समय - 1 बजे दिन।

मेहमाननवाजी समाप्त कर इकबाल दोनों से विदाई मांगता है।

तपन - बड़ा बाबू, अब आपका घर देख लिया। खाना-पीना भी हो गया। अब मुझे विदाई चाहिये।

सुलोचना - (पैकेट लिये हुए) हमारा घर-द्वार कैसा लगा इकबाल बाबू? लीजिए यह देवताओं का आशीर्वाद स्वरूप प्रसाद...।

इकबाल - (पैकेट लेता है) क्या कहूँ, आपके घर-द्वार मेरे सीने में एक मीठा दर्द पैदा कर दिया, बड़ी बबुआईन।

दोनों - अरे तुमने यह क्या कह दिया इकबाल?

सुलोचना – ओ हो, इकबाल!

तपन – हाँ।

सुलोचना – मुसलमान बच्चे तो सेवाई, हलुआ ही ज्यादा पसंद करते हैं। गाजर का हलुआ बनाती हूँ।

तपन – जो भी करो। वह तो तुम्हारा भी पसंदीदा गायक है।

सुलोचन – हाँ! सो तो है। बेचारा कितना सुन्दर गायन करता है। एक दिन यह छेले समाज की ज्योत बनेगा। आने दो।

(पटाक्षेप)

तृतीय दृश्य

स्थान – पूर्ववत।

समय – 12 बजे दिन।

तपन के घर आते-आते इकबाल को बारह बज जाता है। इकबाल आता देख तपन लोटा-पानी लिये हाजिर हो जाता है।

तपन – बड़ी देर लगा दी इकबाल। लो, जल्दी हाथ-पाँव धो लो। श्रीमती के हाथों बना गाजर का हलुआ ठंढा हुआ जा रहा है। जल्दी खा लो...।

इकबाल – ...लेकिन बड़ा बाबू। मैं जरा बाहर जाके...।

तपन – ओ, अच्छा! बारह का नमाज अदा करना है न? ए जी सुनती हो...? ओ....ओ....ओ.....!

सुलोचना – आई...ई...ई...ई...।

तपन – पूजा घर का दरवाजा खोल देना। इकबाल भाई नमाज अदा करेंगे...।

इकबाल – लेकिन... लेकिन... बड़ा बाबू, यहाँ कहाँ?

तपन – तुम बाहर मत जाना। यहीं नमाज अदा करो। हमारे देवताओं को गुस्सा नहीं आयेगा।

(पटाक्षेप)

जाए।

शकीना - हिन्दुस्तान के मुसलमान साम्प्रदायिक एकता का ठेका लिये हुए हैं। गुजरात में लाख गोधरा काण्ड गुजर जाए और हिन्दू-मुसलमान एकता जिंदाबाद के नारों से आसमान फट-फट जाए।

हमीद - अरे नहीं, इकबाल की माँ, नहीं। तुम बात को समझने की कोशिश तो करो। तुम जरा कश्मीर की तरफ सिर उठाकर देखो, पाकिस्तान की तरफ देखो। वहाँ हमने कितनी ईमानदारी दिखायी है?उधार का सूद बड़ा खौफनाक होता है, शकीना बड़ा खौफनाक! और हाँ, यह कभी मत भूलना कि अल्लाह का यह शैतान सूअर केवल प्रेम को ही जड़ से खोदता है। तुम पहले हिन्दुस्तानी हो, तब मुसलमान। इकबाल बेटा अ...अ.. अ...।

इकबाल - आया पिताजी।

हमीद - बेटा। आज तुमने धर्म-संसार के उस कोने पर ला खड़ा किया है जहाँ हमेशा दिन में तपती रेत पर जलती हवाएँ चलती हैं और रात के समय अमावस्या की काली रात छाई रहती है।

शकीना - ... तो कृष्ण मुरारी से एक ढिबरी क्यों नहीं माँग लेते?

इकबाल - चुप भी रहो माँ। आखिर हम हिन्दुस्तान का नमक खाते है कि नहीं? मैंने बड़ा बाबू के पूजा घर में नमाज अदा की है। क्या पूजा घर के कपाट मेरे लिये यों ही खुल गये? काश! हम भी उन्हें अल्लाह के दरबार में अपने मुरारी से बात करवा पाते।

हमीद - तुमने पत्ते की बात की है, बेटा। कोई भी धर्म आपस में वैर नहीं सिखाता। हम अनुयायी उसे वैर करना सिखाते हैं। लाओ, इस प्रेम बीज से अपनी बंजर धरती को आबाद करने की कोशिश कर लूँ। (प्रसाद ग्रहण करता है)

समाप्त

❖❖❖

इकबाल – हाँ, बड़ा बाबू! मेरे सीने में मीठा दर्द हो उठा है।

दोनों – बात समझ में नहीं आयी। तुम क्या कहना चाहते हो इकबाल?कुछ असुविधा तो नहीं हुई?

इकबाल – नहीं। कोई असुविधा नहीं। दर्द में मिठास इसलिये कि आज आप दोनों ने अपने ईश्वर के घर साम्प्रदायिक सद्भावना का लाजवाब प्रसाद भेंट किया। दर्द में जलन इसलिये है कि इस ऋण को चुका पाऊँगा या नहीं। मैं भी आप दोनों को न्योता देकर अपने अल्लाह के घर ला पाऊँगा या नहीं?

सुलोचना – ओ हो। यह कोई बड़ी बात नहीं। तुम्हारे अल्लाह को यह सब पसंद न हो तो रास्ते के नाले में फेंक देना। जल-जंतु खा लेंगे।

इकबाल – नमस्कार!

दोनों – नमस्कार।

(पटाक्षेप)

तृतीय दृश्य

स्थान – हमीद का घर।

समय – 2 बजे दिन।

इकबाल अपने घर पहुँचता है। माँ-बाप को सारी घटना बताता है।

(इकबाल का प्रवेश)

हमीद – (फटा कपड़ा रफू करता है) बेटा आ गया मेहमाननवाजी से?

इकबाल – हाँ पिता जी, आ गया। साथ में यह भी लेते आया।

हमीद – क्या?

इकबाल – प्रसाद।

शकीना – जिस बात की आशंका थी, आखिर वही हुआ। तुम ही खाओ प्रसाद।

हमीद – शकीना इतना रूखापन क्यों? तपन बाबू के हाथ कोई सूअर के जबड़े तो नहीं जिसके हाथों दिया गया अन्नकूट इन्कार किया

खोमा कान रेदो लागावे में। आईंग हुड़िंग माई कुड़ींग नुनु लीया।

कंजीलाल – अच्छा, जू।

राधा – (बिउर रूड़ान जान चि गुगुलाए राचाः जादा) अच्छा जी मियाद काजि उदुबेमें।

कंजीलाल – (हुक्काए ओमाई तान लोः) ने नेया दो ताम। हाँ मार काजि में।

राधा – जौगे हेनसाः चानाः मेन्तेम लेला कातेया?

कंजीलाल – हिनिः लेली में (ती डांड़ोः ते किड़की पारोमेः चुन्डुलाई ताना)

राधा – इतुआ नाईंग। इनिः रोज एनताः एपेलांगएन ताना। होड़ो इनिः दुखिया को मेताईया। मेन्दो इनिः लो आमाः चान मोतोलोब?

कंजीलाल – ओह बापुड़ीः ...।

राधा – एँ (चुटी रेगे) ओड़ोः मियाद जागार!

कंजीलाल – मियाद जागार चानाः, हजार जागारेम।

राधा – आईंग काईंग बुझाव ताना चि...।

कंजीलाल – हे...हे... मार काजि में...चि...।

राधा – शहर रे आबु लेल उरूमा कान होड़ो को। रोज लाखों राः बाराकाईती मेनागा। चांदी राः थाड़ी रेम जोम ताना। होटोः रे मोतीराः मालाम माला कादा। इमिन रेवो एन कोएँ चेतान रे निमिन दाया-माया चिलका ते?

कंजीलाल – हे। सारते गे आबु के जेतान चीज राः घाटी-बाड़ी बानोगा। इमिन रेवो आईंग के इनिः रे दाया-माया मेनागा। आईंग वोगे काईंग काजि दाड़ि चि नेका चिलका ते।

राधा – खूब बुगिन! सानांग रेदोम आमो इनिः लोःगे...। आईंग सेनोः ताना।

(दापाल कोटोंग)

3. पुराःगे सुकुआन होड़ो

('महुआ का फूल' कानी जुम्बुलीयाते)

इनुँग तान को

कोड़ा तान को

1. कंजिलाल देवघरिया - शहर रेन मारांग बेपारी
2. दुखिया - शहर रेन कोए
3. बादरी - अकिंरिंग नाला निः
4. प्रमोद - होटेल रेन दासी कोड़ा
5. एटाः एटाः को - जामा कान होड़ो को

कुड़ी तान को

1. राधा - कंजि लालाः कुड़ी ते।
2. एटाः एटाः को - जमा-जमा होड़ो को।

साड़ा-1

लेपेल साड़ा-1

ठाँयाद - कजिलालाः बंगला।

सोमाय - 8 बजे सेताः।

सेठ कंजीलाल आएयाः बंगलो रे चांदी राः हुक्काए गुड़गुड़ाओ जादा। होटोः रे गोनोंगआन मोती मालाए माला कादा। जानाव लेका गे किड़कीयाते ओकोए मियाद होड़ो केः लेल गिड़ि ताना।

(चा लोः राधा बोलो ताना)

राधा - ने चा। तिसिंग दो बेंगड़ा राः भाजा बाईया काना। चा रे चीनी

होनोर बाड़ा ताना कोई हिसाब मेनाः? आयार ते सेने बिंग।

(दापाल कोटोंग)

लेपेल साड़ा – 4

ठाँव – दुकु हार मुंदिल

सोमाए – 8 बजे सेताः।

तिसिंग शनिचार राः दिन ताना। अठाउरी बारी रेन दुकुतान होड़ो आर पाप ते पेरेया कान होड़ो को बा-सिरनी साबा काद जालांग तेको तिंगुआ काना। राजभोग मेठाई लोः राधाव गे होड़ोको लोःए तिंगुआ काना। हुड़िग पारका रे दुखिया कोएँवोए तिंगुआ काना। इनिः लेल जाःई लोः कंजिलालः जी अकाल-बकाल ताना।

कंजीलाल – राधा!

राधा – चानाः?

कंजीलाल – हिनिः लेली में (कोएँ साःए चुन्डुलाई ताना)

राधा – दुखिया तानिः। काम लेल जाःईया चिमिन माजा तेः तिगुआ काना?

कंजीलाल – तोबे आबुगे चिलका तेबु बालाय ताना?

राधा – हुड़िंग लेकान काजि मेनाः।

कंजीलाल – एना काजि ओकोआ?

राधा – यदि आमाः आबुआः ने दुकुहारि रे विश्वास बानोः रेदो आमो एन कोएं लोः गे ताईन में।

कंजीलाल – आम जी-जीबोन राः काजि चानाःम इतुआना राधा?

राधा – आर आम धोरोम-कोराम राः चिमिउंग जागारेम इतुआना? चानाः आमाः दुख हारि रे विश्वास बानोः?

कंजीलाल – आम के सोंकोटो चाई चि सिम काटा?

राधा – (आका दंदा गिड़िओः तानाए) एते होड़ो चिलकाम जागार जादा? आईः काई बुझावोः ताना।

लेपेल साड़ा-2

ठाँव - सिदा ताः गे।

सोमाय - हुड़िंग खोन तायोम ते।

कंजीलाल उड्डुः रेःठोआ काना। मोने मोने रेगेः बुडुंग-बुडुंग जादा।

कंजीलाल - कुड़ी ताईंग ठीक गेदोए काजि लाः। आईंग ने शहर रेन मारांग बेपारींग लेकाओ ताना। सारते गे रोज लाखों राः बाराकाईती मेनाः आईयाः। डनलप टायर रे हिस्सा मेनाः। गोटा मुली दोकान गे पेरेया काना, आईंयाः। होरा तुड़ाम कोरे 'फाइब स्टार' होटेल मेनाः। मारांग-मारांग मोलान काजिंग काजि जादा। लन्दन-शिकागो कोरो बेपारी ठाँव को मेनाः। ओह काली टैगोर संडका आतोम रे तिंगुआ कान ने कोठी रे चानाः चानाः बानोः? गाड़ी, सादोम दासी-धंगड़ा, सेता-पूसी...। सोबेनिः मेनाः कोआ। हाय भोगोमान दुकु हार निः जापाः रे चियाः मेन्तेम हापेया काना। उदुबाईंग में ने दुखिया कोएँ ओको का सुकुआई तान होड़ो चि इनियाः सोवान-सिंड़िः आईंगआः झाका माका चादर रे छापा काना?

(दापाल कोटोंग)

लेपेल साड़ा - 3

ठाँव - साकिड़ि दुबी रे।

सोमाए - 1 बजे सेताः।

पुरना केचाः लिजाः रापुद कारपाए तुसिंग कान चि साकिड़ि दुबिः होटाः ताना। जुटा कालुः कोए चाटेः बेड़ा ताना।

सेन होरा होड़ो-1 - लेली पे तो हेन होड़ो, बापुड़ि...।

सेन होरा होड़ो-2 - ओहो, नि दो हातुआ तेः निर आदा कानाः लेका आटकारोः ताना।

सेन होरा होड़ो-3 - अरे का। अटकारोः ताना आबेन ने शहर रे नावा-नावा बेन हिजुआ काना। नेका नेका चिमिन कोंका बालु को ने शहर रेको

साड़ा-2

लेपेल साड़ा-1

ठाँव - चातोम दोकान रे।

सोमाए - 7 बजे आईब साः।

कंजीलाल आयाः चातोम राः दोकान रे दुबा काना। जाड़ाम-जाड़ाम दाः गामा ताना। संडका रे होड़ो को सिगिल-बिगिल बेड़ान ताना। ओकोए दो ओको कोआः दोकान रेगेः निर बोलो ताना। ओकोए दो चातोम के कुटिद जादा। ओकोए दो बोरा रेगेः गुंगुन ताना। मेन्दो दुखिया कोएँ लुम तान लुम तान गेः सेना कादा। इनिः लेल केयाते कंजीलालाः जी रे दया हिजुः जाना आरेः काकला कियाः।

कंजीलाल - एई दुखिया!

दुखिया - (इनिः हेता किः चिः सेन फारोम जादा)

कंजीलाल - एई दुखिया कोते लुम-लुमेम सेनोः ताना?

दुखिया - चानाःम काकला जाईआ? आम ओकोए तानिः? साड़िमा चेतान रिनिः दो?

कंजीलाल - हे इनिः गे। आम कोते लुम-लुम...?

दुखिया - आईंग एना तेओ चेतान साड़िमा रिनिः। ओतेया ते चेतान। ओते आईः ओड़ाः। रिम्बिल आईः साड़िमा। ओड़ाः गे जोजोरो रेदो कोतेईंग सेनोगा?

कंजीलाल - ए, बदरी ई...ई...ई...

बदरी - जी हुजूर।

कंजीलाल - हिनिः के मियाद नावा चातोम इदतुकाई में।

बदरी - हे मार (चातोमेः इदियाई ताना)

दुखिया - (ती दोंदो केया ते चातोम काए सासाब ताना)

कंजीलाल - (लेल केयाते) ओह! आम दो सारते गे आईंः सिमकाटा गे तान में। डाली राः दु पैसा आर आमाः दोंदो कान बारिया ती जामा उपुनिया सिमकाटा आबुंग राः सोमाएम ओमाईः। आमाः ने

कंजीलाल - दुखियाः सोंगकोटो बानोः सिम काटा राः चिकान जारूडु? राधे!

राधा - ओहो, दुखिया... दुखिया... दुखिया...। आईं आमाः काजि आईउम तेईंग आसादी चाबा जाना। मार काजि में।

कंजीलाल - का। तिसिंग सोबेन बा-मेठाई को दुखियाः काटा सुबा रे दो तुका में। चियाः चि आलंग असली सुकु नानाम राः साबाईसी लांग नामे का।

राधा - आमाः काजि गे मार। आईंग नाःगे एन रेंगेः पोटाः बालु भोगोमान ताः ते आमाः नागेन असली सुकुईंग हाउराउ जादा।

(दापाल कोटोंग)

लेपेल साड़ा - 5

ठाँव - दुखिया ताः।

सोमाए - हुड़िग खोन तायोम ते।

बोंगा चीज को इदि जाद लोः राधा दुखिया कोएँ ताःए सेनोः ताना।

राधा - ने कोएँ... आर आईंग के असली सुकु नामे राः होरा उदुबाईंग में। हाँ, नेया ठोर जोम में चि नकली सुकु होरा आलोम उदुबेया। का रेदो ऊर गेईंग पोटाः मा।

कोएँ - (मारांग-मारांग मेद ने लुन्डु-लुन्डु गेः लेल जाःई। आर बारान ती ते बोंगा चीज कोए चापु केद चि सोबेन के ओम रूड़ाई ताना)

राधा - (खींसगे) एई मुआ सुकु नाम होरा काम उदुबेया?

कोएँ - (दु पैसा एन लोःगे डाली रेः दो केदा)

राधा - (चुटि रेगे) हुँ, डाली रे दुपैसाम हुरंग तादा! आले के रेगेः रबंग होड़ो कोम बाई ताः लेया का? नेया दो नकली सुकु नानाम राः होरा तानाः। हों, आईंआः अरबपति कोड़ा के काईं उदुबाई जान रेदो काजि में। कोएँ का रेदो।

(दापाल कोटोंग)

कंजीलाल – इनिः काए तिंगु पेड़े-पेड़ेया काना। नियाः जिनीद गे नेका मेनाः। अच्छा, एन हुलांग राः दू पैसा ते चानाःम किरिंग केदा?

राधा – (मोचा कोए बाई बाड़ा जादा) रेंगेः। टुंगुल टुंगुल रेगेः। सल्ला डाली रे दू पैसा हुरांग केयाते चानाःए देखाब जादा, आबु रेंगेः कंगाल को?

कंजीलाल – का राधे। का। आबुआः हजार सोंकोटो कोराः चंडागआ ते बारिया चंडाग खोम जाना।

राधा – तोबे आमाः चातोम कायाः जाना। एनाओ खूब मारंगएः कामि केदा?

कंजीलाल – हे। ओड़ोः मिद चंडाग लातार।

राधा – आम चानाः काजिम सानांग ताना?

कंजीलाल – (चा काप टेबुल रेः दो जादा) आईंग काजिंग सानांग ताना चि आईंग चांदी राः थाड़ी रे मान्डि जोम तान रेओ इनिः लोः साते ते साकिडिंग हालांगया।

राधा – बेस काजि। ओड़ोः चानाःम चिकाया?

कंजीलाल – मोती राः माला कान रेओ इनिः लोः कालुःईंग चाटेःया।

राधा – वाह रे। वाह! अरबपति वाह! ओड़ोः चानाःम चिकाया?

कंजीलाल – बा राः कान्ता चेतान रे गितिः तान रेओ इनिः लोः चोकाःईंग चेपेःया।

राधा – वाह ताईंग कोड़ा, वाह! मेन्दो नेका चिलका ते?

कंजीलाल – चियाः चि साकिड़ि हालांग रे, कालुः चाटेः रे, चोकाः चेपेः रे पेड़ेः लागावोः ताना। जबकि चाँदीराः थाड़ीवो ओकोए एटाः निः दोन्दो जादा। मोती मालावो गे जाँएँ एटाः निः गुतु जादा। बा राः कान्ताव गे जाँए एटाः निः तुकुई जादा...। राधे, पेड़ेः गालाव रे सुकु नामोगा। पेड़ेः बनचाव रे दुकु।

राधा – ... तोबे सारते गे। आम मियाद अरबपति दुकु तान होड़ो तान में? होड़ो को पेड़ेः बनचावोन नागेन को दुकु ताना। आम पेड़ेः

काटा चन्डांग दो होएवो दुदुगार रेवो का टेकादोवा, एनकाईः उडुः जादा।

(दापाल कोटोंग)

लेपेल साड़ा-2

ठाँव - फाईब स्टार होटेल।

सोमाए - 12 बजे सिंगि।

कंजीलाल आएः फाईबस्टार होटेल राः किड़की जपाः रे दुबा काना। किड़कीया ते दुखियाए लेलोः ताना। दुखिया के लेल कीयाते कंजीलालाः होटोःआते मंडि का हाड़ागुः ताना। आर इनिः बेयारा के काकला जाईया।

कंजीलाल - बेयरे!

प्रमोद बेयरा - हे गोमके। चानाः ओड़ोः मान्डि चाई?

कंजीलाल - मान्डि रेन हुमु ओड़ोः मिद थाड़ी आवाईंग में।

बेयरा - ओकोए नागेन मालिक?

कंजीलाल - हिनिः। हिनिः नागेन।

बेयरा - ओह नो। दैट ईज बेगर, सर।

कंजीलाल - हुँ, बेगर (बोः रेः ती केदा)

(दापाल कोटोंग)

लेपेल साड़ा-3

ठाँव - कंजीलालः कोठा।

सोमाए - सेताः चाय नू तान रे।

राधा और कंजीलाल जानाव लेका गेकिंग जापागार ताना।

राधा - (चा ओमाई तान लोः) हिनिः लेली में। आमाः दुखिया कोएँ तिंगु पेड़े-पेड़ेया काना।

हिन्दी अनुवाद

3. सबसे सुखी आदमी

('महुआ का फूल' कहानी संग्रह से)

पात्र-परिचय

पुरुष पात्र

1. कंजीलाल देवघरिया - शहर का नामी व्यापारी।
2. दुखिया - शहर का भिखारी।
3. बदरी - व्यापारी।
4. प्रमोद - बैरा।
5. अन्य - भीड़।

स्त्री पात्र

1. राधा - कंजीलाल की पत्नी।
2. अन्य - भीड़।

अंक-1

प्रथम दृश्य

स्थान - कंजीलाल का बंगला।

समय - आठ बजे सवेरे।

सेठ कंजीलाल अपने बंगले में चाँदी का हुक्का गुड़गुड़ाता है। गले में मोती का बेशकीमती हार पहने हुए है। सामने खुली खिड़की से रोज की तरह किसी को टुकुर-टुकुर देखता है।

(राधा का चाय नाश्ता के साथ प्रवेश)

राधा - लो जी। आज बैगन की सब्जी बनी है। चाय में चीनी कम हो तो डाल लेना। मैं जरा मुन्नी को दूध पिलाती हूँ।

कंजीलाल - अच्छा, जाओ।

राधा - (पलटकर घूँघट खींचते हुए) अच्छा जी, एक बात बताओ।

खरचा नागेनेम दुकु ताना?

कंजीलाल - हे राधे। हे। ठीक गेम काजि लाः। गोटा दिसुम चाहे इनिः कोएँ, कंगाल को मेताई। मेन्दो आईं इनिः गोटा दिसुम रेन पुराः उतार सुकु-रसिका तान होड़ोईंग हिसाब ताःईया। आलांगआः सिम बोंगा इनिः के पुराः पुराः दिनेः जोगावा कईका।

राधा - ओह! क्षेमा ताईंग में गातिंग। नाः जाकेद दो ओको हेन्दे लारि रेईंग उकु लेना। नाः दो लारि ओटांग गिड़िवोः ताना। आईंआः सिम बोंगा आम के पुराः पुराः दिनेः जीद मेका आर दुखिया कोएँ केवो सोबेन सोकोटो कोआतेः पारोमी का।

(दापाल कोटोंग)

टुन्डु

❖❖❖

फाइवस्टार होटल है। नीलामी दीर्घा से ऊँची बोली बोलता हूँ। लंदन, शिकागो में व्यापारिक संपर्क है। आह! काली टैगोर सड़क के किनारे खड़ा इस आलीशान महल में क्या-क्या नहीं है - गाड़ी, घोड़ा, नौकर-चाकर, कुत्ते बिल्ली... सबकुछ है। हाय दुःखहारी संकटमोचन पास खड़ा तू चुप क्यों है? बता। बता कौन है वो घृणा का कुपात्र दुखिया जिसका बदरंग चित्र मेरे मखमली चादर पर शोभायमान है? बता...।

(पटाक्षेप)

तृतीय दृश्य

स्थान - कूड़ा का ढेर।

समय - सवेरे आठ बजे।

फटा चिथड़ा, टूटे चप्पल पहने कूड़े के ढेर में दुखिया कूड़ा चुनता है। जूठे पत्तल चाटता है।

राहगीर-1 - देखो तो उस आदमी को, बेचारा...।

राहगीर-2 - ओहो, यह तो गाँव से भटककर आया लगता है।

राहगीर-3 - अरे नहीं। लगता है तुम दोनों इस शहर से परिचित नहीं हो। यहाँ ऐसे कितने पागल शहर में घूमते हैं, कोई ठिकाना नहीं। अपना रास्ता नापो।

(पटाक्षेप)

चतुर्थ दृश्य

स्थान - संकटमोचन मंदिर।

समय - सवेरे 8 बजे।

आज शनिवार का दिन है। सप्ताह भर के पापकर्मी एवं संकटग्रस्त लोगों की भीड़ मंदिर के सामने चढ़ावा लिये कतारबद्ध खड़ी है। राजभोग लिये राधा भी पति के साथ खड़ी है। दूर हट कर दुखिया भिखारी भी मग्न खड़ा है। उसे देख

कंजीलाल - हाँ, लो इसे ठिकाने पर रख दो। (हुक्का को थमाते हुए) बोलो।

राधा - रोज उधर टुकुर-टुकुर क्यों देखा करते हो?

कंजीलाल - वो... उधर देखो (ऊँगली से खिड़की से बाहर संकेत)

राधा - जानती हूँ। वह रोज वहाँ धूप सेंकता है। लोग उसे दुखिया भिखारी कहकर पुकारते हैं। पर इससे तुम्हें क्या?

कंजीलाल - बेचारा...।

राधा - हूँ... (तुनक कर) एक बात और!

कंजीलाल - एक बात क्या हजार बात पूछो।

राधा - मैं समझ रही थी कि...

कंजीलाल - हाँ हाँ बोलो ...

राधा - शहर में हमारा सम्भ्रांत परिवार है। रोजाना लाखों की आमदनी है। चांदी की थाली में खाते हो। गले पर मोती की माला लटकती है। फिर भी उस भिखारी से इतना लगाव क्यों?

कंजीलाल - हाँ। सच में हमें कोई चीज की कमी नहीं। फिर भी उसके प्रति यह मेरी हमदर्दी है। मैं भी इसे समझ नहीं पाता। पता नहीं ऐसा क्यों है।

राधा - बहुत खूब। चाहो तो तुम भी उसके साथ... । मैं चली।

(पटाक्षेप)

द्वितीय दृश्य

स्थान - पूर्ववत्।

समय - कुछ समय बाद।

कंजीलाल दुविधा में पड़ा है। वह मन ही मन बड़बड़ाता है।

कंजीलाल - पत्नी ने ठीक ही तो कहा था। मैं इस शहर में एक सफल व्यापारी में गिना जाता हूँ। सच! रोजाना लाखों की आमदनी है मेरी। डनलप के गद्दे पर सोता हूँ। अनेक दुकानें हैं। चौराहे पर

पंचम दृश्य

स्थान - भिखारी के पास खड़े।

समय - कुछ समय बाद।

चढ़ावा की डलिया लिये राधा दुखिया भिखारी के पास जाती है।

राधा - लो जी... और मुझे असली सुख प्राप्ति का रास्ता सुझाना। याद रख, नकली सुख का रास्ता मत दिखाना वरना तेरी चमड़ी उधेड़ लूँगी, हाँ।

भिखारी - (बड़ी-बड़ी आँखों से उसे निःशब्द घूरता है और दोनों हथेलियों से डलिया में तर्पण देकर प्रसाद लौटाता है)

राधा - (क्रोधित होकर) ऐ मुआ, सुख का रास्ता नहीं बतलायेगा?

भिखारी - (तब दो पैसा निकालकर चुपचाप डलिया में डाल देता है।)

राधा - (खिन्न होकर) हाँ, डलिया में दो पैसा डालकर हमको गरीब बनाता है रे? यह तो नकली सुख पाने का रास्ता है। ठहरो, मेरे अरबपति पति को जाकर नहीं बताया तो जानो, कलमुँहा भिखारी कहीं का।

(पटाक्षेप)

कंजीलाल का मन व्यथित होता है।

कंजीलाल – राधा!

राधा – क्या?

कंजीलाल – उधर देखो (भिखारी की तरफ संकेत)

राधा – दुखिया। देखते नहीं कितने आराम से खड़ा है।

कंजीलाल – तो हम ही इतने बेचैन क्यों हैं?

राधा – सीधी सी बात है।

कंजीलाल – वह क्या?

राधा – अगर हमारे संकटमोचन पर तुम्हारा भरोसा नहीं तो तुम भी दुखिया के साथ जा मिलो।

कंजीलाल – तुम मन-संसार की बातें क्या जानो, राधा!

राधा – और तुम धर्म कर्म की बातें कितनी जानते हो? क्या संकटमोचन पर तुम्हारा श्रद्धा नहीं?

कंजीलाल – तुम्हें सुख चाहिये या संकट?

राधा – (अकचका जाती है) अजी कैसी बातें करते हो? मेरे गले नहीं उतरती।

कंजीलाल – दुखिया को संकट ही नहीं तो संकटमोचन किस काम का?राधे!

राधा – ओहो, दुखिया... दुखिया... दुखिया...। मेरा जी भर गया ऐसी बातें सुनकर। कहो।

कंजीलाल – नहीं। आज पूरे का पूरा राजभोग दुखिया के चरणों में अर्पित कर आओ ताकि हमें असली सुख प्राप्ति का आशीर्वाद मिले।

राधा – तुम्हारी मर्जी। मैं अभी उस फटेहाल, पागल देवता से तुम्हारे लिए असली सुख बटोर कर लाती हूँ।

(पटाक्षेप)

द्वितीय दृश्य

स्थान - फाईब स्टार होटल।

समय - 12 बजे दिन।

कंजीलाल अपने फाईवस्टार होटल की खिड़की के पास बैठा है। खिड़की से दुखिया दिखाई देता है। दुखिया को देख कंजीलाल का कौर गले नहीं उतरता है। वह बैयरे को पुकारता है।

कंजीलाल - प्रमोद!

प्रमोद - जी मालिक! और राईस चाहिए?

कंजीलाल - राईस के बच्चे! एक प्लेट और लाओ।

प्रमोद - किसके लिये सर?

कंजीलाल - वो, उसे।

प्रमोद - ओह नो। दैट ईज बेगर, सर।

कंजीलाल - हूँ, बेगर (माथे पर हाथ रखता है)

(पटाक्षेप)

तृतीय दृश्य

स्थान - कंजीलाल का बंगला।

समय - सवेरे चाय पर।

राधा और कंजीलाल में रोज की तरह बहस-मुबाहस होती है।

राधा - (चाय देते हुए) वह देखो, तुम्हारा दुखिया भिखारी फिर खड़ा मक्खी मार रहा है।

कंजीलाल - वह मक्खी नहीं मार रहा है। अपनी जिंदगी जी रहा है। अच्छा उस दिन उसके दिये दो पैसे से क्या खरीदा?

राधा - (मुँह बनाते हुए) गरीबी। घोर गरीबी। साल्ला डलिया में दो पैसा डालकर क्या जताना चाहता है, हम कंगाल हैं?

अंक-2

प्रथम दृश्य

स्थान - छाते की दुकान।

समय - 7 बजे सायं।

कंजीलाल अपनी छाते की दुकान पर बैठा है। रिमझिम रिमझिम बारिश हो रही है। सड़क पर लोग-बाग सरकते जा रहे हैं। कोई किसी की दुकान में जा छिपता है, कोई छाता-तिरपाल लिये चला जा रहा है। दुखिया भींगे-भींगे सड़क पर चला जा रहा है। कंजीलाल का मन उसे देख पसीज गया और उसे पुकारने लगा।

कंजीलाल - ऐ दुखिया!

दुखिया - (उसे घूरता चला जा रहा है।)

कंजीलाल - ऐ, भींगते हुए कहाँ जा रहा है?

दुखिया - मतलब? तुम कौन ऊपरी छतवाला है?

कंजीलाल - हाँ, वही। और तुम भींगा-भींगा?

दुखिया - मैं उससे भी ऊपर छतवाला हूँ। धरती से ऊपर। धरती मेरा घर। आकाश मेरी छत। घर ही चूने लगे तो मैं जाऊँ कहाँ?

कंजीलाल - ठहरो! बदरी ई...ई...ई...

बदरी - जी सर।

कंजीलाल - उसे एक नया छाता पहुँचा दो।

बदरी - जी सर! (छाता निकालकर पहुँचाता है)

दुखिया - (हाथ उठाकर छाता लेने से इन्कार करता है)

कंजीलाल - (दृश्य देखकर) ओह! तुम तो सच में मेरा संकटमोचन हो। डलिया का दो पैसा और तुम्हारे उठे दो हाथ। कुल जमा चार संकट की सीढ़ी से तो मुझे उतार दिया। तुम्हारे ये साहसी कदम आँधी-तूफान भी नहीं रोकेंगी, इसमें मुझे आश्चर्य नहीं।

(पटाक्षेप)

4. कॉलेज गेट

कोड़ा तान को

1. धानु - हिरूई-दिरूई होड़ो
2. भोला - हिरूई-दिरूई होड़ो
3. महमूद - हिरूई-दिरूई होड़ो
4. हरिहर - हिरूई-दिरूई होड़ो
5. घनश्याम - पढ़ाव होन कोरेन गोमके
6. हीरालाल - आपु होड़ो
7. केरकेट्टा - आपु होड़ो
8. सुदामा - तोरो कोड़ा
9. कृष्ण - सेंणा होड़ो
10. माईनान ईई कॉमिंग्स- विदेसी पुण्डि होड़ो
11. अगस्त्य - विदेसी पुण्डि होड़ो
12. लोपामुद्रा - विदेसी पुण्डि होड़ो
13. रफीक - दोकान चालाव निः
14. धानु - सुनीताः दादा ते
15. महमूद - धानुआः सोंगे
16 धर्मेन्द्र - चुन्रीआः दादा ते
17. राठौर - धमेन्द्रआः सोंगे
18. कमल - धमेन्द्रआः सोंगे

कुड़ी तान को

1. प्यारी - कॉलेज दंगिड़ि
2. रीता - सोंगे
3. रूपा - सोंगे
4. चंदा - सोंगे

कंजीलाल – नहीं राधे। नहीं। हमारे हजार संकट के कदमों से हमें दो कदम नीचे फिसला दिया है।

राधा – तो तुम्हारी छाता न लेकर भी तुम पर बड़ा एहसास जताया है?

कंजीलाल – हाँ। एक कदम नीचे और!

राधा – तुम कहना क्या चाहते हो?

कंजीलाल – (चाय का ट्रे टेबल पर रखते हुए) मैं कहना चाहता हूँ कि चांदी की थाली में खाते हुए भी उसके साथ कूड़ा उलीचूँगा।

राधा – अच्छी बात! और क्या करोगे?

कंजीलाल – मोतियोंका माला पहने भी पत्तल चाटूँगा।

राधा – वाह! वाह रे! अरबपति वाह! और क्या करोगे?

कंजीलाल – फूलों के सेज पर सोते हुए भी छिलके चूसूँगा।

राधा – वाह नाथ! वाह! पर ऐसा क्यों?

कंजीलाल – क्योंकि कूड़ा चुनने में, पत्तल चाटने में, छिलके चूसने में श्रम लगता है जबकि चाँदी की थाली भी कोई और धोता है, फूलों का सेज भी कोई और बिछाती है...। राधे, श्रम में सुख है, बेश्रम में दुःख।

राधा – ... तो तुम सचमुच एक अरबपति दुःखी इन्सान हो, इन्सान श्रम से बचने के लिए परेशान है। तुम श्रम के लिये परेशान हो?

कंजीलाल – हाँ राधे, हाँ। दुनिया चाहे उसे भिखारी, पागल कंगाल जो चाहे कह ले। पर मैं उसे दुनिया का सबसे सुखी इन्सान मानता हूँ। हमारा संकटमोचन उसे लम्बी उम्र दे।

राधा – ओह! क्षमा कर दें नाथ। मैं अबतक किसी अदृश्य संकट के बादलों से घिरी हुई थी। अब बादल छँटने लगे हैं। मेरा संकटमोचन तुम्हें भी लम्बी उम्र दे और उस दुखिया को भी हर बाधा को पार करे।

(समाप्त)

❖❖❖

हरिहर – होड़ोमो ताम जाड़ा दारू लस्सा लंदिड़ि...।

रीता – अरे निकु दो पढ़ाव होन कोचि का तान को, हाजिरी चानाः खूब कटावगा? दोला बोलो मे। हापेन रेगे ठीकवोःगा।

(बारान किन बोलो ताना)

(दापाल कोटोंग)

लेपेल साड़ा-2

ठाँव – कॉलेज वारि।

सोमाय – 12.30 बजे सिंगि।

बोरो-सोरो कोलोः आकिंग-आकिंग जापागार ताना। भीतर साः ते अकिंगाः सोंगे रूपा हिजुः ताना। आर को जपागार ताना।

रूपा – हाय चंदा, प्यारी!

बारानकिंग – हाय रूपा। क्लास चाबा जाना?

रूपा – का गे। आबुआः सर हुडिंग कामि लोः प्रिंसिपलः कुठुरी तेः सेना काना। काजि जादा को चि नाः नाः गे आबुआः कॉलेज रे रेः राचाः होबा काना।

चम्पा – (जापाः रिनिः) चानाः? रेः राचाः! अरे नेकन काजि को होकाए पे। नेरे दो नेया काजि कोदो जानाव राः को। मोचो कोए हान्ते लेले पे। कुड़ि होन कोआः कोलेज रे कोड़ा होन गेको पेरेया काना। नागे सिपाई कोम लेल को। नागे होरो तान दरवानाः फिकर मेनाः। आईंग दोईंग मेन जादा चि नाः आबु गे नेया कोराः नागेनो तेयारेन राः सोमाय तियूः जाना। हें...हें...हें...।

चंदा – चानाः तेयारेन? मोतोलोब?

चम्पा – मोतोलोब सुपिद रे ब्लेड। बुझाव जानाम? साल्ला मियाद लेका बदमाश कोड़ा सिरमा दिशुम बु कुल ली रेदो को ठोरेया, हाँ।

प्यारी – चानाः, हाद गोए! कोड़ा के हाद गोए? एनाव इपाए इ इपाए रे!

5. आनन्दी - चाबाजान दगिड़ि
6. माईनान कौल - कॉलेज रेन गोमके याईन
7. माईनान अहिल्या -कुड़ि पुलिस
8. मालती - कॉलेज दंगिड़ि,
9. चुनरी - धर्मेन्द्राः बोकोते
10. सुनीता - धानुआः बोकोते

साड़ा-1

लेपेल साड़ा-1

ठाँव - कॉलेज राः राचा।

सोमाय - 12 बजे सिंगि।

कॉलेज राः रचा रे कॉलेज दंगिड़ि को हिजुः सेनोः बेड़ा ताना। दंगड़ा को-को हिजुः सेनोः बेड़ा ताना। पहरा तान दंगड़ा हापे-हापेः तिगु काना। एन लोः दो उपुनिया दंगड़ा को बोलो ताना। आर मियाद सुगड़ लेकन कुड़ि होन को रेः-राचाः जाःईया आर हिरूई-दिरूई, जा-नाः गेको काजि जादा। मियाद निः आयाः दुपट्टा पैला गेः राचाः जाःईया।

धानु - (पैलाए राचाः जाःईया) एई एई हुरूम सुकु रासे, एई चाम्पा बा दंगिड़ि, हुड़िंग तिंगु कोः मेरे गतिंग...।

प्यारी - (खींस तेः लो ताना) कुला राचाः में कारे, नेताः रेवो आमाः निमिन साहस! आड़ाः एमेंआईञाः पैला। गोमकेयाईन लेल केम रेदो लेलेमे। सोबेन हाजिरी कटाव जानाःगे ठोरेमें।

भोला- अँ हाँ हाँ ने आमाः पैला साब जादिः आईञाः सोंगे खूब बोदोमाश तानिः। आईञ के ने लेकन बुगिन कामि एद्का काईञ मेता ताना। आईञः लुतुम भोला। भोला-भाला जी वाला। ए चम्पा दंगिड़ि मोचो कोए आईञ सः हेता-लंदा लेम रे गतिंग। एटागाः कोदो तायोम ते, हँ।

महमूद - अए लेल में, लेल में, हजार बारिंग लेल में, चिकाईयम?

कॉलेज बन्दोबस्ती आर आपे लेकान जबाव देही होड़ो को आपेयाः लिचुर काजि-कामि नागेन दरवान लेकान हुपुड़िंग होड़ो को दोष ओम ठीकीय चि? आपे ने जबावदेहीया ते देया साः कापे हेला दाड़ियाः।

कौल - हेला! तोबे होन को सेंणा-बाबाई राः भार दो गुरू-गोमके कोताःरे बारि गेचि मेनाः? आकोवाः एंगा-आपु कोवाः जेतान रे दायित्व बानोः?

हीरालाल - हे। गुरूआईनाः काजि ठीक गे। होन को सेंणा-आजोम दो एंगा-आपु कोआः एटेः कामि तानाः।

घनश्याम - का। कागे। यदि आमाः होन का गेः सोजेवाः तो बे चानाःम चिका दड़िया? ने लेकान सोमाय, हालत कोरे एंगा-आपु किंगाः सोना जागार, रूपा बँकड़ाँ कोराः दुलाड़ा बा ने जनुम-जाटा लेकान जाटा गे बा केः होरो जंगि दड़ियाः। चिलका चि गुलाब आर नागाफनी बा।

केरकेट्टा - हे। नेया काजि कोदो आईउमे लेकाः।

कौल - मेन्दो चिलका ते? आले बुझाव लेम।

घनश्याम - दंगड़ा कोआः जी लिंगि तान गाड़ा लेका मेनाः। मुलि तेम केसेदेरे दो आड़ी-ओते को सोबेने हाः-हंदिड़िया। दाः लोःम लिंगि इदिन रेदो दुरंग गेम आईउम इदि।

आदित्य - आमाः मोतोलोब चानाः। (खूब जरूड्डुआन गे) आम चानाः काजिम सानंग ताना?

घनश्याम - सिंगि दोईंग दाँड़ा में, निदा दोईंग कुमु में... हजार बारेईंग कुमु में... डंकु ना डापुर ना सेन तादाम लेसे-लेसे... ने काजि कोरे कोताः रे गलतीम साब जादा? चानाः बा, जानुमा ते जाँव काए आसराए ताना? चानाः जानुमोगे बाते जान आसराए बनोगा?

आदित्य - इम्पोसीबल! टोटाली इम्पोसीबल! बकवास होकाए में। आम समाज केम डुम्बुई जादा।

चम्पा - रेः-राचाः जबरजस्ती, गोए-गोपेए नेकान-नेकान एदकान कामि यदि ओकोए इपाए-इपाए मेनेया रेदो आबु के वो बदमाश बाईन रे चिकान टेकाद ताईयुगोः का? आपान बनचावन नागेनते आपान के अकिंरिंगेन दो मियाद होरा तानाः। अच्छा जोआर! ओड़ो बु नापामा।

(दापाल कोटोंग)

लेपेल साड़ा - 3

ठाँव - पोनचाईटी ओड़ाः।

सोमाए - 12 बजे सिंगि।

गोमकेयाईन पोनचाईट ओड़ाः रे रेः-राचाः को ले केयाते मियाद पोनचाईटी सेसेन ताना। पोनचाईटी रे सोबेन लेका पढ़ाव दंगड़ा दंगिड़ि, एंगा-आपु, गुरु-गुरुआईन, कुड़ी थाना रेन पुलिस लेकान को को दुबा काना।

कौल - आनन्दी लोः ते दुकुआन गोए-गोपोए होबा जान बाद आबुआः कॉलेज कोरे ओड़ोः नेकान शैतान को बोः को देंदेवोद जादा। होला मियाद आबुआः होन लोः ते नेकान हिरूई-दिरूई रेः राचाः होबा जाना। आयार रे नेकान सिड़िः बिड़िः काजि-कामि को आलो होबाव का एना मेन्ते नेया पोनचाईटी राः काना। आर आपे ताः ते नेया नागेन सेंणा-हिता आसेवोः ताना।

कुड़ीहोन - ...तोबे दो आनन्दीयाः गोनोए ले केयाते नाःजाकेद कॉलेज चानाः बुईदिः साब केदा? चानाः इनियाः मायोम इपाए गे लिंगि पाव जाना?

कौल - (कचरान गे) कॉलेज बितार बिना काजि कामि लोः कोड़ा होन को बोलो रे मना मेनाः। कॉलेज रे दरवान को नेया नागेन खूब जोर तेको काजिया काना। इमिन रेवो यदि नेकान काजि-कामि को होबाव रेदो दरवान कोगे को कुलिओः का।

घनश्याम - मेन्दो नेरे कोरे दो लिचुर कामि काजि कोगे लेल नामोः ताना।

कृष्ण – एई कोंका होन कारे चानाः चानाः को होड़ोकोम बक-बकाव जाः कोआ?

सुदामा – आईं कोंका होनेम मेताईंग ताना? काम इतुआना आईंग ओकोए तानिः?

कृष्ण – हे हे। काईं इतुआना आम ओकोए तानिः। उदुबाईंग में तो?

सुदामा – आईंग दो मियाद तोरो कोड़ा तानिः।

कृष्ण – एई तोरो कोड़ा? आम चिलकाम तोरो बेड़ाया?

सुदामा – आईंग दो जी कुकुरू रे उकुआ कान होड़ो कोईंग दाँड़ानाम दाड़िया कोआ। आम ओकोए तानिः?

कृष्ण – आईंगवो गे मियाद ओल-पढ़ाव गेयानी होड़ो तानिः।

सुदामा – आमाः काजि-कामि को चिलका? आमो चि ऊर पोटाः होड़ो?

कृष्ण – हे। एनका जाः मेन लेम।

सुदामा – ठीक-ठाक जागारे में हाले। एनका-नेका कागे। उलुई-पुलुई जागार को सोजे जागारे में। तोरो-मोरो को ओटाःन में। गेयानी होड़ो बाईन केयातेम दुब बेड़ा तानाचि जाँनाःम कामि-पाईंटि बेड़ा ताना?

कृष्ण – आईंग होड़ो कोआः जींग बदिली ताना।

सुदामा – एई...जी... ईम... बोरकोद!... आईंगः पीरिति गतिंग (ती ते ईम राः मुर्तुई बाई जादा)

कृष्ण – हे हे। एना गे, एनागे। ईम...।

सुदामा – एई! आम दो होड़ो होन का तान में। आम दो होड़ो माएवोम चेपेः मुआ बोंगा तान में। आम दो होड़ो ईमेम जोम केया आर काकारू जो राः ईमेम लगाव जाः कोआ। जू नेनाः ते निर में।

कृष्ण – कागे हाले का। आम आईंआः जागार काम बुझाव जाना। ईम दो एना गे। इनियाः मोने बारिंग बदिली जादा।

सुदामा – एई सारते गे? (रसिका तान लोः)

कृष्ण – हे। सारते गे।

कौल - यदि आमाः बोकोवा पैला जाः ओकोए राचाः लेरे दो चानाःम चिकाया?

घनश्याम - ओह! एन बदमाशः बोकोवाः पैलागे ओकोए राचाः लेरे दो इनिः तेगे बाकी सोबेन काजि-कामिंग इतुईया।

(सोबेन को ती को ताबिड़ी जादा)

हीरालाल - माईनान गोमके को, आले नेकान बोवाः बुई, गंडे मुन्डि काजि को काले बुझावगा। बोकोर बोकोर होकाए पे। आलेयाः होन कुड़ि कोआः मोलोंग रे ओकोआ ओला काना एना गे होबावगा।

(सुदामा बोलो ताना)

सुदामा - (तोरो कोड़ा बाई केयाते) हों हों। आलों पे सेनोगा। आईं सिड़िः बिड़िः जागार को रानुआन गेईंग जागारेया। गन्डे-मुन्डि जागार को सोजे-संगोमेईंग सोतोःया। मगर तिसिंग का, गापा सिंगि तुरो तान लोः।

(दापाल कोटोंग)

लेपेल साड़ा - 4

ठाँयाद - राचा रे।

सोमाए - सेताःरे।

सिंगि तुर तान लोःगे सुदामा सिंह बोंगा ते कुछ अर्दाश जादा।

सुदामा - हे सिरमा रेन सिंह बोंगा आम गे दिसुम बाई तानिः दो। मेन्दो ने ओते दिसुम कोरे चिलकान-चिलकान होड़ो होन कोम बाई केद को? कोड़ा होन काजि जादा - हे रेदो का। कुड़िहोन काजि जादा - का रेदो हे। हे सिरमा रेन सिंह बोंगा उदुबाईंग में नेया को चिकान उल्टा-पुल्टा काजि को तनाः?

(कृष्ण बोलो ताना)

टेनिश-पैजामाएस तुसिंग तादा। ताराना ते मियाद जिलिंग बुगुलीः हाका कादा। ती रे मियाद मोटो किताबेः साबा कादा।

एना गे, मेदमुड़ाव एना गे। मगर सोबेन नवा-नवा लेलोःगा...।

कृष्ण - हे। ने। नेया साबेमे (कागजो राः पुटुड़ाए ओमोई ताना)

सुदामा - नेया चिकना?

कृष्ण - आईंग मियाद तोरो कानीईंग ओला कादा। नेया के शहर रेन होड़ो कोलांग लेल रिका कोआ। नेया लेल लेरे उकाड़ा होड़ो कोआः जिलिंग ती को आए तेगे खाटोगा...।

सुदामा - बुगिन। खूब बुगिन काजि। आईंगवो होड़ो को नेकागे लेल रिका राःईंग भोरसा काद कोआ। मेन्दो उदुब-उदुबे लोः सोबेन काजि को कटेया गेर केदा। अच्छा नाः दो जेतान काजि बानोः। आम लेकान सेंणा सोंगे नाम जाना। सिंह बोंगा नेकान बुगिन काजि को नागेन पुराः दिनेः जीद मेका। अच्छा जोआर!

कृष्ण - जोहार! गापा ओड़ो हिजुः में।

(दापाल कोटोंग)

साड़ा-2

लेपेल साड़ा - 1

ठाँयाद - पढ़ाव कुटुरी।

सोमाए - 11 बजे सिंगि।

मियद पुण्डि गेयानी साहेब होन कोए पढ़ाव जाः कोआ-

My dear students, the blossom flowers
are nothing but smile of the earth.....

(पढ़ाव चाबा जाना। साहेब बाहर तेः उडुंग जाना)

सुदामा - चि हाले कृष्ण ओड़ाः काम सेनोगा? नेताः रे हापे गेम दुबा काना।

कृष्ण - सोंगे सुदामाईंग बागे कीयते चिलकाईंग सेनोः? मार काजि में कामिंग साहेबाः पढ़ावोम बुझाव जाना चि का?

सुदामा – तोबे दो एला लांग सुमधि-भेंट लेया। आलांग दो मिद मुलि तेगे सेन होरा तान होड़ो किंग तानकिंग।

कृष्ण – जाँनाःम मेने। आमाः टुन्डु होरा दो कोताः?

सुदामा – काजियाः माईंग दो... उलुई-पुलुई जागार को...। अच्छा ओड़ो मियाद काजि!

कृष्ण – हे। काजि में।

सुदामा – शहर रेन मियाद-बारिया दंगड़ा कोआः जीम बादिली दाड़िया?

कृष्ण – हे हे। चिलकाते का? चानाः को रिका तादा इनकु?

सुदामा – चानाःम मेने हाले। इनकु कालिज रेन पढ़ाव दंगिड़ि कोको खींस रिका चाबा तद कोआ। मियद हिरूई-दिरूई गेः जागार किया। मियाद आएयाः पैला गेः राचाः किया। मियाद दो मुम्बईया मसाला फिल्म राः दुरंग दुरंग जाद लो गेः चोः जाःईया-हायगा.. देगा... मोचो कोए जोवा रे चोः ताईंञ मेरे गतिंग...।

कृष्ण – हाय, नेया दो रेः राचाः मामला तानाः। मगर नेया को का ठीक कामि चिलकातेम हिसाब जादा?

सुदामा – धत तेरिका। आते हाले चिलकाम काजि बेड़ा जादा? गोटा दिसुम रेन होड़ो को नेया एदकान कामि को हिसाब तादा आर आम नेया बुगिन कामिम हिसाब जादा। आम चिलकान गेयानी तान में हाले?

कृष्ण – अरे आईंग के खोम आलोम मेताईंञा। आईंग नेकान उपायेईंग उदुबेया चि एन सोबेन उकाड़ा होड़ो कोवाः जिलिंग ती को आए तेगे हादुडुगा।

सुदामा – अच्छा... अच्छा... उकाड़ा होड़ो कोवाः ती आए तेगे... इनकुआः ईम गेम बदिलिया। अच्छा...अच्छा... ककारू जोम लागावेया?

कृष्ण – अरे का। का गे। काजियाः माईंग दो ईम दो एनागे...।

सुदामा – ओहो। गलती-सलती कोराः क्षेमा ताईंग में। मोतोलोब दोरपोन

कृष्ण – अगस्त्य। इनिः आएया सोंगेः लोपामुद्रा जागार-जागार तान लोःए जागाराई तान ताई केना चि कुड़ि जाती काजि-कुलि केयाते काको उदुबेया। मेन्दो कोड़ा जाती काजि-कुलि केयाते को उदुबेया। मगर बरान किंगाः मोने ओड़ोः जी राः सुकु-रासिका मिद गेया।

सुदामा – वाह! सारते गे हाले आम दो हेंदे साहेब तान में। याने कुड़ि जाती कोआः कनाजि दो 'हे' रेदो 'का' आर 'का' रेदो 'हे'।

कृष्ण – हे। एनका गे।

सुदामा – ओहो। एना मेनतेगे इनकु रे ओको गोए-गोपोए होड़ो कोरेवो माया-दाया ताईना।

कृष्ण – सारते उतार गेम काजि केदा नेया दो। चिलका दो आबु कुड़ि होन कोरे माया-दाया मेनागा।

सुदामा – एनका रेवो आबु दो इनकुआः जोनोमान होड़ो कोगे तानबू। हे चि का?

कृष्ण – सारते काजि गे हाले। नाः दो आमागा तोरो टुन्डुः ताना जाः?

सुदामा – हे। सारेया कान तोरो को दो गापा।

कृष्ण – गापा दिसुम रेन होड़ो को लेलेया चि चिलका ते उकाड़ा रेः राचाः होड़ो कोआ जिलिंग ती आए तेगे हादुडुआ।

सुदामा – याने बिना ताला निः केया तेगे गरोवा रेन कुला उडुंग ईमें! हा... हा...हा...।

कृष्ण – आर नाः दो कुला-काटा चोम्पा बा लेगेन-लेगेन कंता बाईयो!

(दापाल कोटोंग)

सुदामा - कागे हाले काईंग बुझाव बाई जाना। आईंञाः सोबेन सेणा कोः को दुपिल केदा। नी दो अमेरिकान साहेब ताई केना चि यूरोपीयन? नियाः अंग्रेजी अलंग रे का जापाः जाना।

कृष्ण - अच्छा-अच्छा। आमागाःव ईमेईंग बदली तामा चि चिलका? नि पुराःगे रानुआन काजिः काजि तुकादा। नियाः काजि कोते आईंग जी रटिंग एकेला गिड़ि जाना।

सुदामा - हाँए इमियुंग केटेः जागार! मार-मार मुण्डा ते क्लियार लेम।

कृष्ण - इनिः मेन लाःचि ने आला कान सोबेन रोकोम बा को दो जेताव का, ओते एँगाः मुरगुई-मुरगुइ लान्दा तानाः।

सुदामा - हेगे नेया काजि कोदो। आर नेया काजि आईम केया तो आमा जी वो गे आलाय-बालाय लेना जाः?

कृष्ण - सारते गेम काजि। एना मेनतेगेईंग दुब हापे केना। जी कोते ओटांग गिड़ि लेना।

सुदामा - हाय! आमाः जीव जाः कॉमिंग्स, हॉकिंस बाईन नागेन पुण्डि होड़ो कोआः दिसुम ते ओटांग गिड़ि लेना।

कृष्ण - हे सारते गेम काजि। आईंञाः जी कुड़ाम रे दो का ताई केना। आईंञाः हुनार बोलो लेना चि ने आबुआः कुड़ि होन...।

सुदामा - हे... हे। ने आबुआ कुड़ि...। याने आबुआः किमिन, होन कुड़ि को?

कृष्ण - हे, हेई। ने आबुआः कुड़िहोन को गेचा आबुआः कुटुम कुपुल, खूँट कोरे आला कान बा कोगे तान को।

सुदामा - अरे वाह! चिमिन मारांग काजिम काजि केदा। आमो गे आबुआः दिसुम रेन हेंदे साहेब तान में। नेया मेनतेगे जाः कवि, दुरांग हारिया ओड़ोः गेयानी होड़ो को निकु बा लेकान लापाय होड़ोमो को मेता कोआ।

कृष्ण - हेगे। आर लापाय निमियुम चि ओड़ोः मियाद बिदेस रेन गेयानी होड़ोआः काजिंग ठोर नाम तादा।

सुदामा - एन पुण्डि होड़ो ओकोए तानिः?

होबावगा, हाँ।

धानु - का ठीक लेल नागेन आईंगाः जी लिटिब-लिटिब ताना। चोः ताईंञ मेगो गतिंग चोः...।

(मियाद कुड़ि होन लोः अपिया दंगड़ा को बोलो ताना)

मोसाते - हे...हे...चोः ताईंग मेगो गतिंग...चोः... (इनिः को हिरूई-दिरूई रेः-राचाः जाःईया)

धानु - सुनीता...आ...आ...आ...।

सुनीता - दादा...आ...आ...आ...।

धानु - का। कागे। जेता लेका रेव का गे। आईयाः जापाः रे नेया का होबावगा। जेता लेका रेव का गे। धमेन्द्र, आईंयाः बोकोआः होड़ोमो जाः राः पेड़ेः आलोम लेलरिकाएया। आड़ाः ताई में आईयाः बोको होनके। का रेदोम...।

महमूद - का रेदो देया रे जानुमेईंग चुबाः मा (छूरीः फेरोंवाड़ा जादा)

धानु - हों। एनका दो का।

धर्मेन्द्र - जानुम चुभाः दो आलेव ले इतुआना।

राठौर - (पिस्तौलेः जोका जादा) हुडिंग चुबाः केया तेदो लेल लेका में।

धर्मेन्द्र - चिलका तेईंग अड़ाःईया? आमाः बोको दो डंकु-डापुर लेसे लेसे. चम्पा बा पैला...।

धानु - आईंग हुकुम जादा आईंया बोको आड़ाः ताई में...।

धर्मेन्द्र - खूब बुगिन! आईंग आमाः बोको होनेईंग अड़ाःई। आर आईयाः बोको होनाः सेन होरा रे पैलाम राचाःईया। नेकान कामि ओको गुरू इतु ताः मा?

सुनीता - दादा! नेयाको चिकान हिरूई-दिरूई कामि को होबाव ताना? जाँ हुड़िंग रेव दो ओल-पढ़ाव कान राः सेंणा पे साबे रे होनांग।

धर्मेन्द्र - सेंणा-बुद्धि राः ज्ञान आमाः पैला राचाः दादा के बुझावई में। आईंग दो का।

सुनीता - चुनरी...ई...ई...ई...(दौड़ी आउ केयाते चुनरी ताः हम्बुदेन

लेपेल साड़ा-2

ठाँव - कॉलेज अंका।

सोमाए - निदा आठ बजे।

कॉलेज हॉल रे सुसुन-दुरांग राः जलसा ठहरावा काना। अंका जापाः कोरे होड़ो को जामा हुन्डिन ताना। सन्डाका आतोम दोकान कोआ ते ओकोए बिन्दी टिकाए किरिंग ताना। ओकोए हिसिर।

मालती - एई चुनरी, जानाः खास मेनाः?

चुनरी - नेरे चानाः खास मेनाः?

मालती - जाँनाः आमाः नागेन सालाए मे दो। नाः सुसुन-दुरंग का एटेया काना। (बिन्दीयाए साला ताना) नेया चिमियुंग गोनोंग?

रफीक - पाँच टाका।

मालती - आर हाना?

रफीक - ओकोआ नेया?

मालती - हे।

रफीक - नेया दो पन्द्रह टाका।

चुनरी - हे दाई गो। नेया ठीक लेलेवा आमाः मोलोंग रे।

धानु - (इनिः ताः रे जापाःन तान लोः) हे हे, सारते नेया ठीक लेलोगा.. बिंदिया जुलोगा... लाटि रिंका रेंडेंः... (सुसुन बिउर तानाए)

मालती - एई आपेयाः ओड़ोः जेतान कामि बानोः? नाःगे आलेयाः गोमकेयाईन! उदुवाई रेदो पे लेलेया।

महमूद - इनियाःव जाँ कोड़ा सोंगे दो मेनाःईगे। इनियाः बोरो बानोः।

चुनरी - एई! इमियुंग आईंग चानाः मेन्तेम लेल गिड़िः जाःईंग? आड़ाः ताम आईंगः पैला।

धानु - है... है... है...। लाख रे सुगाड़ा सोंगोति गतिंग। आईयाः जीगे दुकु केम, तोबे एनांग...।

चुनरी - आईंग काजि जादा आईगाः पैला आड़ाः ताम, का रेदो का ठीक

हिन्दी अनुवाद

4. कॉलेज गेट
पात्र परिचय

पुरूष पात्र

1. धानु - मजनूं
2. भोला - मजनूं
3. महमूद - मजनूं
4. हरिहर - मजनूं
5. घनश्याम - छात्र नेता
6. हीरालाल - अभिभावक
7. केरकेट्टा - अभिभावक
8. सुदामा - नाटककार
9. कृष्ण - साहित्यकार
10. मि. ई.ई कॅमिग्स- विदेशी विद्वान
11. अगस्त्य - विदेशी विद्वान
12. लोपामुद्रा - विदेशी विद्वान
13. रफीक - दुकानदार
14. धानु - सुनीता का भाई
15. महमूद - धानु का दोस्त
16. धर्मेन्द्र - चुन्री का भाई
17. राठौर - धमेन्द्र का दोस्त
18. कमल - धमेन्द्र का दोस्त

स्त्री पात्र

1. प्यारी - कॉलेज की लड़की
2. रीता - सहेली
3. रूपा - सहेली
4. चंदा - सहेली

ताना) आड़ाःई में दादा। चुनरी के अड़ाःई ताई में। का रेदो आईंगे आमाः गोगोएनिः उडुंगवोंआ। चुनरी नेका ठोरोः ताना चि नाः दो आबु कुड़िः जाती कोगे कुड़ाम राः मेद ते दिसुम के लेलेल राः सोमाय तेबाः जाना।

धानु – (इसुकोन हापे कोआतेः जागार जादा) धर्मेन्द्र काई ठोर लाः चि चुनरी आमाः बोको तानिः।

सुनीता – दादा, नाः दो ठोर नामे में चि आयार रे नेकान एदकान कामि को काम कामिया। आले सोबेन कुड़िहोन को आपेया गेदो माँ-बोको तान ले।

धानु – (उईउः लुतुर गिड़ि जान लोः) माफ ताईंग में दादा धर्मेन्द्र (चुनरी के पैलाए गबला जाःई लोः। दादा धर्मेन्द्र, ने कॉलेज अंका रे अलांगः भेंट-नापाम जीनीद जाकेद काईंग रिड़िंगया। आम आईंआः गुरू कोरेन गुरू तान में। नाः दो नेकान एद्कान कामि को आईंते का होबावगा (इनियाः काटा साब मेन्तेः उंगुदेन ताना)

धर्मेन्द्र – का...का। एनका दो का (तारांन रे साब किः चिः बिरिद जाःईया) ओको होड़ो आयाः गलती ठोर केया तेः सुधराव रूड़ाया इनिः दो पुराः मारांग जीया कान गेयानी होड़ो तानिः। आम आमाः गलतीम मानातींग जाना। आईंगाः गुरू दो आम तानिः, आम। बिरिद में। आर नेया जागार लोः गेई असराय ताना चि नाः दो ने कॉलेज अंका ते सोबेन बु उडुंगोः-बोलो दाड़ियाः।

(दपाल कोटोंग)

टुन्डु

❖❖❖

(दोनों अन्दर दाखिल होती है)

(पटाक्षेप)

द्वितीय दृश्य

स्थान - कॉलेज का बरामदा।

समय - 12.30 बजे दिन।

भय से आतंकित दोनों आपस में वार्तालाप करती हैं। अन्दर से सहेली रूपा आती है।

रूपा - हाय चंदा, प्यारी!

समवेत स्वर - हाय रूपा। क्लास ओवर?

रूपा - नहीं। हमारी सर कुछ काम से प्रिंसिपल के चेम्बर में गई हैं। हवा उड़ी है कि अभी-अभी हमारे कॉलेज में एक छेड़-छाड़ की घटना घटी है।

चम्पा - (बगलवाली) क्या? छेड़छाड़! अरे यार जाने भी दो। यहाँ तो यह सब आम बात हो गई है। जरा उधर देखो, लड़कियों के कॉलेज में लड़के ही लड़के भरे पड़े हैं। न पुलिस का पहरा न दरवान को फिकर है। मैं तो मानती हूँ कि अब हमलोगों को ही पोजीशन में आना होगा हें...हें... हें...।

चंदा - क्या? पोजीशन! मतलब?

चम्पा - वेणी में ब्लेड। अब समझी? साल्ले एकाध मजनूं को उपरी मंजिल पहुँचा दो तो रोज-रोज यह लफड़ा खत्म।

प्यारी - क्या? हत्या? पुरुष जाति की हत्या? वो भी बेवजह।

चम्पा - छेड़छाड़ बलात्कार, हत्या के यदि कोई वजह नहीं तो हमें भी लैला बनने में आपत्ति क्यों? खुद को बचने का उपाय खुद को बेचना भी है। अच्छा बाय बाय! फिर मिलेंगी।

(पटाक्षेप)

5. आनन्दी - मर्डर केस वाली लड़की
6. मिसेस कौल - प्रिंसिपल
7. मिसेस अहिल्या - महिला पुलिस थाना प्रभारी
8. मालती - सहेली
9. चुनरी - धर्मेन्द्र की बहन
10. सुनीता - धानु की बहन

अंक-1

प्रथम दृश्य

स्थान - कॉलेज का प्रांगण।

समय - 12 बजे दिन।

कॉलेज की लड़कियाँ इधर-उधर आ-जा रही हैं। लड़के भी आ-जा रहे हैं। दरबान सामने चुपचाप खड़ा है। चार लड़के प्रवेश करते हैं और एक सुन्दर लड़की पर अपनी बुरी नजर गड़ाते हुए फब्तियाँ कसते हैं। उनमें से एक लड़का उसका दुपट्टा खींचता है।

धानु - (दुपट्टा पकड़ता है) वोए लक्की-लक्की वोए, हसीन जवाँ तनिक तो रूक जाना।

प्यारी - (क्रोध से आगबबूला होती है) खूसट यहाँ पर भी तेरा यह दुस्साहस। छोड़ दे मेरा दुपट्टा। प्रिंसिपल ने देख ली तो जानो। सारी एटेन्डेन्स काट!

भोला - अँ, हँ। यह दुपट्टाधारी मेरा बहुत खराब पार्टनर है। आपुन को यह अच्छा काम बुरा नहीं लगता। मेरा नाम भोला है। भोले-भाले दिल वाले। मेम साहिबा जरा प्यार से हम पर मुस्कुरा देना। बाकी काम बाद में, हँ?

महमूद - तू देखने की चीज है। हजार बार देखूँगा। क्या कर लोगी?

हरिहर - तू चीज बड़ी है मस्त-मस्त...।

रीता - अरे यह लोग पढ़ते भी हैं या नहीं। एटेन्डेन्स क्या खाक कटेगी? चल अन्दर। चुप रहने में ही हमारी भलाई है।

गुलाब और नागफनी करते हैं।

केरकेट्टा – हाँ। यह बात भी विचारणीय है।

मि. कौल – पर कैसे? हमें समझाओ।

घनश्याम – युवा मन नदी के उफान की तरह है। सीधा रोको तो आड़-मेड़ तोड़कर चूर कर दे। साथ बहो तो गाना गुनगुनाता जाय।

मि. आदित्य – मतलब? (अत्यन्त गम्भीर होकर) तुम कहना क्या चाहते हो?

घनश्याम – तू देखने की चीज है, हजार बार देखूँगा... तू चीज बड़ी है मस्त-मस्त... इसमें गलती कहाँ है?क्या फूल को काँटों पर भरोसा नहीं? क्या काँटों का फूल के प्रति हमदर्दी नहीं?

मि. आदित्य – इम्पोसीबल! टोटली इम्पोसीबल! बकवास बंद करो। तुम समाज को बरगला रहे हो?

मि. कौल – यदि तुम्हारी बहन का ही कोई दुपट्टा खींच ले तो तुम क्या करोगे?

घनश्याम – काश! उस मजनू की बहन का ही दुपट्टा कोई खींच ले तो उससे ही बाकी काम सीख लूँगा।

(तालियों की गड़गड़ाहट)

हीरालाल – महोदय, हमें इस तरह की उटपटांग, नाटकीय बातें समझ में नहीं आतीं। बकवास बंद किया जाए। हमारी बेटियों की माँग पर विधाता ने जो लिख भेजा है, वही होगा।

(सुदामा का प्रवेश)

सुदामा – (जोकर की पोशाक में) ठहरो। आप जरा सब्र करें। मैं अटपटी बातों को चटपटी में सुनाता हूँ। नाटकीय बातों को सीधे में दिखाता हूँ। पर आज नहीं कल। सूरज उगते ही मेरा नाटक आरम्भ हो जायेगा।

(पटाक्षेप)

तीसरा दृश्य

स्थान - मीटिंग हॉल।

समय - 12 बजे दिन।

दूसरे दिन प्रिंसिपल के चेम्बर में छेड़छाड़ को लेकर बैठक चलती है। बैठक में छात्र, छात्रा, अभिभावक, महिला थाना प्रभारी आदि शामिल हैं।

मिसेज कौल - आनन्दी की दुःखद घटना के बाद फिर आपराधिक तत्व कॉलेजों में सिर उठाने लगे हैं। कल हमारी एक छात्रा के साथ छेड़छाड़ की घटना हुई है। आप सभी से ऐसी घटनाओं की रोकथाम के लिये सुझाव मांगा जा रहा है। कृपया अपना व्यक्तिगत सुझाव दें।

छात्रा - ... तो आनन्दी वाली घटना से अबतक कॉलेज प्रशासन क्या सबक सीखा? क्या आनन्दी का खून बेकार ही बह गया?

मिसेज कौल - (चढ़े हुए तेवर) कॉलेजों में लड़कों के बेवजह प्रवेश पर सख्त पाबंदी लगा दी गई है। कॉलेज के दरवानों को इसके लिए सख्त निर्देश दिये गये हैं। इसके बावजूद भी ऐसी घटना घटती है तो दरबानों से पूछा जायेगा।

घनश्याम - मगर यहाँ तो असख्त का आलम है। कॉलेज प्रशासन एवं आप जैसे जिम्मेदार अधिकारियों को अपनी नाकामी का ठीकरा इन निहत्थे दरबानों पर फोड़ना कहाँ तक उचित है? आपलोग अपने दायित्व से मुख नहीं मोड़ सकते।

मिसेज कौल - तो बच्चों को संवारना केवल शिक्षक शिक्षिकाओं का काम है? यहाँ माता-पिता एवं अभिभावकों का दायित्व नहीं बनता?

हीरालाल - हाँ। मैडम का कहना ठीक है। बच्चों को संस्कार देना तो माता-पिता की खास जिम्मेदारी है।

घनश्याम - नहीं। यदि आपका लाड़ला संस्कार को दुत्कार करे तो? तब माँ का स्नेह-पुष्प इस विषैले काँटे की रखवाली नहीं कर सकता! सच तो यह है कि काँटा ही यह काम बखूबी कर सकता है, जैसे

सुदामा - हृदय ...हृदय ... दिल... दिल... आई लव यू... (हाथ से कलेजा का आकार बनाता है)

कृष्ण - हाँ हाँ। वही दिल ... हृदय।

सुदामा - हाँ...। तुम तो इन्सान नहीं आदमखोर मुआ हो। लोगों का दिल निकालकर खा जाते हो और कोंहड़ा का दिल लगा जाते हो। भागो यहाँ से...।

कृष्ण - अरे नहीं यार, नहीं। तुमने मुझे गलत समझ लिया। दिल वहीं केवल उनके विचार बदलता हूँ।

सुदामा - सच? (उत्सुकता से)

कृष्ण - हाँ, सच।

सुदामा - तो आ गले मिल। हम दोनों ठहरे एक ही मंजिल के दो राही।

कृष्ण - जो समझो। तुम्हारी मंजिल कहाँ?

सुदामा - कहा न अटपटी को चटपटी...। अच्छा एक बात!

कृष्ण - बोलो।

सुदामा - शहर के कुछ लड़कों का दिल बदल सकते हो?

कृष्ण - हाँ हाँ। क्यों नहीं? क्या किया है उनलोगों ने?

सुदामा - अरे यार पूछो मत। इन दिनों कॉलेज की लड़कियों की नाकों पर दम कर रखा है, इन्होंने। एक ने अटपटी-चटपटी बोला। दूसरे ने लड़की का दुपट्टा खींचा। तीसरे ने मुम्बईया मसाला फिल्म का जुल्मा गाया चुम्मा-चुम्मा दे दे चुम्मा।

कृष्ण - यह तो छेड़खानी का मामला है। पर इसमें बुराई कहाँ?

सुदामा - धत् तेरी के! अरे यार कैसी बात करते हो? सारी दुनिया इसे बुराई मानता है और तुम इसे अच्छाई मानते हो। तुम कैसा साहित्यकार हो, यार?

कृष्ण - तुम हमको कम करके मत आंको। मैं ऐसा उपाय बताऊँगा कि उन सारे मजनुओं के क्रूर हाथ स्वतः ही थम जाएँगे।

चतुर्थ दृश्य

स्थान - घर का आँगन।

समय - सवेरे।

सूर्योदय के समय सुदामा सूर्यदेव से कुछ आराधना करता है।

सुदामा - मानव जीवन के हे सूत्रधार विधाता! तूने इस पृथ्वी पर कैसी-कैसी कठपुतलियाँ बना रखी हैं? नायक कहता है "हाँ" में 'नहीं। नायिका कहती है 'नहीं' में "हाँ"। हे सिंहबोंगा बता। बता यह कैसी घनचक्कर उलटबांसी है? बता...।

(कृष्ण का प्रवेश)

टेनिश पैजामा पहना है। कंधे से एक लम्बी थैली लटकती है। बायें हाथ पर एक पोथा धरा है।

कृष्ण - ऐ जोकर! तू क्या दुनिया को बक-बक सुनाता है रे?

सुदामा - मैं जोकर? तू नहीं जानता मैं कौन हूँ?

कृष्ण - हाँ हाँ। नहीं जानता। तू कौन? बता बता...।

सुदामा - मैं एक नाटककार हूँ।

कृष्ण - ऐ नाटककार! तू कैसा-कैसा नाटक दिखाता है रे?

सुदामा - मैं अनबूझ पहेली में छिपे इन्सानों की पोल खोलता हूँ। तुम कौन?

कृष्ण - मैं भी एक साहित्यकार हूँ।

सुदामा - तेरा काम-धाम क्या? तू भी किसी का चमड़ी उमड़ी छिलते हो क्या?

कृष्ण - हाँ, कुछ ऐसा ही समझो।

सुदामा - अरे यार! कुछ ऐसा-वैसा नहीं। अटपटी को चटपटी और नाटकीय को सीधे में बोलो। साहित्यकार बनके बैठे-ठाले हो कि कुछ काम-धाम भी करते हो?

कृष्ण - मैं लोगों का हृदय बदलता हूँ।

अंक-2

प्रथम दृश्य

स्थान - क्लास रूम।

समय - 11 बजे दिन।

एक गोरा विद्वान बच्चों को पढ़ाते हैं।

My dear students, the blossom flowers are nothing but smile of the earth.....

क्लास ओवर (विद्वान बाहर निकलते हैं)

सुदामा - अरे कृष्ण घर नहीं जाना है क्या? चुपचाप बैठे हो?

कृष्ण - साथी सुदामा को छोड़ कैसे जाता? कहो, कॉमिंग्स साहब की पढ़ाई कैसी लगी?

सुदामा - अरे यार मेरा मगज बगुला उड़ा ले गया। यह यूरोपियन गोरा है या अमेरिकान? इनका अंग्रेजी मेरे दिल पे नहीं उतर सका।

कृष्ण - अच्छा-अच्छा। तेरा भी दिल बदल दूँ क्या? उन्होंने क्या ही पते की बात कही है। इनकी बातें मुझे अन्दर तक छू गईं।

सुदामा - हाँ हाँ। उन्हें हिन्दी में क्लियर करो तो जरा।

कृष्ण - उन्होंने कहा कि ये खिले हुए फूल और कुछ नहीं बल्कि धरती की मुस्कुराहट है।

सुदामा - अरे वाह! इन्हें सुनकर तुम्हारे मन में भी कुछ-कुछ हुआ होगा?

कृष्ण - बिल्कुल! इसीलिये तो चुपचाप बैठा पड़ा था। मन कहीं और भटक गया था।

सुदामा - तुम्हारा मन कहीं कमिंग्स, हॉकिंस बनने गोरों का देश तो नहीं चल गया था?

कृष्ण - हाँ हाँ। सच में वहीं चल गया था। मेरा सोच रहा है कि ये जो नारी...।

सुदामा - नारी... याने हमारी बहू-बेटियाँ?

सुदामा – अच्छा-अच्छा मजनुओं के हाथ स्वतः ही... उनका दिल बदल देगा? अच्छा-अच्छा वो कैसे करेगा, कोंहड़ा का दिल लगाके...?

कृष्ण – अरे यार नहीं। कहा न दिल वही...।

सुदामा – ओहो। भूल-चूक माफ कर देना। मतलब, शीशा वही चेहरा वही. पर सबकुछ लागे नया नया...?

कृष्ण – हाँ। लो इसे (कागज का पुलिंदा देता है)

सुदामा – यह क्या?

कृष्ण – मैंने एक नाटक लिखा है। इसे शहरवासियों को दिखायेंगे। इससे मजनुओं के हाथ स्वतः...।

सुदामा – अच्छा। बहुत अच्छा। मैं भी दर्शकों को ऐसा ही वादा किया हुआ हूँ। पर मंच पर आकर सबकुछ भूल बैठा। खैर, तुम साथी मिले। सिंहबोंगा इस नेक काम के लिए लम्बी उम्र दे। अच्छा नमस्कार।

कृष्ण – नमस्कार। कल फिर आना।

(पटाक्षेप)

द्वितीय दृश्य

स्थान - कॉलेज गेट।

समय - रात आठ बजे।

कॉलेज हॉल में डांस प्रोग्राम है। गेट के पास चहल-पहल है। फुटपाथ पर लगे दुकानों पर भीड़ जमी है। कोई बिंदी ले रही है, कोई हार।

मालती - चुनरी, यहाँ कुछ खास है?

चुनरी - यहाँ खास क्या है?

मालती - कुछ अपने लिये चुनो भी। अभी डांस शुरू नहीं हुआ है। (बिन्दीया उठाते हुए) ये कितने का है?

रफीक - पाँच रुपये का है।

मालती - और वह?

रफीक - कौन यह?

मालती - हाँ।

रफीक - यह पन्द्रह रुपये का है।

चुनरी - हाँ दीदी यह ठीक जमेगी आपके माथे पर।

धानु - (उन पर सटते हुए) हाँ हाँ बिल्कुल जमेगी यह। बिंदिया चमकेगी... चूड़ियाँ खनकेगी... (एक्टिंग करता है)

मालती - ऐ! तुमलोगों का और काम नहीं। अभी प्रिंसिपल के पास शिकायत नहीं की तो जानो।

महमूद - प्रिंसिपल! उनका भी कोई लेड़ा पार्टनर होगा न। तो प्रिंसिपल का आपुन को कोई डर नहीं?

चुनरी - ऐ! इतना हम को क्यों घूरता है रे? छोड़ दे मेरा दुपट्टा।

धानु - हे... हे... । तू लाखों में एक हो डार्लिंग। मेरा दिल को तोड़, तब दुपट्टा छोड़ दूँगा हाँ। हे...हे...।

चुनरी - मैं कहती हूँ अभी मेरा दुपट्टा छोड़ दे, वरना बुरा अंजाम होगा।

धानु - बुरा अंजाम भुगतने के लिए दिल बेकरार है। चुम्मा दे दे ...

कृष्ण - हाँ हाँ। ये जो नारियाँ हैं न, पारिवारिक जीवन के मुस्कुराहट ही तो हैं।

सुदामा - अरे वाह! यह भी खूब रहा। तुम भी देश का काला साहब बन गया। इसीलिये कवि कथाकारों ने उन्हें फूल सा नाजुक माना है, क्यों?

कृष्ण - बिल्कुल! और नाजुक इतना कि एक और विदेशी विद्वान की बात याद आ जाती है।

सुदामा - वो गोरा कौन?

कृष्ण - अगस्त्य। वो अपने जिगरी दोस्त लोपामुद्रा से प्रसंगवश कह रहा था कि पुरुष कहकर बताते हैं। स्त्रियाँ कहकर नहीं बताती। किन्तु दोनों को एक ही सुख का आकर्षण रहता है।

सुदामा - वाह! सच में तुम काला साहब हो गया, यार। याने नारी की नहीं में हाँ और हाँ में नहीं?

कृष्ण - हाँ। ऐसा ही।

सुदामा - इसीलिये उनके मन में किसी अपराधी पुरुष से भी एक अदृश्य हमदर्दी पनपता है।

कृष्ण - बिल्कुल सही फरमाया। जैसे हमारा हमदर्दी एक अबला नारी पर पनपता है।

सुदामा - यों भी तो हम पुरुष उनके ही औलाद हैं।

कृष्ण - बिल्कुल! अब तुम्हारे नाटक का आखिरी दृश्य रह गया होगा।

सुदामा - हाँ। कल सांध्य को फिर।

कृष्ण - कल दुनिया देखेगी कि कैसे एक मजनू के उठे क्रूर हाथ छेड़खानी, हत्या से स्वतः थम जाते हैं।

सुदामा - याने ताला खोले बिना पिंजड़े से शेर निकालेंगे। हा..हा..हा...।

कृष्ण - और शेर का पंजा फूलों का सेज बन जाए।

(पटाक्षेप)

धानु - (चेहरा उतरता है) क्षमा कर देना भई (चुनरी के गले में दुपट्टा डालता है) भाई धर्मेन्द्र कॉलेज गेट की ये हमारी मुलाकात जन्म-जन्म भर नहीं भूलूँगा। तू मेरे गुरुओं का गुरु है। अब ऐसा गलत काम हमसे नहीं होगा (उसके पाँव छूने को झुकता है)

धर्मेन्द्र - अरे नहीं यार। (कंधे पकड़कर उठाता है) अपनी गलती को स्वीकार करनेवाला इन्सान महाज्ञानी होता है। तूने खुद की गलती स्वीकारी है। मेरे गुरु तो तुम हो तुम। उठो! आशा है कॉलेज गेट अब सबका प्रवेश द्वार बन सकेगा।

(पटाक्षेप)

समाप्त।

❖❖❖

चुम्मा।

(एक लड़की को लिये तीन लड़के का प्रवेश)

समवेत स्वर – हाँ हाँ, चुम्मा दे दे चुम्मा... (उससे बदसलूकी करते हैं)

धानु – सुनीता...आ...आ...आ...।

सुनीता – भइया...आ...आ...आ...।

धानु – नहीं...ई... ई...ई...। यह मेरे सामने न होगा। हर्गिज नहीं। धर्मेन्द्र मेरी बहन पर हाथ उठाने का दुस्साहस मत करना। छोड़ दे मेरी बहन को... छोड़ दे वरना...

महमूद – (छुरी चमकाता है) वरना तेरी पीठ पर कांटा चुभा देंगे।

धानु – ठहरो।

धर्मेन्द्र – काँटा चुभाना तो हमें भी आता है, धानु।

राठौर – (पिस्तौल तानता है) जरा कांटा चुभा के तो देख।

धर्मेन्द्र – काहे को छोड़ूँगा? तेरी बहन तो चीज बड़ी है मस्त मस्त...।

धानु – मैं कहता हूँ मेरी बहन को छोड़ दे...।

धर्मेन्द्र – मैं तेरी बहन को छोड़ दूँ और तू मेरी बहन के साथ इश्क करेगा, यह किस गुरु ने सिखाया तुझे?

सुनीता – भईया, यह सब क्या हो रहा है? कम से कम शिक्षा का मजाक तो मत उड़ाओ।

धर्मेन्द्र – सभ्यता का पाठ तुम्हारा दुपट्टाधारी भाई को पढ़ाओ हमें नहीं।

सुनीता – चुनरी...ई...ई...ई...(दौड़ कर चुनरी से लिपटती है) छोड़ दो भईया चुनरी को छोड़ दो। छोड़ दो वरना मैं ही तुम्हारा हत्यारिन बन जाऊँगी। चुनरी, लगता है अब नारी जाति को अपना तीसरा चरित्र दिखाने का समय आ गया है।

धानु – (मौन तोड़ते हुए) धर्मेन्द्र सोचा न था चुनरी तेरी बहन है।

सुनीता – भइया, प्रण करो कि यह गन्दा काम अब नहीं करोगे। हम सब तुम्हारी माँ बहन ही तो हैं।

चिलका? हे तोबे मार बिरिद मेम मेताईंग तान रेदोईंग बिरिद ताना (लुंगीः सम्बाड़ाव तान लोः) चा-फा कोम बाई तादा चि का?

सुधा - चाईंग आउ तादा।

मोहन बाबू - अरे वाह! कुड़ी जाती को ताईन रेदो नेः नेका। (अंगोब तान लोः)

सुधा - चिलका (लान्दा तान लोः)

मोहन बाबू - आम लेका। नामिनांग भाला आईंगएम जोगाव जाःईंग (जोवा रेः चोः एतेल जाःईया)

सुधा - हैदराबादेया ते देवाशीशआः फोन हिजुः लेना।

मोहन बाबू - होन चिलका मेनाःईया? ठीक-ठीक मेनाःईया दो?

सुधा - ठीक गेयाय। काजि जादाए चि नुकुरी नेःगे लगावगा।

मोहन बाबू - खूब बुगिन काजि नेया दो। दोला तोबे दिउड़ी देवी मुंदिल रे बु आगोम अंगरा ताः। नामधारी कोतिया?

सुधा - भारत माता चौक तेईंग कुल ताःईया। नाएके आयूब साःराः मेनते तोवा बानोआः। हिजुः तानगे जाः।

(दापाल कोटोंग)

लेपेल साड़ा-2

ठाँव - सिदा ताःगे।

सोमाय - सावा 8 बजे सेताः।

मोहन बाबू पलंका रे दुबा कान लोः चाय नू ताना। जापाः रे कुर्सीरे सुधा दुबा काना। हुड़िन खोन तायोम ते दुआर साड़ी ताना।

नामधारी - आबा गा... आबा गा... दुआर निः में टोः टोः...टोः...टोः..। आईंग नामधारी।

सुधा - ओकोए? नामधारी!

नामधारी - हे गा एयांग। दुआर निः बेन... हान्ताः रे... सेकेड़ा निः बेन।

(सुधा दुआरेः निः जादा आर नामधारी बोलो ताना)

5. का एड़ेंगोः दीया

('महुआ का फूल' कानी जुम्बुलीया ते)

इनुँग तान को

कोड़ा को

1. सुच्चा सिंह - मोहन बाबू (वणिता ते दारोगा)
2. सूरदास - जाला कान सोंगे को
3. फकीर अली - जाला कान सोंगे को
4. खबरदार सिंह गिल- जाला कान सोंगे को
5. रोबर्ट - जाला कान सोंगे को
6. नामधारी - मोहन बाबुआः दासी कोड़ा

कुड़ी को

1. कुड़ी होनाः मूर्ति - ओते एंगा
2. सुधा - मोहन बाबूआः कुड़ी ते।

साड़ा-1

लेपेल साड़ा-1

ठाँव - मोहन बाबूआः बंगला।

सोमाय - सेताः 8 बजे।

राबंग साः राः दिन। सोबोःए लेका तुतुकुन होएवो झर-झर ओटांग ताना। किड़की-दुआर को सोबेन हंडेद केसेदा काना। पलंका रे नाः जाकेद मोहन बाबूए गितिया कान गेया। जापाः रेगे मांडि ओड़ाः रे सुधा चाएः बाई ताना। चा आउ जाद लोः सुधा गितिः कुठुरीः रेः बोलो ताना।

(सुधा बोलो ताना)

सुधा - चि काम बिरिदा? आठ बाजावोः ताना। तिसिंग दो सभा-पोन-चाईटी कोते सेनोगाः बानोः?

मोहन बाबू - ओहोरे ताईंग दो दुडुमो काम दुडुम रिकाईयाँ चि का? तिसिंग दो एतोवार तानाः। गोटा जीबोन दो सभा-पोनचाईटी रेगे बिताव जाना। कामि चाबा जानातेवो सुकु ते काम ताई रिकाईंगआ कि

लेपेल साड़ा - 3

ठाँव - भारत माता चौक।

सोमाए - 9 बजे सेताः।

दिसुम एयांगः सालान्दि चेतान रे देः केयाते उपुन होड़ो दंगड़ा को खूब जोर काकाला तेको एपेरंग ताना।

सिदा निः - (सालान्दि रेः देआ कान चि जोर तेः काकाला जादा) कुला राचाःपे कारे, कापे लेल जाःईया नि दो देवी लोखी तिंगुआ काना? बाराकाईती ओमे निः देवी लोखी। नेरे ओड़ाः ओड़ाः नि को सेवा जाःईया। आईंगाःव नि रे खूब विश्वास मेनाः। ने कोमोल बा (काटा रेः जाः जाःईया) दो सुकु-रासिका आर बाराकाईती राः मुटान तानाः। नाः जाकेद दिसुम रे सुकु-रासिका ओकोए को आउ साकावा काद रेदो ने आले हिन्दु दिकु कोगे चा। जय बजरंग बली की, जय सियाराम की...।

तायोम निः - मुरकाटा (मूर्ति के साब-साब जाःईया) नेया दो मोहमद पैगम्बर साहबाः ऊ सासांग तानाः। कापे उरुम जादा नेया सिंगि तुरो-सिंगि आईब मुलि ते जिलिंग काना। आईंग नि के काईंग जाः रिका पेय। जू आमाः हिन्दू होन आर चनिः। मोचा रेदो हेड़ेम-हेड़ेम जागार, देया साः रेदो छूरीम उकु तादा। आमाः कोमोल बा दो तुड़कु कोआः मायोम ते जेंगेद जेंगेद आराः गे आराः। चिमिन बार तुड़कु कोआः मायोम तेपे रेड़ा काना, ठोर मेनाः? ऊसासं आलोपे बोसोन्डोया का रेदो अपेया ऊर गेईंग पोटाःया।

मंजिला - बोकोर-बोकोर होकाए पे। नि दो आईयाः गुरु नानक देव तानिः। गुरु नानक साहेब। चापु ली पे मार तो मायांग रे ताराउड़ीः होर सोद कादा चि का। ताराउड़ी दो सिख जाती कोआः पुरना चिना तानाः। आले सोबेन पेड़ेःयान सिख को तान ले। दिसुम नागेन गोए-गोपोएन होड़ो को तान ले। साला आपे सोबेन को ताला रे दिकु जाती राड़ीबाड़ी सोबेन को मिद गे पे मेनेया आर आले अपेया नागेन मायोम ले लिंगिया। का। नेया का होबावगा। नाः

नामधारी - आबा गा... आबा गा...।

मोहन बाबू - हिजुः में नामधारी, चानाः होबा जाना बोरोआन गेम जागार जादा?

नामधारी - आबा गा... आबा गा... भारत माता चौक रे हें...एँ... हे...एँ

सुधा - अरे ठीक लेका जागारे में दो। चानाः होबा जाना भारत माता चौक रे?

नामधारी - एयांगा..एयांगा..राईट...भारत माता चौक रे दिकु-तुड़कु कोरे गोपोए होबाओ ताना। पैजामा तुसिंगआ कानिः काजि जादा चि निर पे का रेदोईंग सोबोः गोए पेया..बेदा कानिः काजि जादा कि ताराउड़ी तेईंग माः गोए पेया..। आबा गा..आबा..दोला सेन कोः में। का रेदो शहर से गोपाए सिरजावगा, आबा.आबा..गा.।

मोहन बाबू - राईट! देईंग लेल लेकोवा (किड़कीः निः जादा) ओह! नेया को चिकन एपेरंग-ओपोड़ेः सिरजावोः ताना? देईंग सेन कोः गेया।

सुधा - हों... हों...हों...। खूब सेंणाम बाईन ताना का? आमाः जीः रेबेद हापेया काना एनागे इसुआः। सोबेन ते सोबेन गे अन्ना हजारे को बाईन रेदो दिसुम टेकाव जाना। युदि काजि काम पतिया रेदो सेनोः में मेन्दो ठोरेम, नेया ओल पढ़ाव राः जूग का तानाः। बम-गुली कोराः जूग ताना चाईंतर नोः ताईंग में काजियाम तानाईंग, हाँ। नामधारी!

नामधारी - हेगा एयांग।

सुधा - सायोब लोः ताईंग में।

नामधारी - हेगा एयांग। जेताः आलोम उडुगा। जी सेनोः रेदो सिदा आईंगः जी सेनोगा।

मोहन बाबू - (अरगांए जाःई लोः) भोगोमःनाते अर्जी में चि आमाः दुलाड़ा होन अन्ना हजारे गेः बाईवोः का, अन्न-कूट पेरेया कान बोरा दो का। आईंग दो अन्न-कूट बोरा। गुली टोगोः रेवो फुस! दोला नामधारी।

(बारान किंग उडुंगवोः ताना)

(दापाल कोटोंग)

जादा चि नि लक्खीयाः मूर्ति तानिः। अली काजि जादा चि नेया मोहम्मद पैगम्बराः ऊ सासंग तानाः। खबरदार सिंह काजि जादा चि नि गुरु नानक तानिः। निकु सोबेन होसोड़ो को। आईगयाः लुतुम रोबर्ट। आईंग मियाद किरतान। आईंग बुझाव ताना चि नि प्रभु यीशुआः मूर्ति गे तनाः।

नामधारी - हे...हे...हे... आबागा हे...हे...हे...। निकु सोबेन को बालू ताना। कोंका को तान को। यीशु आर पैगम्बर रेन दोगोला को। कापे लेल जाःईया, नि... दो...निदो... एयांगा... एयांगा... आ...र...र... अँह (बोःए कोटे कोटे जाद) आबा गा... आबा गा... उदुबेम तो नेया ओकोयाः स्टाच्यू तानाः?

मोहन बाबू - हापेन में चि नामधारी। आम दो सोबेन कोआ ते पुराः बालू तानमें। आम गेदो काजिलाः चि भारत माता चौक रे...।

नामधारी - ओहो अँ हँ (ती डाँड़ोः ते मोलोंग रे ठुकुबेन ताना) अरे कोएँ कोंका को नि दो... नि दो... आबुआ ओते एंगा...।

मोहन बाबू - ओड़ोः मोचाम-चालाव ताना?

अली - ओकोए? दोरगाः आपु ते काजि ताना? (किटिलान गे)

नामधारी - (हे नागेनेः सेंगेरेन ताना)

मोहन बाबू - (हापेन मेन्ते ती डाँड़ोः तेः चुण्डुलाई ताना)

अली - का-का। नेया दो ओते एंगाः मूर्ति दो का तानाः। नेया दो मोहम्मद पैगम्बर साहेबाः ऊ तानाः। कापे आटकार जादा नेया सिंगि तुरो सिंगि आइउब ते जिलिंगआ काना।

रोबर्ट - अरे का। अली कागे। नि दो प्रभु यीशु गे तानिः। जाः केते काम आटकार जाःईया, होटोः आते काटा तुरुब चोंगाए तुसिंग आ काना?

सूरदास - आपे सोबेन होसोड़ो को। चापु ली पेतो देवी लक्खी कोमोल बा रेः तिंगुआ कान चि का?

खबरदार सिंह गिल- दोरगा बाबू, इनकुआ काजि का आईउम केयाते आईंगआः काजि आईंग में। नि गुरुनानक गे तानिः। मायाँग रे ताराउड़ी हाका काना काम लेल जादा? गुरु ग्रन्थ पोथा रे ओला काना चि

जाकेद आले चानाः ले नामा कादा, बचाओन बकिड़ि? कानून-पोड़ता? जेताव का गे। दिसुम रेन बाहरी दुसुमान को आसुल माता कोपे आर आले दिसुम रेन सिपाई रेंगेः तेले बालाय गोजोः का। का। निर पे नेताः ते। का रेदो नेया ताराउड़ी तेगेईंग माः गोए पेया।

संजिला – सॉट ऑप योर माउथ। यू आर टोटली फूल। हापेन पे। आपे सोबेन को मुरुख को तान पे। नि प्रभु यीशुआः मूर्ति तानिः। स्टाच्यू ऑफ जेसस क्राईस्ट। कापे लेल जाः ईया नि होटोः आते काटा जाकेद चोंगाए तुसिंगआ काना? वी आवो वी आवे। फारकान पे फारकान पे, नेताः ते। आबा, होनको, ओड़ोः आमाः उम्बुल...(होड़ोमोरे क्रूस के राचाः जादा)

(नामधारी लोः मोहन बाबू बोलो ताना)

मोहन बाबू – (जोर ते गारजाव जाद लोः) मूर्ति खोड़ाम तान को। सोबेन को जेल रेईंग आदेर पेया। सुच्चा सिंह दोरगाः लुतुम कापे आईमा कादा? आपे कापे इतुआना नि ओकोयाः मूर्ति तानिः?

सोबेन मिसाते – ऐं दोरगा! (सोबेन बोरो तेको हापेन ताना)

सिदा निः – माय डियार गॉड फादर दोरगा बाबू (काकलाए आईउम केद लोः काटा साब नागेन इनिः जापाः रेः उंगुदेन ताना) आलेयाः दो आम गे एंगा-आपु तान में। दोरगा बाबू आले बानचाव तालेमे, दया तालेमे। आले ते जाः जॉन गलती-सालती होबा जाना चि चिलका?

सोबेन कोते – हे हे बानचाव तालेमे, दया तालेंग दोरगा बाबू। आले आमाः काटा ले साब जादा (ने गुड़ि मुड़िरे सोबेन आकोआः काटा कोगे को साब बिउर जादा) आले के क्षेमा तालेमे दोरगा बाबू...।

मोहन बाबू – क्षेमा केः पेयाईंग। बिरिद पे।

सोबेन को मिसाते – अच्छा, नाः दो जेल रे काम आदेर लेया दो? (सोबेन को बिरिद ताना)

मोहन बाबू – का गे। उदुबेपे आपैं चियाः राः पे एपेरंग तान ताई केना?

मियाद निः – सरकार ने मूर्ति ले केते ले एपेरंग तान ताई केना। सूरदास काजि

को सारते गे। आईंगआः मासाकाल मेनाः मेन्दो मेद बानोः।

नामधारी - आबा गा... आबा गा... नेका चिलका? ने जाला, रेंगेः पोटाः होड़ो को आर, दीरी-मूर्ति सानामांग रेम राः गेरांग ताना।

मोहन बाबू - ओहो नामधारी, आम हेन दीरी रे दुब हापेन में। आईंग आईंगआः एयांग लोः जागार रिकाईंग में।

नामधारी - (मोचा को बाई बाड़ा जाद लोः दीरी रेः दुब हापेन ताना) (सोबेन जाला को फारकान ताना)

(दापाल कोटोंग)

लेपेल साड़ा - 4

ठाँव - सिदा ताः गे।

सोमाए - 10 बजे सेताः।

नामधारी दीरी रेः दुब हापेया काना। हारि बा को झूँड़ भीतार रे एसेकार गे तिंगुआ कान ओते एंगा हापे-हापे गे मोहन बाबू केः कुली-काजि जाःईया। मोहन बाबू इसु दुकु तान लोःए जागार रुड़ाई ताना।

मोहन बाबू - एयांगा, आईंग आमाः सानामांग रे गिउः तेईंग चाबा जाना। आम ओकोए तानिः, काईंग लेल उरुम जाः में। जी भीतार रे प्रेम मेनाः। मगर होड़ोमो दो हिसिंगा ते पेरेया काना। ती रे कारकाद जाटा मेनाः। मगर आमाः रूप काई बाई दाड़िया ताना।

आते रे बा - सोवान, मोगो मोगो बास्वान होएवो, काजि में मार, प्रेम राः लिबि लिबि होएवो चिम तांग लिंगिवा? आते भेंग-भेंग हुरुम सुकु, काजि में मार, मिद आपारोब ते सोंगोति-पिरित राःदुरंग चिम तांग एम दुरंग ए?हे, मिद आपारोब ते...

टुन्डु

❖❖❖

मायांग रे हाका कान ताराउड़ी असल सिख जाती कोआः चिना तानाः। आम आईंग के होसोड़ो दो काम होसोड़ो जाःईगआ? दोरगा आपु ते, आमाः होन के सेंणा बुद्धि ओमाई में।

नामधारी - (मोचा कोए बाई बाड़ा जादा आईंग के आपु तेयाः आपु ते मेताईंग में)

मोहन बाबू - हापे नाम चि का नामधारी?

नामधारी - अच्छा गा आबा ओड़ोः मार काईंग जागारेया (बारान ती ते लुतुर किंएः जाःन ताना)

मोहन बाबू - कागे होन को। काईंग होसोड़ो जाद पेया। आपे लेलेल मेद रे चियाः पे एपेरंग ताना?

सोबेन को मिसाते- आले सोबेन जाला को तान ले, गोमके।

मोहन बाबू - हेनेःदो तापे सुगाड़ा-सुगाड़ा मेद को मेनाः।

सोबेन को मिसाते- गोमके राजा, आले मेद रेन जाला कोदो का तान ले, मासाकाल रेन जाला तान ले। मेद मेनाः, मेन्दो मासाकाल बानोः।

मोहन बाबू - हाय भोगोमान! (जिलिंग गे सायाद केदां) धंगड़ा होन को, नेया मूर्ति लक्खी देवीयाः का तानाः। नागे मोहम्मद पैगर साहबाः ऊ सासंग। नेया नागे गुरू नानका नागे प्रभु यीशुआः नेया ओते एंगाः मूर्ति तानाः। आबु सोबेन कोआः ओते एंगा। आईंग मेद-मासाकाल वाला होड़ो तानिः। सोबेनाःईग लेल उरुम जादा। आपे आईंगः आते लाः चिलका? ती रे गीताए साबा कादा, कुरान कागे। नेया ताराउड़ी कागे, काण्डा तानाः...।

फकीर अली - (एन लोःगे), दोरगा बाबू, गीता बारीः साबा कादा! कुरान कागे?

रोबर्ट - ... आर बाईबिल चिकाते काए साब तादा?

खबरदार सिंह गिल- ओड़ोः गुरुग्रन्थ? आम मेद-मासाकाल वालाम मेनेन ताना चा? इदो बाई मेद मेनाः चि बानोः? आलेयाः मेद मेनाः मासाकाल बानोः। आलेयाः मेद रे मासाकाल मेनाः रेदो होनांग ले उदुमा में आबुआः ओते एंगाः मूर्ति-मुटन चिलका बाई होना चाई।

मोहन बाबू - ओहरे, (सारते गे! जी हाईडू केया ते) सारते गे हाले दिसुम होड़ो

सुधा – चाय हाजिर है।

मोहन बाबू – अरे वाह! बीवी हो तो ऐसी (आह भरते हैं)

सुधा – कैसी? (मुस्कुराते हुए चाय देती है)

मोहन बाबू – तुम जैसी। इतना जो मेरा ख्याल रखती हो (गाल पर चुम्मा देते हैं।)

सुधा – हैदराबाद से देवाशीश का फोन आया था।

मोहन बाबू – बेटा कैसा है? ठीक-ठाक है न?

सुधा – अच्छा है। कहता है नौकरी लगने की पूरी-पूरी संभावना है।

मोहन बाबू – तब तो चलो दिउड़ी देवी मंदिर में मिन्नत कर आयें। नामधारी कहाँ गया?

सुधा – भारत माता चौक भेजी हूँ। शाम के चाय के लिए दूध नहीं है। आता ही होगा।

(पटाक्षेप)

द्वितीय दृश्य

स्थान – पूर्ववत्।

समय – सवा आठ बजे सवेरे।

मोहन बाबू पलंग पर बैठे-बैठे चाय पी रहे हैं। सामने कुर्सी पर सुधा बैठी है। थोड़ी देर में दरवाजे पर दस्तक होती है।

नामधारी – बाबूजी...बाबूजी...। दरवाजा खोलिये...ठक्...ठक्...ठक्..। मैं नामधारी।

सुधा – कौन नामधारी!

नामधारी – हाँ, माँ जी दरवाजा खोलिये...बाहर में... जल्दी खोलिये। (सुधा दरवाजा खोलती है) और नामधारी का प्रवेश।

नामधारी – बाबूजी... बाबूजी...।

मोहन बाबू – आओ नामधारी, क्या बात है, बहुत घबड़ाए हुए हो?

नामधारी – बाबूजी...बाबूजी...भारत माता चौक में हँए... हँए... हँए...।

सुधा – अरे ठीक से बोलो। क्या हुआ भारत माता चौक में?

हिन्दी अनुवाद

5. अमर ज्योति

('महुआ का फूल' कहानी संग्रह से)

पात्र-परिचय

पुरुष पात्र

1. सुच्चा सिंह - मोहन बाबू (कल्पित दारोगा)
2. सूरदास - अंधे दोस्त
3. फकीर अली - अंधे दोस्त
4. खबरदार सिंह गिल - अंधे दोस्त
5. रोबर्ट - अंधे दोस्त
6. नामधारी - मोहन बाबू का नौकर

स्त्री पात्र

1. नारी की मूर्ति - भारत माता
2. सुधा - मोहन बाबू की पत्नी।

अंक-1

प्रथम दृश्य

स्थान - मोहन बाबू का बंगला।

समय - सुबह के आठ बजे।

जाड़े का मौसम। कड़ाके की ठंड पड़ रही है। खिड़की- दरवाजे सब बंद हैं। पलंग पर मोहन बाबू अभी तक सोए हुए हैं। बगल में स्थित रसोईघर में सुधा चाय बना रही है। चाय लेकर वह शयन कक्ष में आती है।

(सुधा का प्रवेश)

सुधा - एजी उठो! आठ बज गये हैं। आज सभा-गोष्ठी में नहीं जाना है क्या?

मोहन बाबू - अरे यार सोने भी दोगी या नहीं? आज रविवार है। जिन्दगी भर तो सभा-गोष्ठी करता रहा। रिटायरमेंट के बाद भी आराम से जीने नहीं दोगी क्या? हुँ, उठने बोलती हो तो लो उठ गया। (लुंगी सम्हालते हैं) चाच-वाय बनाई हो या नहीं?

अबतक हमारे देश में अमन-चैन कौन ला सका है तो यही हिन्दू न! जय बजरंग बली की, जय सियाराम जी की!

दूसरा – नरदूद! (मूर्ति को छूता है) यह मोहम्मद पैगम्बर साहब का मजार है। देखता नहीं यह पूरब-पश्चिम से अड़ा है। मैं तुम लोगों को इसे छूने नहीं दूँगा। जाओ, यहाँ से दफा हो जाओ। तुम कहते हो यह हिन्दुओं का मुल्क है! अबे जा हिन्दू के बच्चे! मुँह में राम-राम बगल में छूरा रखा करते हो। तेरी लक्ष्मी का कमल फूल तो मुसलमान के खून से लाल है। कितनी वार तू अपने को मुसलमानों के खून से नहलाया, पता है? मजार को अपवित्र करने से बाज आ, वरना तेरी खाल खींच लूँगा।

तीसरा – बकवास बन्द करो। यह मेरे गुरु नानकदेव हैं। गुरु नानक साहब। छूकर देखो तो कमर पर तलवार खोंसा है या नहीं। तलवार सिक्ख परम्परा की निशानी है। हम वीर बहादुर सिक्ख भाई हैं। देश की खातिर मर मिटने वाले शूरवीर। स्साले तुम आपस में हिन्दू मुसलमान, सिक्ख-ईसाई का मीठा नारा लगाते हो और हम तेरे जान-माल की रक्षा के लिए सिर कटाते जाएँ। न, यह न होगा। अबतक हमें क्या मिला है? सामाजिक सुरक्षा? न्याय? कुछ भी नहीं। देश के विदेशी गद्दारों को जेलों में पाल-पोसकर मोटा करो और हम देश के सिपाहियों को मुँह की खानी पड़े। भागो यहाँ से वरना इसी तलवार से तुम्हारी गर्दन अलग कर दूँगा।

चौथा – सॉट ऑप योर माउथ। यू आर टोटली फूल। चुप रहो। तुम सब बिल्कुल मूर्ख हो। यह प्रभु यीशु की ही मूर्ति है। स्टाचू ऑफ जेसस क्राईस्ट। देखते नहीं यह गले से पाँव तक सुटान पहना है। वी आवे, वी आवे। दूर हो जाओ, दूर हो जाओ यहाँ से। पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा.(...शरीर पर क्रूस अंकित करता है)

(नामधारी के साथ मोहन बाबू का प्रवेश)

मोहन बाबू – (गरजते हुए) मूर्तिभंजक! ठहरो, तुम्हें हवालात में बंद करता हूँ। सुच्चा सिंह दारोगा का नाम सुना है? तुम्हें मालूम नहीं यह किसकी मूर्ति है?

नामधारी – माँ जी, माँ जी...दंगा... भारत माता चौक में दंगा हो रहा है। पाजामा वाला कहता है कि भागो नहीं तो छुरा मार देंगे... पगड़ीवाला कहता है तलवार से काट देंगे...। बाबूजी... बाबूजी, आप देख आइये, नहीं तो शहर में दंगा फैल जायेगा, बाबूजी।

मोहन बाबू – दंगा! देखूँ (खिड़की खोलते हैं) ओह! यह क्या फसाद हो रहा है। जाकर देख ही आता हूँ।

सुधा – अरे..., बड़े समाज सुधारक बन आये। अपनी जान बची यही काफी है। सब के सब अन्ना हजारे बन जायेंगे तो देश का उद्धार हो गया। अगर बात न मानियेगा तो जाइये। पर हाँ, यह कलम-किस्मत का जमाना नहीं, बम-गोली का जमाना है। सम्भल के रहियेगा कहे देती हूँ, हाँ। नामधारी!

नामधारी – जी, माँ जी।

सुधा – साहब के साथ रहना।

नामधारी – जी, माई जी। आप चिंता न करें। जान जायेगी तो पहले मेरी जायेगी।

मोहन बाबू – (कटाक्ष करते हुए) ईश्वर से मिन्नत करो कि तुम्हारा लाड़ला अन्ना ही बने, अन्न की बोरी नहीं। मैं तो अन्न की बोरी हूँ। गोली लगे भी तो फुस्स! चलो नामधारी।

(पटाक्षेप)

तीसरा दृश्य

स्थान – भारत माता चौक।

समय – 9 बजे सवेरे।

भारत माता की मूर्ति के चारों ओर चार लोग जोरों से झगड़ रहे हैं।

पहला – (चबूतरे पर चढ़कर चिल्ला रहा है) उल्लू के पट्ठे यह देवी लक्ष्मी की मूर्ति है, धन बरसानेवाली लक्ष्मी। यहाँ घर-घर इसकी पूजा होती है। मेरी भी इसमें गहरी आस्था है। यह कमलपाद (पाँव को छूता है) सुख-शान्ति और बरकत की निशानी है।

अली - नहीं, नहीं। यह भारत माता की मूर्ति नहीं है। यह मोहम्मद पैगम्बर साहब का ही मजार है। देखते नहीं यह पूरब से पश्चिम की ओर अड़ा है।

रोबर्ट - अरे नहीं, अली नहीं। यह प्रभु यीशु ही है। छू के देख़ता नहीं गले से पाँव तक सुटान पहना हुआ है।

सूरदास - तुम सब के सब झूठे हो। छूकर देखो। यह लक्ष्मी कमल माद पर खड़ी है या नहीं?

खबरदार सिंह - दारोगा साहब, उनकी बात न सुनकर इधर सुनो। यह गुरुनानक ही हैं। कमर पर से धार्मिक तलवार जो लटकती है। गुरुग्रंथ में लिखा है कि कमर पर लटकती तलवार असली सिक्ख की पहचान है। तुम मुझे झांसा तो नहीं दे रहे?दारोगा का बाप अपने औलाद को अक्ल दो, हाँ।

नामधारी - (व्यंग्य से मुँह बनाता है) हम को बाप का बाप कहो।.

मोहन बाबू - चुप भी रहोगे या नहीं, नामधारी?

नामधारी - अच्छा बाबू, अब हम नहीं बोलेंगे (दोनों कान छूता है)

मोहन बाबू - नहीं प्यारे नहीं। हम तुम्हें झांसा नहीं दे रहे हैं। तुम देख के भी गलत बखेड़ा क्यों बनाने लगे हो?

समवेत स्वर - हम सब अंधे हैं मालिक।

मोहन बाबू - पर ये सुन्दर सुन्दर आँखें?

समवेत स्वर - मालिक हम आँख के अंधे नहीं, ज्योति के बदनसीबी हैं। आँखें हैं पर ज्योति नहीं।

मोहन बाबू - हे भगवान! (एक लम्बी साँस खींचते हैं) बर्खुरदारो, यह मूर्ति लक्ष्मी की नहीं। न पैगम्बर साहब का मजार है। यह न गुरुनानक है न प्रभु यीशु। यह तो भारत माता की मूर्ति है। हम सबों की माँ। मैं ज्योतिवाला हूँ। सब कुछ देख रहा हूँ। तुम हमसे बढ़कर क्यों रहे? हाथ में गीता धरी है कुरान नहीं। यह तलवार नहीं खंजर...।

फकीर अली - (तुनक कर), एँ, दारोगा साहब, केवल गीता धरी है, कुरान नहीं?

समवेत स्वर – ऐ दारोगा! (सब के सब सहम जाते हैं)

पहला – माय डियर गॉड फादर दरोगा बाबू (आवाज की तरफ मुखातिब होकर दारोगा के पाँव छूने को झुकता है) मेरे माई-बाप दारोगा बाबू, हम पर रहम कर, कृपा कर। हमसे कोई गलती तो नहीं हो गई?

बाकी तीनों – हाँ हाँ, कृपा कर दारोगा साहब। हम तुम्हारे पाँव पड़ते हैं (गुत्थमगुथी में वे खुद के ही पाँव छूते हैं) हमें क्षमा कर दो दारोगा साहब...।

दारोगा – क्षमा कर दिया। उठो।

समवेत स्वर – अच्छा, अब हमें हवालात में नहीं भेजोगे न?

दारोगा – नहीं। बताओ तुम सब आपस में क्यों झगड़ रहे थे?

एक – सरकार, इस मूर्ति को लेकर झगड़ा हो रहा था। सूरदास कहता है कि यह लक्ष्मी की मूर्ति है। अली कहता है यह पैगम्पर साहब का मजार है। खबरदार सिंह इसे गुरुनानक की मूर्ति कहता है। ये सब झूठ बोल रहे हैं। मेरा नाम रोबर्ट है। मैं एक ईसाई हूँ। मैं मानता हूँ कि यह यीशु ख्रीस्त की ही मूर्ति है।

नामधारी – हें...हें...हें... बाबूजी हें...हें...हें...। यह सब तो पागल हैं पागल। यीशु और पैगम्बर के बच्चे। यह तो...यह तो..माँजी... माँजी... अरे...रे... (भूल का अहसास) बाबूजी बताओ तो, यह किसकी मूर्ति है?

मोहन बाबू – चुप भी रहो नामधारी। तुम तो पाँचवाँ पागल हो। तुमने ही तो बताया था, भारत माता चौक में...।

नामधारी – ओहो हो हाँ हाँ (ऊँगली से अपनी याददास्त पर ठीकरा फोड़ता है) अरे भीख मांगे पागल यह तो... यह तो भारत माता की...।

मोहन बाबू – फिर तेरी जुबान चलने लगी?

अली – कौन? आप दारोगा का बाप बोलता है?

नामधारी – ('हाँ' कहने को अकड़ता है)

मोहन बाबू – (चुप रहने को ऊँगली से संकेत देते हैं)

रोबर्ट - ... और बाईबिल क्यों नहीं धराया?

खबरदार सिंह - और गुरुग्रन्थ? तुम अपने को ज्योतिवाला कहते हो। क्या पता तुम्हें आँखें हैं या नहीं? हमारी आँखें हैं पर ज्योति नहीं। हमारी आँखों को ज्योति होती तो हम बता देते कि भारत माता की मूर्ति कैसी होनी चाहिए।

मोहन बाबू - ओह! सच! (अफसोस जाहिर करते हैं) हे भारतवासियों, बिल्कुल सच! मेरी ज्योति है पर आँखें नहीं। ओह!

नामधारी - बाबूजी... बाबूजी... ये क्या? इन भूखड़ अंधों के सामने आप रो-धो रहे हैं?

मोहन बाबू - तुम उस पत्थर पर जाकर बैठो। मुझे अपनी माँ से बातें करने दो।

नामधारी - (मुँह बनाते हुए पत्थर पर जा बैठता है) अच्छा बाबूजी जाता हूँ।

(चारों अंधों का जाना)

(पटाक्षेप)

चतुर्थ दृश्य

स्थान - पूर्ववत्।

समय - 10 बजे सवेरे।

नामधारी पत्थर पर जा बैठा है। अमलतास के झुरमुटों के बीच खड़ी भारत माता की मूर्ति मौन भाषा में मोहन बाबू से पूछ रही है। मोहन बाबू भारी मन से उनका उत्तर दे रहे हैं।

मोहन बाबू - माँ, मैं तेरे सामने शर्मिंदा हूँ। तू कौन है मैं पहचान नहीं पा रहा हूँ। मेरी ज्योति है पर आँखें नहीं। जी में प्रेम है पर मन घृणा से भरा है। हाथों में कूची है पर तस्वीर नहीं उतार पा रहा हूँ।

ऐ वसंत बयार बता! बता तू प्रेम की लहर लहराओगे कब? ऐ मतवाले भौंरे! तुम एक पर से प्रेम गीत गाओगे कब?... एक पर से...।

(पटाक्षेप)

समाप्त

PUBLISHER :-

Jharkhand Jharokha

Shop No. D.G. 03, New building, New Market
Ratu Road, Ranchi (Jharkhand),Pin-834001
Mob. - 09973112040, 09471160792
E-mail : jharkhandjharokha@yahoo.com

ISBN : 978-93-85595-08-0

978-93-85595-08-0

मूल्य : 300.00 रू.